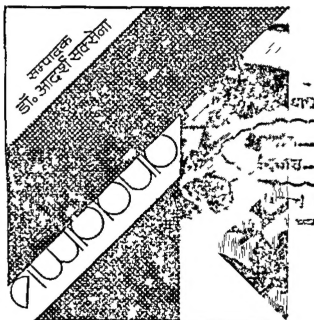
कविता प्रकाशन, बीकानेर

'चन्द्र

श्रेष्ठ यथार्थवादी कहानियाँ



यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', बीकानेर

प्रकाशक कविता प्रकाशन, तेलीवाड़ा बीकानेर ३३४००१

संस्करण १९८२

आवरण हरि प्रकाश त्यागी

मूल्य बीस रुपये

मुद्रक गणेश कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा रूपाभ प्रिंटर्स, दिल्ली ३२

SHRESTHA YATHARTHVADI KAHANIYAN
Edited by Dr Adarash Sexena Rs 20 00

हमारे यहा से प्रकाशित
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
की कृतिया

- सन्यासी और सुन्दरी (उपन्यास)
- नयना नीर भरे "
- दो श्रेष्ठ उपन्यास "
- तलाक दर तलाक "
- श्रेष्ठ ऐतिहासिक कहानिया (कहानिया)
- क्षण भर की दुल्हन "
- शिक्षाप्रद गाथाए "

गहरे पानी पैठ

कोई कहानीकार बहुत लम्बे समय तक लिखता रहे फिर भी पुराना न पड़े, यह उसकी सृजनात्मक ऊर्जा का ही परिणाम हो सकता है। ऐसा उसी कलाकार के साथ सम्भव है जो न आग्रहों से अनुशासित हो और न प्रभावों से नियन्त्रित वरन् खुली दृष्टि से वस्तुस्थिति को देखने-परखने का आदी हो। इसके लिए बहुआयामी और तीव्रता से परिवर्तित होते जीवन और जीवनमूल्यों को पहचानने, उनके कारणों का अन्वेषण करने तथा अनुभव एवं अनुभूति से उन्हें जोड़ते रहने की आवश्यकता होती है। जो कलाकार ऐसा नहीं कर पाता, वह पुराना पड़ जाता है और उसे ई० एम० फोरेस्टर के समान यह कहकर लेखन बन्द कर देना पड़ता है कि संसार वैसा नहीं रहा जैसा उसने उसे देखा और समझा था और इस कारण नये संसार से तालमेल बैठाने में वह अपने-आप को असमर्थ पाता था। जीवन के क्षणों से जुड़ी रहने वाली साहित्य विधा कहानी के सम्बन्ध में यह स्थिति बहुत जल्दी आ सकती है। हिन्दी कहानी के संबंध में इसका महत्त्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि उसकी विकास यात्रा अत्यन्त तीव्रगामी रही है। उसने वे सभी उतार चढ़ाव अल्प समय में ही देख लिये जो विश्व के कई कहानी साहित्य पर्याप्त लम्बे समय में देख पाये थे। इस दृष्टि से विगत लगभग तीन दशकों की हिन्दी कहानी की गति तीव्रतम रही। इस काल में उसने इतने लिबास पहने और उतारे कि उसकी अपनी पहचान ही खो गयी। नयी कहानी, अकहानी, सचेत कहानी, सहज कहानी, समान्तर कहानी आदि नामों ने कुछ ऐसा भ्रमजाल फैलाया कि निर्मल वर्मा को आज की कहानी की मृत्यु से

लेखन एक साथ इतना विविध है कि उस पर विस्मित हो रह जाना पडता है। यह उनकी उस केलाइडेस्कापी दृष्टि का ही परिणाम है जो यथार्थ के बहुरगी टुकडो को सवेदना के हल्के झटको से नित नवीन रूपाकतियो मे निर्मित करती रहती है। 'शुक बोला राजा सुन', 'चकवा चकवी की बात', 'एक सही स्वीकृति', आदि के परिप्रेक्ष्य मे 'तीसरा बिस्तर', 'उस्मानिया', 'एक युद्धध्वस्त शहर' और 'विनाश मे जन्म जसी कहानिया भि न प्रकार की लग सकती ह पर तु यह भि नता रूपाकृतिया की ही ह। यथाथ के काच के बहुरगी बेडौल टुकडा को सवेदनात्मक आवेग ने हर बार नय डिजाइस मे सजा दिया है। कोई वाद या कोई आदोलन उनकी प्रकति पर हावी नही हो पाया, यह 'चद्रजी' की खुली दृष्टि का ही परिणाम था। साथ ही विविध सहयोगी विरोधी धाराआ म बटे कहानी प्रवाह की मूलधारा से वे जुडे रह यह निश्चय ही उपलब्धि है। इस उपलब्धि का एक ही कारण है—उनकी वह मानववादी दृष्टि जो एक ओर वस्तु को समय के सदभ से सयुक्त किये रही और दूसरी ओर उ ह हर मोड पर आदमी से जोडे रही। इसीलिए कहानिया चाहे साम ती जीवन से सबधित हा, चाह जन जीवन से, प्रबुद्ध वग से सबद्ध हो चाहे दलित वग से, मनोवज्ञानिक हा या व्यग्यात्मक, उनमे दश क जीवन की पहचान और उसकी प्रकृति अपने बनते बिगडत रूपो म दिखाई देती है। और यही कारण है कि विषय चाहे कितन ही हो उनकी मूल प्रकति मे समानता है जो विशिष्ट रचनाधर्मिता की पहचान है। सुविधा के लिए इस धम का उसके लोकप्रिय नाम यथाथवादी दृष्टि से अभिहित किया जा सकता है। 'किया जा सकता है इसलिए कहना पडता है क्योकि यथार्थवाद के नाम पर बहुत कुछ ऐसा भी चल रहा है जो इस प्रवृत्ति की कलात्मकता पर प्रश्नचिह्न लगा देता है। यथाथवाद वास्तव मे मानववादी चेतना से उत्प न होने वाली वत्ति है जो कालानुरूप उचित भगिमाए ग्रहण करती रहती है। च द्रजी का यथाथवाद इसी प्रकति का है। उनकी मानववादी चेतना के एक सिरे पर यदि राजस्थानी जन जीवन का यथाथ है तो दूसर छोर पर मानवता के हनन की विश्वव्यापी विभीषिका की पीडा। इन दोना छोरा के बीच वे अ य स्थितिया हैं जो विभि न स्तरो पर मनुष्य को प्रभावित करती रहती हैं। इस प्रकार समकालीन स्थितियो

के चित्रण की दृष्टि से चन्द्रजी की कहानियों का एक अलग वर्ग भी बन जाता है। प्रस्तुत संकलन में इसी वर्ग की कतिपय ऐसी कहानियाँ संगृहीत की गई हैं जो इस जीवन के प्रभावी चित्र प्रस्तुत करती हैं। मैं यह दावा तो नहीं करता कि ये ही इस वर्ग की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ हैं, परन्तु ये कहानियाँ इस वर्ग की कहानियों का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं, यह दावा मैं अवश्य करता हूँ। यह भी सत्य है कि कुछ और कहानियाँ भी इस दृष्टि से चुनी जा सकती थी क्योंकि जितना विविध और व्यापक 'चन्द्रजी' ने लिखा है उसे ग्यारह कहानियों की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता था फिर भी हर संकलनकर्ता की अपनी दृष्टि होती है और हर संकलन के विस्तार की एक सीमा। प्रस्तुत संकलन का इसी प्रकार एक आधार था और एक सीमा भी।

जैसा पूर्व की पंक्तियों में स्पष्ट किया गया है चन्द्रजी की यथार्थवादी कहानियों का क्षेत्र सीमित राजस्थानी परिवेश से विस्तृत मानवता की पीडा तक फैला हुआ है। इस प्रकार परिवर्तनशील मानसिकता और संघर्षों के विविध रूप इनमें स्वतः ही समा गए हैं। इसी आधार पर संकलन की ग्यारह कहानियाँ चार उपवर्गों के अंतर्गत रखी जा सकती हैं—राजस्थानी जीवन के यथार्थ की कहानियाँ, नयी मानसिकता की कहानियाँ, बदलते संबंधों की कहानियाँ तथा विश्वव्यापी मानवाधिकार हनन एवं मानवता के प्रति जघन्य अपराधों की पीडा की कहानियाँ। ये कहानियाँ मन, विचार और जीवन की टूटन के विविध स्तरों की पहचान भी करा देती हैं।

इस क्रम में प्रथम राजस्थानी परिवेश की तीन कहानियाँ हैं। हर दूसरे-तीसरे वर्ष अकाल की काली छाया इस प्रदेश को आक्रान्त कर लेती है और मनुष्य खानाबदोश जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है। पेट की ज्वाला शान्त करने के लिए स्थान-स्थान पर भटकने वाले इन लोगों की कोमल भावनाएं ही नहीं मर जातीं, एक अजनबी स्वार्थ भी उनकी मानसिकता पर हावी हो जाता है। प्राकृतिक प्रकोप की छाया में बदलते हुए मानवीय संबंधों को कानून और व्यवस्था की असफलता ने जिस सीमा तक झकझोर दिया है, उसका सफल अंकन प्रथम कहानी 'अकाल आकृतियाँ' में हुआ है। परन्तु इस व्यवस्था से लडना संभव नहीं है क्योंकि आतंक और प्रलोभन के

बल पर अन्याय को भी कानूनसम्मत बना दिया जाता है। इसलिए 'दद का दायरा' की नूरी और जमीला निमम बाकर के वहशीपन का शिकार होती रहती हैं और पटवारी किसन अपनी सम्पूर्ण सदभावना के उपरान्त उन्हें आश्वासन ही दे पाता है। ऐसा आश्वासन 'बारूद के ढेर पर' मास्टर ने भी उन लोगो को दिया है जो उससे पूछ रहे है 'क्या हमारी हडताल फेल हो गई? हमे सरकार ने कुचल दिया? हम हार गये?' पर सत्य इतना ही नही है, लेखक ने स्थिति के दोनो पक्षो को यथार्थ की तुलना पर तोला है। वह जानता है (और हडताली भी जानते है) कि जो लोग 'रैयतखाऊ गौरमेंट' को गालियां देते है वे स्वय भी दूध के धुले नही हैं। तभी तो बाजीगर कहता है 'हम लोग भी कोई चोखे नही है। रैयत से हम भी दफ्तरो मे घूस लेते हैं।' सत्य का यह परिप्रेक्ष्य भले ही स्थिति विशिष्ट से सम्बद्ध हो परन्तु उसका क्षेत्र राष्ट्रव्यापी है यह आज का प्रबुद्ध पाठक जानता है।

इस यथार्थ का क्षेत्र जहा व्यापक होने लगता है वही उस मानसिकता की बात उत्पन्न होती है जो नाना भौतिकवादी आग्रहो और प्रभावों का परिणाम होती है और जिसके कारण अजनबी बनते सबध टूटने की स्थिति मे पहुच जाते है। जिस क्षीण डोर से वे अटके रहते हैं उसे भले ही पारिवारि[illegible] सबधो का नाम दे दिया जाय परन्तु वास्तव मे पारिवारिकता का [illegible] ही उसे दुबल बनाता है। 'जनक की पीडा', 'पेंशनयाफ्ता' और 'घर में वह' तीनों ही सतान द्वारा प्रदत्त तिरस्कार और पीडन की असह्य [illegible] कहानिया है। 'जनक की पीडा' मे सबध इस सीमा तक [illegible] है कि मत्यु मे ही छुटकारे की कोई आशा दिखाई देती है [illegible] जनक कहता है, 'मरना एक छुटकारा है। यदि मैं मर [illegible] यातनाओ व दुखो से मुक्ति पा जाऊ बहुत सुखी हो जाऊ।' [illegible] यह [illegible] युक्त पीडा को कही अधिक दारुण बना [illegible]। [illegible] पेंशनयाफ्ता का 'वह' भी सोचता है, 'आदमी का [illegible] जाना चाहिए। दूसरो पर निभर रहकर अपनी [illegible] जा सकती, केवल लावारिसपन का [illegible] है [illegible] मे वह' का नायक करता है। [illegible] साहब से अपमानित होना [illegible]

मागें पूरी न कर पाने के कारण उनके कोप का भाजन बनना पड़ता है। असमर्थताबोध की दारुण पीडा इस कहानी मे मार्मिक रूप म अभिव्यक्त हुई है।

इस पीडा की प्रतिक्रिया विविध रूपो मे हो सकती है। एक रूप वह है जिसके 'दुखियारा' मे दशन होते है जहा हताशा कुण्ठा का बाना पहनकर आई है। कहानी का नायक भरू दूसरा के दु ख म सुख और सुख मे दु ख का अनुभव कर अपनी पीडा का रेचन करता है। ऐसा भी हो सकता है कि वस्तुस्थिति का आवेगहीन मूल्याकन परिस्थितिया को अपने पक्ष मे मोड लेने मे सहायता करे जसा 'वह रात, सारा और सिपाही' मे सारा के साथ सभव हुआ। अपनी वत्सलता मे वह इतनी ऊची उठ गई कि वासना के पक मे फसे सिपाही की सारी चालाकी विफल हो गई। विवशता के परिवेश मे भावनाओ के प्रभावशाली चित्रण के कारण यह कहानी अपनी तरह की एक विशिष्ट रचना बन गई है। स्थिति विकटतर तब हो जाती है जब वैयक्तिक पीडा महानगरीय बोध से जुड जाती है तब अजनबी बने मनुष्य को जो कुछ भोगना पडता है वह आज की कहानिया का एक प्रमुख विषय है। प्रस्तुत सकलन की कहानी 'महानगर मे' इस नवीन भावबोध को निराशा, टूटन और पलायन के सम्पूण अहसास के साथ अभिव्यक्त करती है।

व्यक्ति पीडा आज मन परिवार और नगर की सीमा का अतिक्रमण कर गई है। इस रूप मे उसका अ तर्राष्ट्रीयकरण हो गया है क्योकि अपनी *धरती से उखाडे जाने की पीडा, धर्म, रग अथवा जाति के आधार पर* अत्याचार का शिकार बनने की पीडा बर्बर सनिक शासन की पीडा और विश्वव्यापी भुखमरी तथा गरीबी मे त्रस्त मनुष्य की पीडा इसके साथ जुड गई है। इस पीडा को अरब, यहूदी, भारतीय, वियतनामी सभी ने अपनी तरह से भोगा है। मनुष्य को मनुष्य से काट देने के घिनौने कुचक्र के शिकार बाग्लादेश तथा वहा हुए भीषण नरसहार को, व्यापक मानवीय सवेदना के बल पर प्रस्तुत सकलन की कहानी 'एक युद्धध्वस्त शहर' मे मार्मिक अभिव्यक्ति मिली है। पीडा की यह अनुभूति किसी एक नगर की नही, पीडा के शिकार हर आदमी की है, 'यह खुदा, यह ईश्वर अब मर गया है। हम

इसाना को तो एक नया ईश्वर बनाना पडेगा   एसा ईश्वर जो रग, जाति और धर्म से नही, अपनी अच्छाइयो, करुणा और बधुत्व से जाना जाय।' और वह शहर जैसे कहता है, 'मैं, शहर अकेला नही हू   मे और मेरा पडोसी शहर, फिर उसका पडोसी शहर   समूचा युद्धत्रस्त भूखण्ड ही मेरे जैसा है   अमानुषिक अत्याचारो से पीडित व आहत।' इसी ने मनुष्य को निर्वासन और अजनबीपन देकर उसे गैरमुल्की जिन्दगी जीने को विवश किया है। इसान को इसान का दुश्मन बना देने वाले इन सियासतवालो ने आदमी को टुकडो म बाट दिया है। भारत विभाजन की राजनीति और बाग्लादेश के निर्माण की पष्ठभूमि म मनुष्य की इस बेचारगी को 'मेरा अपना घर' मे जिस रूप मे प्रस्तुत किया गया है उसम विश्वव्यापी शरणार्थी समस्या को एक व्यापक अर्थ प्राप्त हो जाता है।

ये है वे कहानिया जो इस सकलन के लिए चुनी गयी हैं और समकालीन जीवन के यथार्थ को विस्तत फलक पर प्रस्तुत करती है। इनम वाद का आग्रह नही है। यह स्वाभाविक भी है क्योकि वाद के रूप म यथार्थ की उपयोगिता अब समाप्त हो चुकी है। वाद' ने निश्चय ही एक प्रवाह निर्मित किया था पर जीवन की वास्तविकताओ ने सभी किनारे तोडकर उसके सभी दिशाओ मे फल जाने की परिस्थितिया निर्मित कर दी। अब प्रवाह मे वेग भले न रहा हो, अपने विस्तार मे सम्पूर्ण जीवन को आप्लावित कर देने की अपार क्षमता उसे अवश्य प्राप्त हो गई है। आज का कहानीकार इस स्थिति को अनदेखा नही कर सकता। हा, अपनी रुचि के अनुसार चित्रण के क्षेत्र वह अवश्य चुन सकता है। चन्द्रजी एक सुविस्तीर्ण क्षेत्र पर दृष्टि डाल सकें, यह इस सग्रह की कहानियो से स्पष्ट हो जाता है। इस रूप मे उनकी कथाकारिता को सही सदर्भ मे समझने मे यह पुस्तक सहायता करेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। अपनी पसद की कहानिया चुनकर इस रूप म प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान करने के लिए मैं उनक प्रति आभार व्यक्त करता हू।

गणेश चतुर्थी १९८२
१६ सेठिया क्वार्टस,
बीकानेर।

डॉ० आदर्श सक्सेना



धोरों की छांह

पच्चासी साल का। एकदम काजल सा काला और अस्थिपजरवत। खूब लम्बा। तारा के उजास मे देख ले तो आदमी का कलेजा मारे डर के मुह को आ जाय। काले चेहरे पर सफेद खिचडी सी भद्दी दाढी, आखें धसी और डरावनी सी जसे बिल्ली की। मुह म दात नही। बोल तो सूराख लगे। अपनी सारी उम्र वह इतन बड परिवार के दायित्व का सभाले रहा। सुख-दु ख का बोझ को वहन करता रहा। हर सकट मे आगे रहा और आज भी सूखे स घबराकर शहर की ओर चला तो अपने बल बूते पर। उसे हौसला था कि वह अपन परिवार को भूखा नही मरने दगा चाह वह स्वय भूख से मर जाय?

उसन अपनी आखो पर हथेली की ओट करके दूर-दूर तक नजर दौडायी। धोरें। छोटे मोटे धोरें! लहरियादार धोरें! बीच-बीच मे भटके यात्री सा कोई-कोई खेजडे का पट। कही-कही नगी-नगी सी बोटी या वैसा ही विरूप कोई जाल का पेड। इस सब के बीच कमेडी की घुहू घुहू।

डोकरी न अपन फटे हुए पल्लू का सिर पर खीचा। उसके सिर पर चादी का बोर था जिसकी नक्काशी म मल जम गया था। बुढिया की आकृति पर गहरी झुर्रिया थी जसे गीली मिट्टी म गहरी-गहरी लकीरें बना दी गई हो। उसकी छातिया नगी थी इसलिए वह बार बार अपना पल्लू उन पर डाल रही थी। उसके दायें हाथ मे एक लाठी थी। पावो के साथ वह भी उठ रही थी। मघला की वह धम-पत्नी थी।

डोकरी ने मेघहीन नीले आकाश की ओर देखा। उसकी थकी-हारी आखो म अजीब सा पीडा भरा खालीपन भर आया। फिर वह आह छोडकर बाली अखले के बापू! यदि एक बरखा और हो जाती तो पौबारा पच्चीस हो जाते। छाटो भर भर मोठ बाजरी होती और थोडे से तिल भी हो जाते।

मघला भीतर से टूट गया था। वह आवेश भरे स्वर मे बोला, 'अरे बावली एक बरखा के आन की उडीक मे तो मेरे बाप दादा भी मर गये। यह साला प्रभु भी मरे हुए को ही मारता है।

दानू बालद मर गय। भूखे तिस्से मर गये? गिरजडे (गिद्ध) कस टूट पडे थे उन पर! सच अखले के बापू मुझे तब ऐसा लगा था जसे वे बालदा

को नही, मेरा मास नोच रहे है। बालद की जगह यदि मैं मर जाती तो कौन सा घाटा पड जाता ?' उसका गला अवरुद्ध हो गया। आखें भर आयी।

'अरे! मैं और तू कभी नही मरेंगे। फालतू चीजो की तो ऊपर भी जरूरत नही है। बूढे हाड किस काम आयेंगे ? कितने निरभागे है। सच तो यह है कि हम तो अपने सामने टाबरो को मरते हुए देखने के खातर जिन्दा हैं। पता नही, हम और कितने अकाल अपनी आखो से देखेंगे ?'

फिर उसने अपने सिर पर लिपटे चिथडे को खोला। उसमे दो बीडिया थी। उन बीडियो के पिछवाडे से फूक मारकर कहा, अखला! दियासलाई है क्या ?

अखला उस समय बीडी पी रहा था। आगे एक खेजडा आ रहा था। उन सबने तय किया कि उसकी चिथडा चिथडा छाव मे थोडी देर तक विश्राम करेंगे।

अखला मघले के नजदीक आया। अपनी बीडी बापू को दे दी। बापू बीडी से बीडी सुलगाने लगा। इस बीच अखले ने अपनी जूतिया खोलकर धूल साफ की। उन्हे आपस म कई बार टकराया।

आग की तरह तपती हुई रेत म वह जरा भी विचलित नहीं हुआ। तभी एक नग से बच्चे ने कहा, 'मा! म पाणी पीवूगा। जोर की तिस लगी है।'

एक मोटयार लुगाई की बगल म पानी की लोटडी लटक रही थी। उसम से थोडा-सा पानी कटोरी म निकालकर उसने बच्चे को पिला दिया।

' थोडा और दे ।' बच्चे ने फिर मागा।

' अब पाणी नही मिलेगा, तू अकेला नही है मेरे लाडकुवरजी कि सारा पानी तुझे ही पिला दू।' उस लुगाई ने उसे झिडकते हुए कहा। बच्चा रोने लगा। वह अपने हाथ-पाव उछाल-उछालकर विरोध प्रदर्शन करने लगा जिससे गोदवाली औरत के लिए उसे सभालना मुश्किल हो गया। तभी अखले ने बाज की तरह झपटकर उस बच्चे के दो थप्पड जमा दिये। बच्चा जोर से रोया। उसकी सास खिच गयी। गा मा पोहर

पिघली हुई ममता से भर आया। एक मौन विरोध का भाव भी उसकी आकृति पर रेंगा।

खेजडे के नीचे उस परिवार ने राहत की सास ली। पानी का एक घूट इस तरह पीया मानो वह अमृत हो। हा, सबके गले तो गीले हो गये।

एक किशोर लडकी ने अपनी दादी के पास जाकर डरते डरते कहा, 'मुझे भूख लगी है दादी, पेट मे भूख से पीडा होने लगी है।

डोकरी ने एक तीखी निगाह से अपनी पोती को देखा। उसका कुम्हलाया मुख, सूखे होठ काले दायरो मे घिरी भूखी आखें याचना भरा दबा-दबा स्वर, वह करुणा से भर गयी।

आडीवाली बहू की ओर नजर उठाकर पूछा, 'बीनणी! रोटी का टुकडा है क्या ?

बहू ने अपने दोनो हाथो मे हाथी दात की चूडिया पहन रखी थी, हथेली के पास छोटी बाजू के अ त तक काफी बडी । व खनकी। उसने डिच डिच डिचकारी के साथ गर्दन हिलाकर स्वीकृति दी और लपककर सास के पास आयी।

वह सीधी सास से बात नही कर सकती थी। इसलिए लडकी के माध्यम से कहा, छोरी! दादी से कह कि आधो टुकडो ही रोटी रो है उसमे भी खेजडे की छाल मिली हुई है ?

दे दे। मरना तो है ही जहा तक बचने की उम्मीद है, जतन तो करेंगे। खूटी मैं कोई बूटी नही।'

खेजडे से पखो की भयावह आवाज करता हुआ गिद्ध उडा। वे सब लोग काप गये।

गिरज कितना बडा है!' एक बच्ची ने सहमते हुए कहा।

'अकाल मे इनकी खूब गोठें (दावतें) उडती है। मिनख से लेकर ढाढो तक का तरह-तरह का मास मिलता है इनको।' मघले ने बच्ची को चिपटाकर कहा।

'उस बडे धोरे के पिछवाडे ही सरकारी काम चल रहा है। अब तो पावडा (रास्ता) थोडा ही है। इस बार चलेंगे तो पहुच जायेंगे। यह आखिरी विसराम है।

तभी उन्ह दूजी पगडडी से कुछ लोग आते हुए दिखायी दिये। तीन औरतें और दो मर्द। एक गधे पर सामान लादे हुए।

औरतो न लाल घाघरे और पीले ओढने ओढे हुए थे। मर्दों ने घुटनो तक की धोतिया, कमीज और सिर पर साफे बाध रखे थे। मर्दों के बाल कन्धा तक के थ और उनम से एक काले-कलूटे आदमी ने अपने दोनो हाथो पर फूल-पत्तिया गोदा रखी थी। औरतो के ललाट, ठोडी और दायें गाल पर एक एक बिंदी गोदी हुई थी। हाथो पर नाम गोदे हुए थे। दूसरे ठिगने आदमी क हाथ पर हनुमानजी का भोंडा चित्र था।

इन्हान मजबूत जूतिया पहन रखी थी जिन पर रेत जमी हुई थी। इनक चेहर भी मुर्दे-मुर्दे थे।

मर्दों की आखें खूखार थी और वे काफी मुसटडे और तगडे थे।

वे भी उस खेजडे के नीचे आकर सुस्ताने लगे। मघला उन्हें देखते ही पहचान गया। उसने मन ही-मन कहा, ये तो कापडिये सासी है। जरायम पेशा आदमखोर।' मघला एक अव्यक्त दशहत से घिर गया। उसे लगा कि उसका मुसीबतजदा परिवार सहसा और सकट से घिर गया है। फिर भी उसने अपने को सम्भाला। बडे बुजुर्गों ने कहा है 'आफत म हिम्मत नही छोडनी चाहिए।' सो उसने निडर बनकर पूछा, कूण हो भाई? कठै सू आया है?'

ठिगना आदमी, जो बार-बार अपने सूखे पपडी जमे होठो पर साप की तरह जीभ फिरा रहा था, जिसके पसीने के चगदे कपडा पर उभरकर आये थे, लम्बा सास लेकर बोला, 'हम गाव से आये है। कापडिया सासी है। खेत बिना बरखा के जल गये है। जानवरा को तो भाई के साथ नाली (पानी) की तरफ भेज दिया और हम इधर ।'

एक औरत घृणा से बोली 'वो साला हफसर गाव आया था। दाणे (अनाज) भेजने को कहा था पर वापस फिरा ही नही। राम मारा! अपनो लुगाई के घाघर में घुस गया होगा। अबकी मिल गया तो चक बोड-बोड कर अक्ल ठिकाने ला दूगी।'

यह औरत जवान थी। सावली पर सेक्सी व मांसल थी। उसके तीन दात सोने के थे। कांचली मे उसके आधे स्तन लटक रहे थे।

Purchased with the assistance of
The Govt of India under the
Scheme of Financial Assistance

ठिगना आदमी अपनी बढी हुई दाढी पर हाथ फेरकर बोला, 'एसा अकाल तो छप्पन साल मे ही पडा था। छप्पन म लाग भूख के मारे बच्चा मास भी खा गय थे। इधर ता राही (जगल) मे हिरण भी दिखलायी नही देत। बचारे तिस के मारे इधर-उधर भटक गये हाग!'

अखला बोला, 'तू ठीक कहता है भाई, ऐसे भमकर अकाल मैंने कई बार देखे हैं। जानवर चारे के अभाव मे रतौंधी के शिकार हो-होकर मर रहे हैं। गाव के मुसलमान तो भूख के मारे चोरी छुप मरी हुई गाया का मास खा गये और हिन्दू लोग देखकर भी अनदेखा कर गये।'

उसका बेटा पेमला बीडी का कस खीचकर बाला, हिन्दू भी तो उनके सुअरा को गटक गये।' उसने दु ख से आह भरी और धूल कणा मे लिपटे हुए पसीने को हथेली से पोंछकर कहा, 'मुझे तो यह डर लगने लगा है कि कही मिनख मिनख को न खा जाय।'

काला सासी, जिसके दो दात टूटे हुए थे पेमल से बीडी लेकर पीने लगा। पेमला उसे इकार नही कर सका। उन कापडियो सासिया का आतक हर गाव-खेत म फैला हुआ था। आज से नही बरसा से। राजाआ के जमाने से।

बीडी पीकर दूसरा काला सासी बोला, 'भूख डाकण होती है। किसी को साचेली डाकण देखनी हो तो इस अकाल म देखे। अकाल के दिख मे देखे। हर लुगाई डाकण और हर मरद डाकी हो जाता है। हमारे गाव म तो एक बढई ने अपनी लुगाई को रोटी के लिए जान से मार डाला। आधी रोटी थी और सात दिना की भूख। मिया बीबी का रिश्ता खत्म। दोना अजाण हो गये। जब लाश बासने लगी तब लोगा को इस काड का पता चला। मजेदार बात तो यह थी कि रोटी का एक छोटा-सा टुकडा तो उस लुगाई की मुट्ठी मे तब भी बन्द था।

मघना आकाश की ओर देखकर बोला, ऐसे जीने मे कोई भदरक नही।'

सोने के दाता वाली लुगाई घृणा से आखें तरेरकर बोली, 'अरे चौधरियो! जद मेंनत-मजूरी से भी रोटी नही मिलेगी तब लूट-खसोट करके ही खायेंगे। भूख से तो नही मरा जाएगा। फेर इस नित के अकाल का

सहते-सहते ता हार गये। हर दूजे-तीजे साल अकाल ! अकाल क्या सबका काल हो रहा है।'

मघला ने काई जवाब नही दिया। वह जानता था कि इनसे अधिक बातचीत करना अच्छा नही। इनका क्या भरोसा ? बोलते बोलते झगड पडें ? माणसखाणिया है ये कापडिया सासी, राजाओ के राज म इन्हे तलवार का डर ता था, पर अब तो ये किसी को कुछ समझते ही नही। ये तो यहा स चल जाय तो चाखा।

थाडी देर के लिए गहरा सन्नाटा छा गया, तेज धूप म ठहरा-ठहरा सन्नाटा।

काई डोडकोवा बोल गया अपनी भारी काव काव। सन्नाटा मानो थरथरा उठा। एक धोर के बिल म स 'काटा चूहा' निकला और तजी से भागकर गायब हो गया।

मघला न इस बीच यह पता लगा लिया था कि पानी की लोटडी बहू ने छुपा ली है या नही। उसने देखा कि बहू ने उसे अपन घेरदार घाघर मे छुपा लिया था। इन सासिया का क्या भरोसा, य पानी छीन ही लें !

ठिगना सासी बोला, 'सुना है यहा स आगे राहत का काम खुला है। अनाज भी बाटा जा रहा है। मजूरी भी मिल रही है।'

मघला न झट से कहा, 'हा हा भाई, अच्छा राम राम ।

दूसरी मामण लुगाई जो जवान थी, बोली, 'रोटी का टुकडा है क्या ?

अखला बीच म ही त्वरा म आह छोडकर बोला छाल खा-खाकर मन को राजी कर रहे हैं। एक दा बार तो फाग की पत्तिया भी चबायी है। मरत हुए क्या करें ?

जब बात का सिलसिला बिलकुल बन्द हो गया तो कापडिया सासी मजबूर हाकर चले गय। मघले न उन्हे पीछे से हाथ जाडे, 'लारा छूटा ! त मिनख जूण म राखस है। दख अखला, अपन लाग ता नहर कानी ही चलेंग। जाट क जाये हैं। दा राटी कमा लेंगे। उधर नहर पर द सोंसी बावरी ओड, भाट, राजपूत जाट मगने नाग जमा हुए हैं। इनके स...
अपना निवाह नही हागा—फिर इन जरायमपेशा लागो के स... र...
हुए मुझे भय लगता है। तुझे मालूम नही एक बार अकाल के दि...

औरत एक खेत मे घुस गयी थी और खेत के रखवाले को पटककर चकों वोडकर अधमरा कर दिया था। फिर उसकी झोपडी लूट ली थी। भूख मे ये वडे खतरनाक हो जाते हैं।

'जसी थारी मरजी ।' अखले ने जवाव दिया।

वे लोग चल पडे। नहर की खुदाई पर हजारा अकाल पीडित इकटठे थे। जलती धूप और अभावो मे ये लोग रग विरग चिथडे पहन हुए अधिकारिया के चारा ओर मक्खियो की तरह भिनभिना रहे थे।

अखले ने मघले से कहा 'वापू ! अठ वहुत काम है हजारो लोग हैं। यदि ये भूखे मरेंग तो हम भी भूखे मरेंग।'

'देख काई काम धधे को जुगाड हुए तो।'

साझ पड गयी थी।

अखला लौट आया। उसका मुह उतरा हुआ था। उसन वताया, *काम दो चार दिन तक नही मिल सकता। काम थाडा ओर लोग ज्यास्ती हैं।'*

मघले न साचा कि गत भर यही पर ठहरकर झाझरके चल पडेंगे। रात विरात म राहो म जाना ठीक नही है। कही साप बिच्छू काट ले तो ?

तब उन्हाने भी लावारिसा की तरह वहा डेरा डाल दिया। पास मे कुछ भी नही था। अखले का भाई मावनिया वोला, 'मैं पता लगाता हू कि आटा यहा मिलता है या नही ?'

वह चला गया। थाडी देर मे लौटकर उसने वताया, 'आज तीन दिना से राशन नही मिल रहा है। कई परिवार निराहार कर रहे हैं। जिन लोगा के पास आटा है वे तिगुने चौगुने दाम म वेच रहे हैं। उसम भी मेल सेल है।

'फिर ? डोकरी ने प्रश्न किया। उसकी झुरिया अचानक गहरी हो गयी। वोली फिर चूल्हा नही जलेगा ?

तभी एक शार उठा। हडकप मी मची। लोगो न देखा कि कुछ भूखो ने एक परिवार की सारी रोटिया छीन ली थी।

मघला न टूटत हुए स्वर म कहा 'हम यहा म चलना चाहिए। यहा चूल्हा जलाना भी खतरे से खाली नही है।'

वे लोग चल पड़े।

काले ओढ़ने-सी रात उतर आयी थी।

तारा के उजास म वे पगडडी पर बढ रहे थे। थोडी दूर पर कुछ फोग के पौधा की ओट म एक परिवार बैठा था। वह आग जलाकर कुछ पका रहा था। वे लोग उनके पास गये तो उन्ह आग के उजाले म मालूम हुआ कि वह भी विखे का मारा एक परिवार है। दुर्भिक्ष के भीषण अत्याचार से पीडित और भूखा। शायद वह उस भीड म बचने के लिए यहा आकर चूल्हा जला रहा था।

व लोग उसके पास पहुचे। डोकरी न हीं लाठी टेकत हुए पूछा, 'कुण है ?

बावरिया।' बठे हुए परिवार के मुखिया ने कहा।

मघला बावरिया को भी जानता था। जरायमपेशा जाति। वर्षों पहले सिफ हिरणा को मार मारकर खाने वाली जाति। न रोटी की चिन्ता और न अन्न की। सिफ शिकार। हिरन आदि का शिकार।

डोकरी फिर आत्मीयता से बोली, 'क्या पका रहे हो, भाइ ?' वह भीतर से आतंकित थी।

भाटे पका रहे है। टाबरा की तसल्ली के लिए। कागरस सरकार ने जमीन तो दे दी,' बावरी मुखिया बोला 'पण ईसर बरखा नई बरसाव जद क्या करें ? साचा या भले मिनखा की तरह जीयेंगे, पण यह भूख किसी को मिनख बनकर रहने ही नही देती, राखस बना देती है। कितनी बडी विपता आयी है।'

आग जोर से भभकी। डोकरी न देखा—ऊचे किनारा की कासें की थाली म चूहे पडे है ?

'तो क्या ये उन्दरें (चूहे) खायेंगे ?' उसने सोचा और उसकी आखें फट गयी।

डोकरी का मानो अस्तित्व ही हिल गया।

वह घिन से भरकर बोली, 'जल्दी जल्दी बढो। जगल का रास्ता है। काटना सरल नही।'

वे लोग चल पडे।

प्रकाश-आकनिन्दो

थोडी दूर चलने पर डोकरी ने अत्यन्त ही मद्धिम स्वर मे कहा, 'तुम लोग नही जानते कि वे क्या पका रहे थे ?

अधेरा था।

कोई किसी की आखो के भावो को नही पढ सका। वातावरण म एक ठहराव जरूर था। एक तरह ठहराव।

डाकरी आवाज को पीसती हुई वाली 'वे लोग उ दरें पका रहे थे ?'

उ दर ! चूह छालें ! !

ये अकाल ! यह भूख ! आदमी आदिम बन जाता है। एकदम जगली और असभ्य। वबर और असहाय।

उजडे हुए एक खेत के झापडे मे उन लोगा ने रात बितायी। बच्च जब भी रोटी मागते थे वे लोग उन्ह पानी पिला देते थे।

रात आखा मे गुजर गयी।

भूख म नीद भी भाग जाती है।

सार लोग बारी बारी से शौच गये। पानी की जगह रेत से काम लिया।

फिर चल पडे।

शहर की चारदीवारी के बाहर सूखाग्रस्त इलाके के किसान अपनी अपनी गायें ल लेकर आ गये थे और पडाव डाल लिया था।

उन्हाने एक टूटे खडहर के पिछवाडे डरा डाला। उम खडहर मे थोडी दूर पर आवादी थी। एकाएक अखला चिल्लाया, बापू इधर आ, देख कीडिया चोटिया आ जा रही है।'

जहा अखला खडा था वह चीटिया की जमीन थी—कीडीनगरा।

वे सव सुनत आये थे कि जहा कीडीनगरा रहता है वहा ढेर सार अनाज के दान होत है। मघला न अखल की बात की पुष्टि की और तुरत ही उस जमीन की खुदाई शुरू कर दी।

कुछ दान निकले।

उनके वच्चा न व दान कबूतर की तरह चुग लिय।

मघला उन वच्चा को देख रहा था। उसकी अथाह वदना स भरी आखो म जसे एक सवाल था कि कितने अकाल उमे और भोगन है ?

और कितनी बार उसे आदमी को राक्षस बनते देखना है। कितनी बार कितनी बार ?

डोकरी ने आकर उसे झिझोड़ा, 'क्या मुह ढीला करके बैठ हो ? जाओ, इन चूडियो को बेचकर आटे का बन्दोबस्त करो। सुना है यहा सरकार की तरफ से अनाज भी बाटा जाता है।'

बूढा अपनी नगी हड्डियो पर हाथ फेरता हुआ उठा। उसने दुखी मन से अपने बहू की चादी की चूडिया ली और चल पडा।

ये चूडिया उसकी जवानी की निशानी थी। एक बार अच्छी खेती हुई थी तब ये लाकर अपनी बहू को पहनायी थी और आज ? उसका दिल भर भर आया।

उसने सोचा कि पहले उस जगह जाय जहा उसे कुछ काम मिल जाय। यदि उसे मजूरी मिल जाती है तो वह इन चूडियो को नही बेचेगा। इन चूडिया के साथ वह कही भीतर से जुड गया है।

यह सोचता सोचता वह एक स्थान पर पहुचा जहा भीड जमा थी। वहा रोटिया बाटी जा रही थी।

एक एक आदमी को चार-चार। ये रोटिया किसी अनाज के व्यापारी ने अपनी ओर से बटवायी थी।

एकाएक चिथडा मे लिपटी एक औरत का नम्बर आया। मघला भी कुछ देर तक सोचता रहा कि वह चौधरी खानदान का है। गाव मे उसके घराने की इज्जत है। क्या उसके परिवार वाले खैरात की रोटिया खायेंगे ? कुछ देर तक सोचने के बाद वह भी लाइन मे खडा हो गया। चार रोटिया चिथडेवाली उस औरत की गोद के छह साल के बच्चे को। उस औरत ने उन रोटिया को अपने एक पल्लू मे डाला। वह कवालवत नारी एक पल खडी रही। उसकी आखो मे आदिम भूख थी। झपटने की प्रवत्ति थी। उसने कुछ नही कहा पर उसका अधनगा बदन और हिंस्र नजरें बता रही थी कि वह कई दिनो की भूखी थी। सहसा वह रोटिया पर झपट पडी। उसने एक साथ बहुत सी रोटिया उठा ली। कई लोगो ने उसे घसीटकर दूर फेंक दिया फालतू चीज की तरह। तभी बच्चा गोद मे से उछल गया। लोगो ने देखा कि बच्चा मरा हुआ है ?

'नीच पिशाचिनी !'—आवाज।

'कितनी बेईमान है?'—आवाजें।

एकदम चडालिनी !'—आवाजें-ही-आवाजें।

मघला का शरीर पसीना पसीना हो गया। उसन भी उस मन ही-मन डायन कहा। पुलिस न उसका घेराव कर लिया, पर वह इतमीनान से राटिया खा रही थी।

फिर उसका नम्बर आया। उसे भी चार रोटिया मिली।

वह साचता रहा। फिर एकात स्थल मे आ गया। उन राटिया को टुकर-टुकर दखता रहा, बहुत दर तक। उस अपना भूखा परिवार याद आता रहा। भूखे बच्चे जस उसका घेराव करत रह।

पर कइ दिना का भूखा मघला अकाल को गालिया देता हुआ, सभी से अजनबी बनता हुआ सम्बधा को निगलता हुआ, जिम्मेदारिया का नकारता हुआ वे चारा रोटिया खा गया।

जहा राटिया बट रही थी वहा भीड मे उत्तेजना भरा शोरगुल मच गया। मघला न पेट पर हाथ फेरते हुए उस ओर दखा—उस हजारो दहशतजदा आखें पथरायी-पथरायी-सी लग रही थी। दूसरी ओर पुलिस वाले अपनी लाठियो का गति दे रहे थ।

□

वारूद के ढेर पर

○

उसे लगा कि उसके चारा ओर तीखे काटा की वाड लगा दी गई है। उसका शरीर पसीने से लथपथ हो गया और एक भय उसके चारो ओर साप की तरह लिपटने लगा। उसने ध्यान से देखा तो अपने आप पर हस पडा और उसका भय मिट गया। अधेरे म छोटी छोटी झाडिया न जाने उसे सशस्त्र पुलिस दल के आदमी-सी क्या लगी ? मन का भ्रम ! अब वह निशक होकर बढने लगा।

रामल न आज उसे बता दिया था कि पुलिस उसकी तजी से खोज कर रही है और उसके नाम का वारट जारी कर दिया गया है क्योकि हडताल को कमजोर करने के लिए मास्टर को अब जेल म बन्द किया जाना अधिकारिया की दृष्टि म निहायत जरूरी हो गया था। वह साधारण मास्टर था। अपने लम्बे कद के कारण लोग उसे ऊट-सुजान कहते थे। अपनी सच्चाई और लडाकू आदतो के कारण शिक्षा निदेशक न उसकी पोस्टिग एक गाव म कर रखी थी ताकि लोग उससे दूर ही रहे वह समूह के मध्य आकर कुछ गडवड पदा न कर सके और आर्थिक दवावा से वह टूट जाय। मगर वह सभी मुसीवता को झेलकर अपने कर्त्तव्य क प्रति जागरूक था।

वह गाव जा रहा था। हडताल का आज बीसवा दिन था।

सारा गाव चारा ओर सुनहले धोरो से घिरा था। आने का रास्ता ऊट पर या पैदल ही था। हडिडया को चीरने वाली ठण्ड थी। डाफर' कलेजे म बावलिये काटा की तरह चुभ रही थी जिससे उसके पाव मे हल्की

पीडा होने लगी थी। सदा की तरह उसने घुटनो तक धोती, कुर्ता और जाकेट पहन रखे थे। सर्दी से बचने के लिए उसने गाव का ही बना एक जोडा काला कम्बल डाल रखा था, जो शरीर पर हल्का-हल्का चुभ-सा रहा था।

काजल सा काला अधेरा था लेकिन अभ्यस्त पाव सही पगडडी को पकडे हुए थे।

समय आधी रात का था।

एकाएक उसे एक ऊट आता दिखाई दिया। ऊट जोर से अरडाया। वह सावधान हो गया और एक धोरे (रेत का टीला) की ओट मे छुप गया। समीप आने पर पता चला कि वह एक तागेवाला था जो लकडिया को ऊट पर लादकर शहर की ओर जा रहा था।

उसने धोरे पर खडे होकर पूछा, 'कुण (कौन) है, भाई ? आज आधी रात क्यू चला है ?'

'मैं मगला हू मास्टरजी।'

'तूने कैसे पहचाना ?

'आवाज से। कडकदार आवाज भला कही छुपी हुई रह सकती है ? कहा से पधार रहे है ?'

शहर से।'

क्या रग-ढग है शहर मे ?'

'बहुत खराब है भाइ। तीन लाख कर्मचारी बीस दिनो से महगाई के विरुद्ध हडताल कर रहे हैं। हमारी सरकार छात्र व कर्मचारी नेताओ को चूहे बिल्लियो की तरह पकड रही है। ये सिपाहिडे तो नागरिको पर सिंह की भाति टूटते हैं। जनता के माथा को बताशे की तरह फाड देते है।

आपने तो बडी खराब खबर सुना दी मास्टरजी ?—छोटी टीगरी (बच्ची) लारल कई दिनो से मादी (बीमार) है। घर मे खोटा पैसा भी नही है। सोचा था कि लादा शहर जाकर बेच आऊगा, पर आपकी बात से लगता है कि पूरी की आश मे आधी न छिनवा दू।'

'नही-नही ऐसी बात नही है। हडताली तुम लोगो को कभी नही सतायेंगे। हा एक बात का ध्यान रखना कि एक सौ चवालीस धारा वालो

हद मे मत जाना।'

'एक सौ चवालीस धारा भी लग गयी? क्या खून खराबा वेसी हो गया है?' आश्चर्य से लादेवाला न पूछा।

वे दोना अधेरे मे प्रेतात्मा से लग रहे थे। कोई किसी की आखो के भावो को नही पढ पा रहा था। केवल वाक्य उछल रहे थे।

अपनी जेब म से बीडी निकालकर मगला बोला— लो मास्टरजी बीडी तो पिवो।

मास्टरजी न बीडी लेकर सुलगायी। एक प्रकाश का टुकडा क्षण भर के लिए उन दोना के चेहरा के भावो का अहसास करा गया।

'मगला! तेरा मुह उतरा हुआ क्यू है?' मास्टर न बीडी को गौर म देखकर कहा।

'मास्टरजी! टिगरी की मादगी तो मुझे हैरान कर गयी। आजकल दवाखाना मे तो दवा के नाम पर कोरा पानी मिलता है। सारी दवाइया मोल लानी पडती हैं। पेट की मार तो दो दिना म हुलिया बदल देती है।' लादेवाला काफी हताश था।

'तू ठीक कहता है।' मास्टर ने बीडी का लम्बा कश लेकर कहा, 'हाड-तोड महगाई आ गयी है। पैसे होते हुए चीजें नहीं मिलती हैं। समय बडा ही खराब आ गया है और सरकार कुभकर्णी नीद में पडी है।'

'मैं आपको सच कहता हू कि ऐसी महगाई, जुआ-चोरी, लूट-खसोट मैंने कभी नही देखी। अकाल पहले भी पडते थे पर इस बार तो अकाल अपना यहा पालथी मारकर जम गया है। जाने का नाम नहीं लेता। पीने का पाणी नही, सारा धीणा (दूध देने वाले पशु) मक्खी-मच्छरो की तरह मर रहा है। नगे भूखे लोग! हे रामदेव बाबा! तू ही पत रख।' फिर एक लम्बी सास लेकर उसने कहा 'पता नहीं, प्रभु ने कौन-सा दिन दिखाने के लिए मुझ जैसे बूढे आदमी को जिन्दा रख छोडा है।'

मास्टर न एक कश और खीचा। उसका उजास मास्टर के झुर्रीदार चेहरे पर पडा। मास्टर न पूछा, 'तब न थानेदारजी मुझे [illegible] थे?'

'नहीं तो।'

लम्बा सास लेकर मास्टर न कहा, 'मनफूलिए को देखा था आज ?

'हा वह दोपहर म स्कूल के आगे भीड के साथ खडा था। वह रहा था—इ कलाव, जि दावाद। लादवाला बीडी का लम्बा कश खीचकर एक पल चुप रहा। उसके चेहर पर कश लन पर जो असर पडा उससे उसक चहरे की गहरी हानी हुइ उदासी मास्टर को नजर आ गयी। लादवाला टूटता-टूटता पुन बोला, हर रोज के इ कलाब, जि दावाद से तो अच्छा है कि एक दिन सचमुच का जि दावाद मुर्दाबाद हो जाय।'

क्षणभर स नाटा छा गया।

अच्छा भाइ राम राम ! मास्टरजी ने स नाटे को तोडा। फिर दाना विपरात दिशा म आग बढ गए।

अधेरे-अधेरे मास्टर मनफूलिए के यहा पहुचा। वह पचायत समिति का क्लक था। धीरे से उसके किवाड खटखटाए।

कुण है ?

'आ तो म हू—मास्टरजी !'

मास्टरजी ! इस सर्दी म ? प्रश्न के साथ किवाड खुल गए। मनफूलिए न झट स चिमनी जला दी। पूछा, के बात है मास्टरजी ?

मास्टर ने पहले कम्बल उतारकर रखा फिर पीठ पर से एक थला उतारा। मोचडी (जूता) खाली। उनको परस्पर टकराकर धूल झाडत हुए कहा कलेजे म ठड घुस गयी है। हाथ-पाव तो ऐस सुन हो गए हैं मानो शरीर स अलग हो गए है।' मास्टर ने अपने दोना हाथा का आपस म उलझाकर जार से रगडा। रगड स थोडी सी गर्मी आयी। मनफूलिए न वापस किवाड ब द कर लिय। उसका चेहरा सवाला से भरा था। मास्टर की टागा पर रजाई आढात हुए उसन पूछा, 'इस कडाके की ठड म आपका नही आना चाहिए। डाफर ता तीर की तरह लगती हागी।

जाना बहुत जरूरी था।' मास्टर न बीडी सुलगाकर उसके लम्बे लम्बे कश लिय हडताल का आज बीसवा दिन है। सरकार न हमारी मागा पर भाई चार स माचन के लिए भी इ कार कर दिया है। लाग आन वाला कठिनाइया और नतीजा को साच-साचकर आतकित हा रहे है। मनोबल टूट रहा है। नारे क लिए उठने वाला हाथ मुर्दा हाता जा रहा

है। मुझे खत्म करने के लिए पुलिस बाजा की तरह मडरा रही है। ऐसी स्थिति मे एक बार इधर आना जरूरी था।'

'आज यहा तो दफ्तर और स्कूल पूरी तरह बन्द थे। सिर्फ मानाराम ने दफ्तर म जाने की चेष्टा की थी। उसे स्कूल के छोरो न ही 'हुरिए-हुरिए' करके भगा दिया। यह बन्दर सेना भी अजीब है। कादा-कीचड स मानाराम को भर दिया। सच्चे का बोल-बाला—गद्दार का मुह काला — के नारो स गाव भर को गुजा दिया। अब यहा सब ठीक है।' वह एक पल रुका और पुन बोला, आप कह तो एक प्याला बिना दूध की चाय बना दू। शरीर म गरमी तो आ ही जाएगी।

'चाय की जरूरत नही है। आग जला द तो ताप ले लू। हाथ पग टूट-कर गिरने को है।

मनफूलिया बिजली की फुर्ती से एक कुडे मे कुछ थेपडिया सुलगा लाया। आग से मास्टर को बडी राहत मिली। कमरा गर्म होने लगा।

मास्टर न गम्भीर होकर कहा 'मैं झाझरके (तडके, सवेरे) ही वापस चला जाऊगा ताकि पुलिस को कोई सुराग न मिले। तुम पास वाले गावो मे जाकर य पर्चे द आना। उन्ह मेरे नाम स कहना कि मास्टरजी ने हाथ जोडकर कहा है कि हडताल को सफल बनाने के लिए पूरी शक्ति से लडाई जारी रखें। हम तीन लाख है। तीन लाख इसानो को तोडना आसान नही है किसी सरकार के लिए।'

'जो हुक्म। और आप ?'

'मैं अभी यहा स दूसरे जिले चला जाऊगा।' मास्टर ने कहा 'हालाकि वहा मेरी गिरफ्तारी का पूरा जाल फैला है पर मैं अभी छुपकर रहूगा। हा, तुम य सारे पर्चे आस पास के गावो म दे आना।

'फिर आप रिदराई वाले रास्ते से जाएगे ?'

बिलकुल।

और झाझरके ही मास्टर सुनसान रास्ते से शहर की ओर पैदल ही निकल गया। जाने के पहले मनफूलिये से कहा था, मनफूलिया इस बार सरकार हमे कुचलने का भरसक जतन करेगी, पर इस कमरतोड महगाई के विरुद्ध और दूसरी गलत बातो के लिए हमे बडी कुर्बानी देनी पडे तो

भी हम तैयार रहना चाहिए।

मनफूलिय ने मास्टर की बात का दृढ स्वर म समर्थन किया।

हल्का अधेरा था। बाहर जा मटकी पड़ी थी, उसका पानी जम गया था। मास्टर कम्बल म काले धब्बे-सा धोरा की पगडडिया पर चला जा रहा था। अकेला विचारमग्न।

उसके होठा पर पपडी जम गयी थी जा जगह-जगह फट गयी थी। डाफर मास्टर का इस तरह घेराव कर रही थी जिस तरह भ्रष्ट अफसरा का सघर्षशील पीढी।

रास्ते म एक ढाणी पडती थी। बीस-तीस गावा की बस्ती। उसम एक खेजडे के नीचे आग जल रही थी। तम्बू सा तना था वहा। मास्टर उस आग की तरफ बढ गया।

'राम राम भाई? मास्टर ने हाथ जोडकर कहा।

राम राम । मुखिए न उत्तर दिया।

आग ताप लू?

'इसम पूछने की क्या बात है?'—वे लोग सात थे। एक धणी लुगाई। एक जवान बेटी। तीन टाबर। मास्टर भी उनके बीच बैठ गया। सी-सी की हलकी ध्वनि उसके मुह से निकल रही थी। होठा की पपडी सख्त हो गयी थी जिससे खून का कतरा निकल आया था।

कहा से आया हो?

गाव से। मास्टर ने कहा और प्रसग बदल दिया बाहर क्यू ताप रहे है? भीतर साते क्यू नही?'

तम्बू म ठण्ड के मारे नीद नही आ रही ही (थी), इतने ओढने बिछाने के गाभे (वस्त्र) हमारे पास नही है।'

किस जाति के हो?'

बाजीगर।' मुखिया बाला, 'बस बडो छोरो सरकारी हाकिम म है। पण अभी वो हडताल पर है।'

मास्टर ने हाथो को गम करके मुह से चिपकाया। फिर बीडी निकाल कर मुखिये को दी। लकडी से बीडी सुलगाकर मास्टर ने पूछा, तुम्हारा छोरा हडताल पर है?

'हां, पूरे बीस दिनों से ?'

'यदि तुम्हारे छोरे की नौकरी छूट गयी तो ?'

उसने बीड़ी का कश लिया। छूते हुए तारा को देखकर बोला, 'यदि तीन लाख मिनखां की नौकरी छूटसी तो मेरे छोरे की भी छूट जासी ? पण पांत (पंक्ति) से न्यारो नहीं होवणा चाहिए। मैंने तो उससे कहा भी कि बेटा उनके सागे रहना।'

मास्टर को लगा कि इसका मनोबल कितना ऊंचा है। गरीब, अनपढ़ और बाजीगर।

बाजीगर फिर बोला, 'मुझे छोरे की नौकरी की वैसी फिक्र नहीं है। हम तो बाजीगर है। वापस डमरू बजाने लगेंगे डम-डम। तमाशे दिखाने लगेंगे। यह अपनी छोरी है न, बहुत चोखी डोरी पर नाचती है।'

मास्टर ने देखा, जवानी की दीप्ति से भरा भरा उस गेहुए रंग की लड़की का चेहरा लज्जा से आरक्त हो गया है। बड़ी बड़ी काजल लगी आंखें झुक गयी है। ललाट और गालों पर गोदी हुई बिंदियाएं महकने लगी है। मास्टर को अपनी छोटी बहन याद आयी। उसका हृदय एक पवित्र स्नेह से भर गया।

बाजीगर आग पर नजर जमाकर बोला, 'मेरा छोरा कहता था कि रयत-खाऊ गोरमेंट है पण हम लोग भी पूर्ण चोखे नहीं हैं ? रयत से हम भी दफ्तरों में घूस लेते है।'

इस बात से मास्टर का चेहरा उदास हो गया। उसे लगा कि मुस्टंड के कांटे उसकी सारी कम्बल में चिपक गए हैं जिन्हें वह उतारने की चेष्टा करने लगा तो वे उसकी उंगलियों में चिपक गये। वह उठ गया। 'राम राम भाई' कहकर उसने पगडंडी पकड़ ली। सोचने लगा—सचमुच केवल मंत्री, गजटेड पदाधिकारी, आई० ए० एस० अफसर ही नहीं, इस व्यवस्था के शिकार अपना उल्लू सीधा करने वाले नीचे के लोगों में भी भ्रष्टाचार घुस गया है। उनमें भी नैतिकता नहीं है। आम आदमी उनसे भी तंग है। एक युवक ने चिढ़कर ठीक ही कहा था—'भ्रष्ट प्रशासन के विरुद्ध भ्रष्ट कर्मचारियों की हड़ताल !' हम सब कर्मचारियों को भी तो अपना एक चरित्र बनाना है, एक ऐसा रूप बनाना है जो निम्न हुए आम आदमी के

संघर्ष में साथ हो। कम से कम वे उन्हें तो राहत दें, वर्ना एक दिन दुखों, अभावों और भ्रष्टाचारों की चक्की में पिसती जनता के सामने हम सब समान अपराधी बन जाएंगे।

शहर की टूटी हुई चारदीवारी अब दिखायी पड़ने लगी थी। उगता सूरज घेरा को ढाप रहा था। वह जल्दी में चारदीवारी के पास एक क्लर्क के घर में घुस गया।

राबिन उसे देखकर चौंका। बोला, 'मास्टरजी पुलिस आपकी खोज बड़ी सरगर्मी से कर रही है। कल रात निलाव शास्त्री को भी जेल में डाल दिया। पास वाले नगर से समाचार आया है कि आंसू गैस व लाठी चार्ज *के बाद हड़ताली कर्मचारियों पर गोली चलायी गयी,* जिसमें दो हड़ताली शहीद हो गए। कुछ हड़तालियों ने एस० पी० को घटनास्थल पर जख्मी कर डाला।'

भीड़ पागल हो जाती है तो ऐसा ही होता है। मास्टर ने कहा—'हां तुम चुपचाप अपनी पत्नी को भेजकर शंकर को बुलवा दो।

राबिन की पत्नी सलमा ने आते ही मास्टरजी को हाथ जोड़े। वह भी शिक्षा विभाग में चपरासिन थी और हड़ताल पर थी। उसने स्वयं जा जाकर गद्दार मास्टरनियों को रोका था। बड़ी दिलेर थी। अपने नालायक पति को छोड़कर राबिन से चूड़ियां पहनी थीं, ओढ़ना ओढ़ा था। सलमा शादी के बाद भी सलमा है। धर्म ने प्रेम में हस्तक्षेप नहीं किया।

'बहन, जाकर शंकर को तो बुला ला।

'अभी लायी।' सलमा ने उत्साह से कहा।

वह हाथ में टोकरी लेकर चल पड़ी। बेफिक्र होकर जा रही थी। सारे नगर में लाठीधारी पुलिस खड़ी थी। अपनी बीट पर चक्कर काटते हुए सिपाहियों की लाठियां ठक ठक की आवाज से आतंक पैदा कर रही थीं।

वह थोड़ी देर में शंकर को बुलाकर ले आयी।

मास्टर ने पूछा, 'कैसी स्थिति है?

'आप तो जानते ही हैं। शंकर ने कहा हममें से कुछ कर्मचारियों की आदतें इतनी बिगड़ गई हैं कि उनमें जरा भी दुःख-कष्ट बर्दाश्त नहीं होता।

उनके भीतर छुपा हुआ भ्रष्ट ऐय्याश भूत आने वाले सकटो से जल्दी ही डगमगाने लगता है, लेकिन इकट्ठे होते ही उनमे फिर जोश भर आता है। इकलाब के अगारे चटखने लगते है और वे लडन को कमर कस लेते ह।'

'शकर! तुम तो वकर हो। इस प्रशासन न बडी चतुराई से कुछ छोटे लोगो को भी भाई भतीजावाद के मातहत लग्जरी दे देकर उह दब्बू बना दिया है। निर्भयता म रिश्वत लेने के सिलसिले ने उनकी पत्निया व बच्चो को सिफ अपन सुख पर केद्रित होना सिखा दिया है। बना तीन लाख आदमी? अरे इतनी तो कई देशो के पास सेना भी नही होती! विद्रोह कर दे तो कुर्सिया क्या, तख्त बदल दे। लेकिन जो राज्य करता है वह सबसे पहले अपन मातहतो की आदतें ही खराब करता है। उनमें अलग-अलग फिरके पैदा करता है।'

सलमा चाय-नाश्ता ले आयी।

नाश्त में कुछ फल थे।

'अरे! इस सकट मे यह खच क्या किया, खाली चाय ही चल जाती?'

'मास्टरजी, सकट को इसी मस्ती से सहन करना चाहिए। एक जून खाना खायेंगे, मगर हसकर। ऐसा नही करेंगे तो फिर सरकार को झुकायेंग कसे?'

मास्टर न देखा—एक ओज और दृढता थी सलमा के चेहरे पर।

शकर ने चाय का घूट लेकर कहा, 'आज हम एक सरकारी स्कूल का घेराव करेंगे। उस स्कूल का हैडमास्टर 'क' इतना चापलूस और रिश्वतखोर है कि अपने काले कारनामो को छुपाने और सरकारी अफसरो को अपना पक्षधर बनान के लिए हडताल को असफल करने की चेष्टा कर रहा है।'

'उसका सारा कॅरियर ही ऐसा रहा है। दरअसल हमारी हडताल मे तलवार की धार वाली तेजी न आने का एक कारण इन अफसरो के रिश्तदार व उनकी बीविया भी है। इन अफसरो की बीवियो का अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व तो है नही। वे काफी पढी लिखी होन के बाद भी आम पत्निया की तरह पत्निया है। नौकरिया करती ह केवल

पूरा करने के लिए। देख नही रहे हो कि उनकी बीविया जो मास्टरनिया है अधिक म अधिक स्कूल जान क लिए चेष्टाए कर रही हैं।'

बिलकुल। कल तो चद महिला कमचारिया ने एक डाक्टर की पत्नी का जबरदस्ती रोका। उसके मुह पर स्याही पोत दी।'

ऐसी रोकथाम होनी ही चाहिए। मास्टर ने कहा।

मास्टर न चाय खत्म करके एक पर्चा लिखा। उस शकर को थमाकर कहा— इसे अभी घट दो घटे म छपवाकर बटवा दो। शकर बहुत अच्छा' कहकर चला गया।

हैड मास्टर क ने स्कूल लगा ली थी। लगभग दो बजे सारे कम चारी जिनकी सख्या हजारा म थी, स्कूल के पास पहुच गय। उनके साथ महिलाए भी थी। इतनी बडी भीड को एकाएक दखकर क' घबरा गया। उसन तुरत कलक्टर को एहतियात की कायवाही हेतु फोन कर दिया। फिर वह नताओ स इधर-उधर की बातें करन लगा—समय बितान के लिए। उसन हडताल करन के लिए साफ साफ मनाही कर दी। कलक्टर एस० पी० और सिटी मजिस्ट्रेट सशस्त्र पुलिस दल लेकर आत, इसक पहले ही उत्तेजित सघषशील भीड ने क' को पकड लिया। उसका मुह काला कर दिया। क ता अपन काल कारनामा को कमचारिया क खून से धाना ही चाहता था सो उसने अपन छात्रा से पथराव शुरू करवा दिया।

हडताली कमचारिया न पथराव का जवाब और उत्तजित होकर दिया।

तभी सशस्त्र पुलिस दल की लारिया आ गयी। जीप पर एस० पी०, कलक्टर और सिटी मजिस्ट्रेट पहुच गए। व भीड को देखकर घबरा गए। उन्ह दखकर हडतालिया क बीच घिरे क' न आतनाद किया मुझे बचाओ कलक्टर साहब—मुझे बचाओ। मेरा जान का खतरा है।

भीड चिल्लायी—गद्दार! गद्दार!! गद्दार!!!

हलचल—कोलाहल—अफसरों क सकत व आनाए।

आसू गम—फिर लाठिया।

पुलिस ने बडी बर्बरता से लाठिया बरसायी। उसने भीड को घेर लिया। साइकिलो पर अपने ट्रक चला दिए। निहत्थे लोगो का मनोबल टूट गया। वे चारो ओर भागे। सशस्त्र पुलिस ने अपने आकाओ के हुक्म से आसपास के घरो से लोगो को निकालकर उनकी पिटाई की, राह चलते लोगो को पीटा। पत्रकार भी उनकी लपेट मे आ गये। एक छात्र नेता को तो उन तीनो अधिकारियो ने खडे होकर पिटवाया। उसका सिर फट गया। एक सकता-सा छा गया।

इसके बाद नगर मे उत्तेजना का वातावरण छा गया। मास्टर ने नगर बद का आह्वान किया। दूसरे दिन विशाल जुलूस का आयोजन था। १४४ धारा का एकदम तोड देने का निर्णय था, इस पर प्रशासन ने सारे नगर मे सेना तैनात कर दी। जुलूस नही निकला क्योकि मास्टर नही चाहता था कि हडताली जेल मे व्यर्थ ही बन्द हो जाय और बाहर की स्थिति नेताओ के अभाव मे कमजोर हो जाय।

मास्टर की गिरफ्तारी फिर भी नही हो सकी। इसके बाद सारा प्रात भडक उठा। जेल हडतालियो से भरने लगी। दफ्तरो के आगे पिकेटिंग शुरू हो गयी। जिस कर्मचारी ने दफ्तर मे जाने की चेष्टा की उसको हडतालियो ने पहले प्यार से समझाया फिर सख्ती बरती। उसके बदन से सारे कपडे उतारकर केवल पैंट मे वापस भेजा। एक अफसर की बीवी ने स्कूल मे प्रवेश करना चाहा तो हडताली महिलाओ ने उसे भी रोक दिया और उसे काला ओढा कर वापस भेजा। अधिकारियो ने इसका प्रतिकार यह किया कि वे निरन्तर सघर्ष से टूटते हुए कर्मचारियो को जीप मे बिठा बिठाकर दफ्तर लाने लगे। शिक्षा अधिकारियो से कह दिया गया कि वे रजिस्टर मास्टरो के घर भेजकर उपस्थिति अकित करा लें। यही हाल इसपेक्ट्रस आफ गर्ल्स स्कूल्स का भी था। उसने तो हडताली शिक्षिकाओ को धमकी तक दे डाली कि यदि वे उपस्थित नही हुई तो दूर-दराज के गावो मे उनकी बदली कर दी जायेगी।

हडताल के बारे मे आकाशवाणी लगातार प्रचार कर रही थी। चारो ओर से सत्ता, जो जनता की सत्ता कहलाती है, अपने लोगो को कुचलने के लिए सभी प्रकार के हथकडे अपना रही थी। पर हडताल किसको बुन्द

थी, इसका प्रमाण मुख्यमन्त्री की इस बात से साफ जाहिर हो रहा था कि वह बार-बार घोषणा कर रहा था कि फला तारीख तक जो कर्मचारी उपस्थित हो जायेगा, उसके खिलाफ किसी तरह की कोई कारवाही नही की जायेगी और यह तारीख बढती जा रही थी।

मास्टर की दाढी बढ गयी थी। पुलिस व गुप्तचर उसे पकडने मे सर्वथा असमर्थ हो रहे थे। जिलाधीश को गृह आयोग सचिव बार बार डाट दिला रहा था कि मास्टर क्यो नही पकडा जा रहा है ? उसे पकडो। उसके एक एक शब्द मे आग है। उसके द्वारा लिखे गये पर्चे हडतालियो मे संघर्ष व दृढता की भावना जगा रहे है। उसकी गिरफ्तारी के बिना बाहर के सगठन मे बिखराव नही आ सकता। हडतालियो का मनोबल नही टूट सकता। उसे पकडो—किसी भी तरह पकडो। लेकिन मास्टर नही पकडा गया। बल्कि उसने कहा देश की स्थितिया बारूद के ढेर की मानिंद है। बस एक चिनगारी की जरूरत है—गलत जलकर राख हो जाएगा। कुछ नया जन्मेगा—एकदम नया।

नगर के सजग लोगो ने अपनी गिरफ्तारिया देनी शुरू कर दी थी। पार्टियो के विधायक भी जेल मे चले गये, लेकिन मुख्यमन्त्री एक ही बात की रट लगा रहा था—काम नही तो दाम नही। मानो मुख्यमन्त्रीजी देश नही, घर का कारखाना चला रहे है और उन्हे घाटा होने वाला है। फलस्वरूप जगह जगह मुख्यमन्त्री के पुतले जलाये जाने लगे। एक दिन तो जेल मे भी लाठी चार्ज हो गया। घटना इस प्रकार हुई कि जेल के हडतालियो ने वहा भी मुख्यमन्त्री का पुतला जला दिया। साथ मे ताश और शराब की बोतल भी रख दी। हाय हाय—इन्कलाब जिंदाबाद के नारो से जेल के दरवाजे हिल गये। लोहे के दरवाजे पर बिजली का करेंट छोड दिया गया ताकि कोई कैदी बाहर न भाग सके। उत्तेजित कैदी हडतालियो पर बडी कठिनता से काबू पाया गया।

हडताल का ३१वा दिन आ गया।

मुख्यमन्त्री ने एक बार फिर रट लगायी—मैं कर्मचारियो से कहता हू कि वे दो दिनो के भीतर आकर अपनी ड्यूटी ज्वाइन कर लें। उनके विरुद्ध किसी तरह की कोई कारवाही नही की जाएगी। मास्टर ने पर्चा निकाल

दिया, 'यह लालच आंदोलनकारियों में एक अस्थिरता लाने के लिए है। उनके मनोबल को तोड़ने के लिए है लेकिन हम इस लालच पर थूक देना चाहिए। तीन लाख आदमियों का भविष्य ही इस हड़ताल की सफलता से नहीं बंधा है बल्कि देश की सारी शोषित पीड़ित जनता का भविष्य इस हड़ताल की सफलता से जुड़ा है। हम हड़ताल जारी रखेंगे। उसके लिए और लम्बा संघर्ष करेंगे। आहुतियां देंगे। हमारी हड़ताल ऐतिहासिक हड़ताल हो गयी है। इतनी लम्बी हड़ताल आज तक नहीं हुई और यदि हम साहस के साथ अड़े रहे तो हमारी सफलता भी निश्चित है। इसका कारण यह है कि सरकारें, चाहे वह प्रांतीय हो या केन्द्र की अंग्रेजी हुकूमत की भांति उनके मंत्री व अधिकारी प्रजा का शोषण करके अपने निजी घर बनाते जा रहे हैं। लग रहा है कि हमारे ही आदमियों में अंग्रेजों के प्रेत घुस गये हैं—निर्दयी, शोषक और लोलुप अंग्रेजों के प्रेत।'

गुप्तचर विभाग के एक अधिकारी ने पर्चा बांटने वाले एक आदमी को पकड़ लिया और मास्टर का पता पूछा पर उसने नहीं बताया। उसकी पुलिस वालों ने बहुत पिटाई की। उसको करेंट के झटके लगाये गए पर सब व्यर्थ। पुलिस की मार में वह बेहोश हो गया। पुलिस वालों ने कलक्टर को बताया, वह आदमी हाड़ मांस का नहीं, पत्थर का बना हुआ है।

'पत्थर का!' अफसर ने जल्लाद की तरह आंखें फाड़कर कहा, 'इसे और तराशो।'

उसे फिर तरह तरह की यन्त्रणाएं दी गयीं, पर उसने मास्टर का पता नहीं बताया। अंत में वह बेहोश हो गया।

तभी रेडियो ने घोषणा कर दी कि कर्मचारियों और हड़तालियों के प्रतिनिधियों के बीच समझौता हो गया है। चंद मांगें मान ली गयी हैं और हड़ताल आज समाप्त की जा रही है।

मास्टर अपने चंद साथियों के साथ बातचीत करता हुआ सड़क पर से गुजर रहा था। दूर भीड़ जमा थी। डमरू की डम डम आवाज आ रही थी।

एक साथी ने टूटे हुए स्वर में पूछा, 'मास्टरजी, क्या हमारी हड़ताल फेल हो गई? हमें सरकार ने कुचल दिया? हम हार गए?'

मास्टर ने अपने साथियो की ओर देखा। उसे अहसास हुआ कि सारे साथियो की आखो म वही सवाल है। अजीब से रगो की आवा जाही उनके चेहरो पर हो रही थी।

तभी वे भीड के नजदीक पहुच गए। मास्टर ने देखा—वही साहसी बाजीगर तमाशा कर रहा है। भालू और बदर की लडाई का। भालू ताकतवर था। फिर भी बदर उस पर निरतर आक्रमण करता जा रहा था। पीछे हट-हटकर वह हमला कर रहा था—भालू को हटाने के लिए। लग रहा था आखिर मे बदर जीत जायेगा।

मास्टर ने अपने साथियो को सम्बोधित करते हुए कहा, 'कामरडो! आप सब भालू और बदर की यह लडाई देख रहे हैं। बदर पीछे हट हटकर हमला कर रहा है। दोस्तो! हम आज जो पीछे हटे हैं वह हमारी हार नही बल्कि नया हमला करने की तैयारी है। इस बार हम अधिक ताकत स हमला करेंगे। नया हमला हमारी जीत होगा।

मास्टर की बात साथियो की समझ म आ गयी। साथियो की आकतिया दढता के नये रग से पुती जान पडी।

तभी डमरू जोर जोर से बजने लगा—डम-डम-डम-डम डम ।

❑

दर्द का दायरा



कडाके की ठड मर चुकी थी और मौसम में मनभावनी ऊष्मा समा गई थी। फिर भी रेतीले प्रातो मे धूप पसीना चुआ देती थी और हवा से रेत के कण आ आकर आकृति का म्लान वना देते थे।

पटवारी किसन ऊट पर सवार था। अभी उसे लम्वा रास्ता पार करना था। धोरा वाले ऊबड खाबड और उतार चढाव भरे रास्ते मे कही भी घनी छाव नही थी। उस निजन इलाके मे कही-कही उगे खेजडो के वक्ष आवारा प्रेता से लग रहे थे और कर के पल्लवहीन वृक्ष अपने नगेपन का आभास द रह थे।

किसन के साथ ऊटवाला था। ऊट पर लगा पलाण' अच्छा था। उस पर विस्तर लगा था, इसलिए यात्रा सहज हो गयी थी। कभी-कभी ऊट अपनी जीभ को थैली की भाति वाहर निकालकर अरडाता था जिससे चारा तरफ फला गहरा सन्नाटा काप जाता था और अरडाने की गूजें-अनगूजें फल जाती थी।

1 'अव गाव कित्ती दूर है, मियाजी ?

वम, आया ही समझो उस धोरे के आगे एक छोटा-सा 'ताल' (समतल भूमि) है। ताल के पास ही गाव है ? फिर मिया ने ऊट की लगाम को खीचकर कहा, 'चेत चेत ।' वह अपने ऊट को सावधान कर रहा था क्योकि अब ऊट एक ऊचे धोर पर चढ रहा था। धोरे के आगे एक छोटा-सा ताल था और ताल से आगे गाव। बीकानेर की सीमा के पास

बसा यह गाव अब उजड गया था। पूरी मुसलमानी बस्ती थी। आज इस गाव मे कौवे बोल रहे थे। सारे घर झोपडे खडहरा मे बदल रहे थे। कच्ची मिट्टी के बने इन घरा की छतें टूट गयी थी, दीवारें गिर गयी थी, फूस के छप्परा मे पक्षियो न घोसले बना लिये थे। गलियो मे कोई-कोई आवारा गडक (कुत्ता) फिर रहा था जो साझ तक खेतो की ओर भाग जाता था।

'इस गाव म तो 'माणस' दिखायी ही नही पड रहा है ? पटवारी किसन ने पूछा।

'गाव वाला ने खेता मे ही अपनी-अपनी अलग ढाणिया बना ली हैं। वहा वे बारह मास रहते हैं। बेकार आना जाना कौन करे।'

'खेत यहा से कितनी दूर हैं ?'

'थोडी ही दूर।'

'प्यास लगी है पानी मिलेगा ?'

'पानी तो अब खेता मे ही मिलेगा। पटवारीजी, आप धावस रखिये, मैं अभी आपको ढाणी पहुचा आता हू।'

ऊट फिर चल पडा। पगडडी साफ-साफ नजर आ रही थी। अब कुछ पेड भी अधिक दिखने लगे थे। धोरो पर फोग की झाडिया धब्बो-सी दिखाई पड रही थी।

सामने लम्बा ताल था उसमे कही-कही मृग-मरीचिका का भ्रम हो जाता था। कभी-कभी इस ताल मे हिरण दौडते हुए दिखायी पड जाते थे।

मग-तृष्णा भी कितनी बडी ठगोरी होती है। हिरण बेचारा भटकता ही रहता है।

जहा ताल खत्म होता था वहा एक ऊचा धोरा था। उस धोरे की लम्बाई चौडाई काफी थी। वहा दो-तीन घरो की 'ढाणी' थी। धारे की तलहटी पर बडे-बडे बिल थे। उन बिला मे चूहो की आवा जाही थी। कभी-कभी खरगोश भी दिख जाता था।

'यह गुलण की ढाणी है। वह इस ढाणी का सबसे बडा किसान है। चोखी खेती करता है। चारो ओर इसका दबदबा है।'

पटवारी किसन ने उसकी बात की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। वह वातावरण को नजर में भरकर बोला 'शाम होने वाली है, यहां का अंधेरा भी कितना सूना-सूना लगता।

'मारे पटवारी गुलण के यहां ही रहते हैं।'

किसन ने 'हूं' कहा और उसका ऊंट धोरे पर चढ़ गया। गुलण की उम्र पैंतालीस साल की थी। उसके घुटनों के नीचे तक जामा, लुंगी और सिर पर बेतरतीब साफा रहता था। मजहबी दाढ़ी-मूंछें। बातों का अंदाज भी अलग। यानी वाकई हुनर। मूंछों में सफेद बालों का मिश्रण। हाथ में हुक्का।

गुलण ने ऊंट को देख लिया था। वह झट से आगे बढ़ा। उसकी 'मोजडी' का रंग बदरंग हो गया था। दोनों पांव की मोचड़ी (जूती) आगे से फट भी गयी थी। वह शीघ्रता से रुका। उसका स्वागत भी ऊंट वाले ने ऊंचे स्वर में कहा 'गुलण! पटवारीजी आये हैं।'

'पटवारीजी—सलाम करूं।'

ऊंट वाला ऊंट की गर्दन पर पांव रखकर नीचे उतरा। फिर उसने ऊंट को जकाया।

किसन उतरा। उसके पीछे एक बस्ता बंधा था, जिसमें गिरदावरी व कागज, रजिस्टर व गांव के खेतों का नक्शा था।

थोड़ी देर तक बातचीत होती रही। किसन को लगा कि गुलण आदमी अच्छा है, दिलचस्प है। अब उन दोनों में एक अपनापा जनम गया।

तब किसन ने कहा, 'गुलण मियां, बड़ी जोर की प्यास लगी है।'

'आप भी पटवारीजी खूब हैं! इतनी देर गप्प मारते रहे। पहले ही पानी मांग लेते।' फिर याद करके बोला, 'आप खड़े क्यों हैं? नीचे बैठे विराजिए, मैं अभी पानी लाता।'

गुलण ने कच्चे घर की ओट में गली में खाट बिछायी फिर जोर से पुकारा, 'जमीला, पटवारीजी के लिए पानी ला ना।'

वह हर शब्द को दबाव देकर चबाकर बोलता था।

भीतर से घटिया एल्युमीनियम का गिलास भरकर एक युवती आयी। उसका रंग एकदम सांवला था, किन्तु

गया था। उसने आठ कलो का घाघरा पहन रखा था। उस पर कुर्ता। कुर्ते की एक ओर जेब। जीण शीण ओढना। जमीला की आखें बडी-बडी थीं। उसन अपने घूलभर चिकट्टदार बालो की कई गुदडिया बनाकर बाध रखी थी।

किसन न उसे अपलक दृष्टि मे देखा। जमीला पानी का गिलास देकर चली गयी।

गुलण न पूछा, 'आप हमारे हाथ का बनाया हुआ खाना खा लेंगे?'

'हा गुलण मिया, आप भी तो आदमी ही हैं पर मैं मास नही खाता

'अरे मास हम गरीबा को तो तीज-त्यौहारा पर ही नसीब होता है फिर एक पल सोचकर बोला, 'अरे हा, बाजरो की रोटी और सागरिया साग बनवा लू?'

'हा गुलण मिया! गेहू तो शहर मे भी बहुत खाते हैं। यहा तो साग फोफलिया, फलिया का साग ही चाहिए, एक जून तो बाजरो का खि भी खायेंगे।'

'तो फिर आज खिचडा ही बनवा दू।' गुलण ने उत्साह से कहा, पटवारीजी, मुझे ता आपको छुट्टी ही देनी पडेगी मैं अबार पास वाले जाऊगा। सरपचजो से काम है। आपकी खातिरी म मेरा भाई 'बा रहेगा। अरी जमीला, बाकर आयो कि नही?'

'काको आणे वालो है।'

उसका घर क्या था, एक सालको' सा था।' उसम मे जमीला बैठी बोल रही थी। तभी बकरिया को हाकता हुआ बाकर आ गया। चोगा, लुगी माफा, पर उमका दाया हाथ कटा हुआ था बाजू के पास उसमे अब भी थोडा-थोडा रक्त चू रहा था। जरा-सी हड्डी थी जो करुणा का उद्रेक करती थी।

'सलाम पटवारीजी।' बाकर ने एक हाथ उठाकर

देखा कि बाकर की आखें प उसके

हड्डिया उम खखारपन को बढा

किसन न विस्मय से

'काई जहरीला जीव

काट दिया।' गुलण ने बताया।

'राम-राम!' उसने पश्चात्ताप सूचक स्वर म कहा 'आदमी अपग होकर कितना दुख पाता है?'

गुलण न वाकर से कहा, 'वाकर, पटवारीजी हमारे 'पावणा' हैं, इन्हे सभी तरह का आराम मिलना चाहिए।'

किसन ने चाय पी। चाय पीकर वह शौच के लिए खेतो की ओर चला गया।

जब वह लौटा तब जमीला बकरियो को दुह रही थी। ढोरो को दाना-पानी दूसरी लडकी दे रही थी। वह बार बार किसन की ओर ताक-झाक कर रही थी। उसकी आखो मे आमन्त्रण था। कभी-कभी वह अजीब-सा सकेत करती थी जो किसन म एक उत्तेजना पदा कर जाता था।

साझ काजल सी काली रात मे घुल गयी थी। अधेरे मे विस्तृत ताल सोये हुए सागर-सा लग रहा था। उसके चारो ओर उठे हुए धोरे, उन पर बसी हुई ढाणियो मे जलते दीये आकाश क्षितिज के मिलन पर दीप्त तारो की भाति लग रहे थे।

एक सालकी मे किसन के रहने की व्यवस्था की गयी थी। वाकर की खूखार आखें धुधले उजास मे और भयकर लग रही थी। कभी-कभी वह काप जाता था और एकात का भय उसे सत्रस्त कर देता था यही वाकर रात के अधेरे म ।

उसका दम घुटने लगा। तभी वाकर ने कहा, 'पटवारीजी, असली गाय का घी है दूध के साथ पी लीजिए नाडिया चिकनी हो जायेंगी।'

किसन ने वाकर की ओर देखा। उसका टूटा हुआ हाथ एक वीभत्स हरकत कर रहा था जिससे उसको अरुचि-सी हो गयी। उसे लगा कि उसके मुह के कौर का जायका बिगड गया है।

वाकर न पुन खोखली हसी हसकर कहा इस बार तो डाफर ने खेतो को जला दिया। ऐसी ठडी हवाए चली कि सरसो गल गयी सोचा था कि इस बार कुछ कर्ज उतारेंगे पर जिनके नसीब फूटे हो उन पर कोई-न-कोई आफत आ ही जाती है। अरी जमीला, जरा घी तो लाना।'

किसन ने मना करते हुए कहा, 'नही वाकर भाई, अब घी नहीं चलेगा।

अरे भाई हमारे पेट की नाडियो को खाने पचाने की आदत ही नही रही।'

तभी जमीला आ गयी। इस बार वह इतनी सन्निकट बैठी कि उसके शरीर की बू ने उसे घेर लिया। किसन ने सोचा कि कितनी कोजी बास आ रही है। जरूर वह कई दिना से नही नहायी है।

जमीला न उस घुटे हुए मौन को भग किया, 'काका, तुझको अम्मा बुला रही है।

बाकर चला गया।

जमीला ने किसन की ओर देखा। फिर वह मुस्कराई। किसन को बडा ही अजीब लगा।

'घी डालू ?' जमीला ने 'घीलाडी' उठाकर पूछा।

नही-नही।' किसन ने दोना हाथा से मना किया।

'अरे थाडा-सा लीजिए न ? घर की गाया का है।' वह डालने लगी, तभी किसन ने उसका हाथ पकड लिया।

'नही जमीला, नही ?'

'जैसी आपकी मर्जी।' उसने घीलोडी रख दी।

किसन के मन म ज्वार-सी हो गइ। एक अजीब-सी अनुभूति। उसने झट से प्रसग बदला, 'तू किसकी बेटी है।'

बाकर की।'

'कितने टाबर हैं बाकर के ?

'दो ?' जमीला ने दीये की बत्ती को ठीक करके कहा, 'दोना छोरिया।' एक मैं और दूसरी तूरी, फिर वह गम्भीर होकर पुन बोली, 'आपकी शादी हो गयी ?

'शादी ?' वह चौंककर तनिक मुसकराकर बोला 'मेरे तो तीन बच्चे हैं।'

'आप कितने कितने दिनो तक गाव म घूमते रहते है ? जमीला के चेहरे पर कोमलता आ गई थी।

'एक-एक महीने तक गिरदावरी का काम बडा टेढा होता है।'

'एक-एक महीना तक आप अपनी जोरू के बिना कैसे रह लेते है ?'

उसने अत्यन्त सहजता से प्रश्न किया।

किसन की नजरें हठात् जमीला के चेहरे पर चिपक गयी। उसने देखा कि उसके चेहरे पर कोमलता की जगह उत्तेजना की परत चढ गयी थी।

उसने किंचित कठोर स्वर मे हुक्म दिया 'बाकर को बुलाकर ला। मुझे उसके खेतो के बारे मे बातचीत करनी है। सुना है कि यहा लोगो ने कई खेत नाजायज काश्त कर रखे हैं।'

जमीला ने उसकी बात की परवाह न करके कहा, 'काका तो बीमार गाय को 'लुगदी' दे रहा होगा।'

उसने थाली म 'चुल्लू' कर लिया फिर कहा 'अब इसे ले जा और बाकर को भेज देना।'

जमीला मुह बिचकाकर चली गयी।

थोडी देर मे बाकर आया। उसके हाथ मे हसिया था। चमचमाता हसिया। किसन दहशत से घिर गया। बाकर एकदम पिशाच लग रहा था।

उसने हसिए को एक कोने मे रख दिया और हाथो को झटका देकर बोला 'काला (साप) निकल आया था? दो हाथ का था साला। मैंने एक ही झटके मे दो टुकडे कर दिए। पटवारीजी, किसी को डस लेता तो वह पानी भी नही मागता।' वह पटवारी के पास बैठ गया। तभी नूरी ने हुक्का लाकर रख दिया। बाकर ने उसका एक लम्बा-सा कश लिया जिससे गुडगुड का धीमा स्वर फैल गया।

'आप हुक्का ?'

'नही, मुझे कोई व्यसन नही है।' किसन एक तिनके से अपने दात कुचरने लगा।

क्षणिक मौन।

यहा बरकत बेगम कौन है? किसन ने ललाट मे बल डालते हुए पूछा।

बाकर ने जिस ढग से उत्तर दिया उससे किसन सहम गया। बाकर की आकृति एक पल मे इतनी हिंस्र हो गयी थी मानो वह कच्चा चबा जाएगा। उसे बाकर का वही रूप याद आ गया जब वह हाथ मे हसिया लेकर मालकी मे घुसा था। एकदम खूनी की तरह।

वाकर ने भद्दे ढग से मुसकराकर कहा, 'पटवारी साव ! आप कभी कभार दारू का गुटका लेते है या नही। अपने घर की निकाली हुई है। एकदम असली।

'दारू क्या, मैं तो बीडी सिगरेट भी नही पीता। देखा वाकर मिया, मेरे लिए पाणी का लोटा भरकर रख दो, मुझे रात को तीन चार बार प्यास लगती है।'

'आप फिक्र न करें पटवारी साव, आपके पास नूरी सोयेगी।

मेरे पास ?' वह एकदम चौक पड़ा।

क्या, नूरी कोई डायन है जो आपको निगल जाएगी। अच्छा अब मुझे हुक्म दीजिए। मैं अब खाऊगा-पीऊगा।' वाकर हवा की भाति उसका उत्तर सुने बिना निकल गया।

उसमे भयानक अड़ता आ गयी।

नूरी यहा सोएगी ? क्या सोएगी ? कही यह खूखार वाकर मुझे किसी सकट में न फसा दे बलात्कार का मामला बनाकर !' वह यह सब सोचते आतकित हो गया। उसके रोम रोम मे पाडा के काटे चुभन लगे। उसने एक बार हसिए की ओर देखा। वह काप गया। उसे लगा कि हसिया उसकी गदन पर फक से पडा और गदन धड से अलग ! ! खून ही-खून ! - रक्तपात ! खून के वीभत्स धब्बे !!

दीये मे अब जरा-सा तेल बाकी रह गया था।

तभी नूरी आहिस्ता आहिस्ता आई। उसके साथ तीन छोटे बच्चे थे। इस बार उसने अपने बालो म कई मीढिया बना ली थी। कानो की ओर निकली मीढिया म चादी की पत्तिया झूल रही थी। उसके कानो म बालिया थी पर वह अत्यन्त ही उदास थी—एकदम टूटी-टूटी। उसने नितात नाटकीयता स कहा, 'मुजरो करू पटवारी साब ?'

किसन न सब कुछ जानते-बूझते हुए कहा, 'तू यहा सोएगी ? अकेली ?'

नूरी न तनिक निलज्जता स कहा 'मैं तो रोज यही सोती हू। यहा सबके लिए अलग-अलग आसरे (कमरे) थोड बन हुए हैं ?'

किसन के शरीर से पसीना छूट गया।

बाहर अचानक 'होल (शीत लहर) छूट गयी थी। लग रहा था कि

लौटकर वोली, 'अब कोई आयेगा तो पत्ते खडक जायेंगे।'

नूरी मैं ऐसा आदमी नहीं हूं। तुम मुझे भला आदमी समझो ! बता सकती हो कि यह बरकत बेगम कौन है ? वह नूरी से परामर्श भरे स्वर में बोला।

मेरी मां ? उसने हठात जवाब दिया।

उसका खाविंद 'चारू' कहां है ?' गुप्तचर की भांति भौंहें टेढ़ी करके किसन ने पूछा।

नूरी ने पर्दे के बाहर देखकर अत्यन्त धीमे स्वर में कहा, आप यह सब क्या पूछ रहे हैं ? यदि काका को मालूम हो गया तो वह मेरी गर्दन अलग कर देगा। देखिये मैंने आपके पास आने की मनाही की तो उसने मेरी क्या बुरी गत की।' नूरी ने अपना कुर्ता ऊंचा कर दिया। उसकी नंगी छातियां और पीठ पर दो चार बेंतों के चिह्न थे।

बहुत बेदर्दी से पीटा है ?' उसने साश्रु से पूछा।

नूरी की आंखें डबडबा आयीं। उसने कुर्ते को वापस सीधा करके कहा, आपको खुदा की कसम है किसी को नहीं बतलायेंगे।'

किसन ने उसे आश्वस्त किया।

दीया बुझ गया।

घुप अंधेरा छा गया।

नूरी ने व्यथा विगलित स्वर में कहा, मेरी मां बरकत बेगम और काकर में नाजायज ताल्लुक है। आज से नहीं बरसों से। शायद जवानी से। मेरे बाप चारू की खातदारी जमीन है। काकर उसे हड़पना चाहता है। उसमें शामिल है—मेरी छिनाल मां। इसलिए ये दोनों मिलकर ? मेरे बाप का कई सालों से अता-पता नहीं है। पता नहीं, इस काकर ने उसे जान से मारकर कहीं गाड़ दिया हो। यह बड़ा ही हत्यारा है। है तो सिर्फ इसके एक हाथ, पर जुल्म हजार हाथ वालों की तरह करता है और आपके पटवारी और दूजे साथ जब आते हैं तो काकर उन्हें दारू पिलाता है फिर हम दो बहनों को। यदि हम उसकी सगी बेटियां होतीं तो क्या वह इस तरह ?'

पर तुम्हारी मां ?

मा कभी की मर चुकी है। वह तो छिनाल है, कई कुवो का पाणी पीने के बाद भी उसकी प्यास नही बुझी। वह बाकर को भी छोड देती पर बाकर का हसिया और मेरे बाप का गायब होना कोई बडी मजबूरी है। पटवारी साब! आप नही जानते कि हम दोनो बहन कितना जुल्म सहती है। इस डीला (शरीर) म कितने कीडे कुलबुलाते है आप नही जानते? जो आता है—दारू पीकर हमारे साथ सोकर कागजो म लिख जाता है कि सब कुछ ठीक है। कानून सम्मत है। लेकिन कानून और इन्साफ है कहा? हम दोनो के मास के कुए मे डूबकर सब बन कानून इन्साफ और सच्चाई भूल जाते है और याद रह जाते है—दारू हमारा यह डील और।

किसन ने टार्च जलाई। देखा कि नूरी का चेहरा अश्रुओ से भीग गया है। वह किसन के सीने पर अपना सिर रखे नन्ही बच्ची-सी लगने लगी थी। एक कोमल पवित्रता मौन स्वर म गुजित होने लगी। किसन को लगा कि करुणा का सागर उसके अन्तस् म लहरा रहा है।

किसन ने उसके सिर को बुजुग की भाति थपथपाकर कहा—

'तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हे न्याय दिलाऊगा। तुम्हारे बाप की असलियत का पता लगाऊगा। इस भूमि पर सभी लोग बुरे नही होते, वे केवल मास के कुवो मे नहा डूबते, दारू के गुलाम नही होते। कही-न कही अच्छाई बाकी है ही। यदि यह सतुलन न हो तो इस भूमि पर प्रलय नही आ जाता?

यह बात वादी थी, पर थी वजनदार।

'लेकिन आप एसा क्यो करेंगे?' उसने अपने स्वर पर दबाव देकर कहा।

बाहर पत्ते खडके। नूरी एकदम चुप हो गयी। किसन ने टार्च बन्द कर दी। दोनो एक दहशत से घिर गए। कही बाकर ने बात सुन ली तो? किसन का तो खून ही जम गया।

तभी बाकर ने रुकते रुकते कहा, 'पटवारी साब! आराम स सोइएगा।' दारू की अधिकता के कारण वह साफ-साफ नही बोल रहा था।

नूरी ने शीघ्रता से पर्दे की ओट से देखा। चाकर लडखडाता हुआ वापस जा रहा था।

'रोशनी।' नूरी न कहा।

किसन ने फिर टार्च जला दी।

'कसाई गया। इसे कब काला खायेगा।' उसन घृणा से विफरकर कहा। ठड बढ गयी थी।

किसन की स्थिति काटा की बाड म फस आदमी जसी थी। एमी विकट और उलझी हुई स्थिति का सामना उसने कभी नही किया था। नूरी इस बार उससे सटकर बैठ गई। बोली, 'पटवारी साब, आप हम दोना बहना को इस नरक से निकाल देंगे ता हम जिदगी भर आपके पाव धा धाकर पीयेंगे।

'तुम विश्वास रखो। मैं इस चाकर को ठीक कर दूगा। हमार कमिश्नर यानी सबसे बडे साहब बहुत ही भल हैं।

वचन दीजिए।

उसने नूरी के हाथ पर हाथ रख दिया।

नूरी ने उसके हाथ को चूम लिया। कुछ पल दोनो एक दूसर का देखत रहे। किसन ने देखा कि जा नूरी थोडी देर पहल दद के दायरे म घिरी थी, वह एक नया रग ले रही है। उसमे एक और नूरी घुस रही है। किसन ने अज्ञात भय से कहा 'अधेरा करू?'

'अभी नही। नूरी उसके पास आ गयी। उसने अपनी बाह उसके गले मे डाल दी।

किसन न उसे टोका, 'नही, तुम अब सा जाओ। मैं तुम्हारे लिए इस व्यवस्था स एक लडाई लडूगा। तुम्हे इन राक्षसा से छुडाऊगा।'

लेकिन नूरी न मानो उसका बडबडाना सुना ही न हो। वह स्वय न जाने क्या बडबडाती रही। एक आवेग भरा बडबडाना।

जिस्म की बू, घी की गध और चमकता हुआ हसिया बाहर कदाचित् हवा से पत्त खडके।

किसन भयावह आतक से घिर गया।

उस रात बाहर उगे नगे पेड पर ओस की बूदें नही बरसी नही बरसी।

□



घर की मृगमरीचिका

घर मे वह

O

उसकी स्थिति बडी विचित्र थी। पिछले कई दिना से वह गम्भीर रूप से महसूस कर रहा था कि उसके भीतर सुरगें पैदा हो रही हैं—बहुत गहरी, लम्बी चौडी, अधेरी और सीलन-भरी!

अब स्थिति यह थी कि वह जसे-जैसे उन सुरगा को पाटने का प्रयास करता था, वे और बढ जाती थी। उनके अधेरे सन्नाटे और भयावह हो जाते थे। कभी-कभी उन सुरगा म उसे चकाचौंध करने वाले कई अज्ञात अक्स दिखाई पडते थे, जिनका रहस्य पूरी तरह उसकी समझ म नही आ पाता था।

वह बस इतना ही जानता था कि वे अक्स उसके भीतर कमजोरी पैदा कर देते थे।

आज फिर हठात् उसके भीतर एक नयी सुरग बन गयी!

वह सुबह से ही टूटा-टूटा, बुझा-बुझा बैठा था। दफ्तर से उसने छुट्टी ले ली थी। क्योकि कल साहब का मूड काफी खराब था। मूड क्या खराब था—साहब को, उनके साहब ने किसी ठेके के अनुबध को लेकर डाट दिया था। डाटा भी इस बुरी तरह से कि साहब ने अपने को अपमानित महसूस किया था। जब साहब ने अपमान रूपी चाटे खा लिये, तब उन्होंने भी अपने मातहतो को फटकारो वाले चाटे मार दिए। विशेषत उसे बडी ही खोटी व सडाध भरी बातें सुननी पडी क्योकि वह साहब का सबोर्डिनेट था और उसके साहब उसकी अति ईमानदारी से बहुत ही नाखुश रहते थे।

वे अक्सर कहा करते थे, 'मिस्टर दास ! आप जैसा आदमी कभी उन्नति नहीं कर सकता। आप जरा भी हौसला नहीं रखते। इतनी कायरता अच्छी नहीं। यदि किसी का काम कर दो तो क्या हर्ज ?'

मगर वह नियमानुसार ही काम करता था।

और खुद साहब ?

एक सवाल उसके गाल पर तीखे प्रहार की तरह पड़ा। उसके शरीर में बिजली की तेज लहर सी दौड़ गयी। उसकी जबान पर कसैलापन तैर आया। उसे प्रतीत हुआ कि साहब की बड़ी बड़ी शराबी आंखें उसे घूरने लगी है। कितनी डरावनी आंखें हैं साहब की—एकदम अंगारों जैसी ! तब उन्हें देखकर दास के मन में एक तरह की वितृष्णा-सी जागने लगती।

साहब की एक गन्दी आदत और थी। वह हर समय नाक कुरेदते रहते थे। बातें करते-करते चौंककर अपनी अंगुलियां नाक में डाल लेते थे। कल भी ऐसा ही हुआ था और उसने भी यू ही नाक में अंगुली डाल ली थी। इस पर साहब बिगड़ पड़े और उस पर आरोप लगा दिया कि वह उनकी बेइज्जती करता है।

पर वह साहब की खीज व गुस्से का कारण जानता है। उसने ठेकेदार से रिश्वत नहीं ली थी। बस ठेकेदार नाराज हो गया, उसके कारण साहब फिर साहब के साहब। लेकिन वह यह भी जानता था कि यदि रिश्वतखोरी का भण्डाफोड़ हो जाता तो ये बड़े लोग तुरन्त उस काण्ड से अलग हो जाते। एक बार उसके साथी सतीश को इन्हीं के कारण जेल हो गयी थी। रिश्वत में मिले धन के हिस्सेदार तो सब होते हैं, पर जेल जाने का हिस्सेदार कोई नहीं होता। इसलिए वह सदा गलत काम से डरता था।

इन्हीं कारणों से उसने आज छुट्टी ली थी और एक आरामदायक, खामोश और खुशगवार दिन बिताने की सोची थी। उसने निश्चय किया कि आज वह पूरी तरह विश्राम की स्थिति में पड़ा रहेगा और दफ्तर घर की चिन्ताओं को बिल्कुल भूल जाएगा। यह सोचकर वह आराम से बिस्तर पर पड़ने लगा कि बीवी चाय लेकर आयी और तुनककर बोली, 'सुना आपने ?'

उसने चाय का प्याला लेकर कहा, 'देखो श्रीमतीजी, आज मैं एक शात और निश्चित दिन बिताना चाहता हू। भगवान के लिए मुझे घर-बाहर की कोइ ऐसी बात न कहो, जिससे मेरी मानसिक शांति भग हो जाए मेरे आराम मे खलल पडे। मैं कल से बहुत परेशान हू।'

उसकी पत्नी ने उसे गुस्से से देखा और फिर तल्ख स्वर मे बोली, 'आप तो एक शात दिन बिताना चाहते हैं और मैं दिन रात अशाति मे जीती रहू, यह मुझसे नही होगा। बर्दाश्त की भी एक हद होती है।'

'पर हुआ क्या ?' वह जरा झुझलाकर बोला।

'ऐसा हुआ है जिसे सुनकर आपके पावो तले जमीन खिसक जाएगी।' उसने आखें फाडकर कहा।

अब वह जरा बेचैन और परेशान हो गया। उसके ललाट पर सलवटें उभर आयी। उसके हृदय की धडकन बढ गयी। वह झुझलाकर बोला, 'आखिर बात क्या है, जरा बको तो सही!'

उसकी बीवी ने थूक निगला। फिर बोली, 'आपकी लाडली बेटी—गीतिमा शादी करने से इन्कार कर रही है।'

'क्या ?' उसकी आखें और फल आयी।

हा। उसने इस तरह अपने शरीर को झटका दिया, गोया वह उसकी बीवी नही कोई पडोसिन है जो बडी बेरुखी से उसे ओलमा देने आयी है।

'नही नही।' उसने बेचनी से कहा। उसके चेहरे पर अविश्वास का भाव था।

'नही नही क्या? आपकी लाडली कह रही है, 'मैं कोई गाय भैंस नही, जिस आप चाहे जिसके गले बाध दें। मैं इतनी निरीह और बेजुबान भी नहीं हू कि कुछ बोलू ही नही। मैं शादी करूगी तो अपने मनपसद लडके से ही।' बताइए आपकी दी हुई फ्रीडम का क्या नतीजा निकला? मैं तो आपसे पहले ही कहती थी कि आज की लडकिया पहले जैसी शर्मीली व शालीन नहीं होती हैं। थोडी सी लगाम ढीली करो कि वह सरपट भागी।

उसे अब भी विश्वास नही हो रहा था कि गीतिमा इस तरह शादी से साफ इन्कार कर सकती है। इसलिए जरा गम्भीर होकर उसने पूछा, 'यह

नही हो सकता। इतनी दब्बू लडकी इस तरह खुलेपन से जवाब कैसे दे सकती है ?'

'अपने खून की आवारगी पर किसे जल्दी से विश्वास होता है ? पर यह बात सौ फीसदी सही है।' उसने धीरे से पाव पटका, फिर आखें तरेरकर कहा, 'वह उस मिस्त्रीनुमा लडके से कतई शादी नही करेगी।'

'क्या मिस्त्री मे कोई खोट-कसर है ?' उसने आशका व्यक्त की।

'यह तो आप अपनी एम० ए० पास बेटी से ही पूछिए। उसन ताना मारा।

वह गम्भीर हो गया। उसके चेहरे पर गहरा आवेश उभर आया। वह कुछ क्षण खामोश खडा रहा, फिर मौजूदा स्थिति से पलायन करन के लिए बोला 'मैं स्वय उससे बात करूगा।'

'वह आपकी बात नही मानने वाली है। उसके सिर पर तो भूत सवार है।' उसकी पत्नी ने चिढकर कहा 'वह एम० ए० पास है न !'

उसकी पत्नी हुकारकर निकल गयी। वह फिर उदास हो गया। उसे अजीब-सी ठिठुरन महसूस हुई। उसकी इच्छा हुई कि वह लिहाफ मे मुह ढककर सो जाए।

बाहर घने कोहरे की तरह उसके मन मे भी कोहरा उभरने लगा था—थोडा गदला और धुधला धुधला। बाहर से ज्यादा उसके भीतर ठडापन था।

उसने सचमुच लिहाफ ओढ लिया। वह थोडा-सा झल्लाया, 'उसे ये घर वाले एक पल भी चन से क्या नही रहने देते ? वह जब कभी भी दफ्तर से छुट्टी लेता है, तब घर वाले एक साथ अपनी सारी समस्याए लेकर बैठ जाते हैं। फिर दफ्तर से ज्यादा वह घर मे परेशान हो जाता है। और उसके घर का एक एक सदस्य उसके भीतर सौ-सौ सुरगें बनाता चला जाता है। एक-एक बच्चा बडी निदयता से उसे अपनी जरूरता और फरमाइशो के चाकुओ से काचता रहता है। व इतना तनावपूण वातावरण पदा कर देते हैं कि उसे लगता है कि ये सदस्य उसके अपने ही खून म पदा हुए दरिन्दे हैं। उन्हे अपने बाप पर जरा भी दया नही आती है। कभी ये सोचते ही नही कि उनका बाप किस तरह इस घर के लिए कोल्हू का बैल

बन गया है।

उसे अपनी स्थिति और नियति पर दया आयी। वह अपने-आपको लिहाफ मे छिपाने लगा कि उसके वडे लडके का आक्रोश भरा स्वर सुनाई दिया, 'मुझे छह रुपये साठ पसे इसी वक्त चाहिए। मैं अपने दोस्तो के साथ सिनेमा देखने जाऊगा।'

उसकी बीवी रिरियाती-सी बोली, 'देख बडका, सत्ताईस-अट्ठाईस तारीख को मैं पैसे कहा से दू ?'

लडका झल्लाहट भरे स्वर मे बोला, 'मा, यदि मरे पापा अचानक बीमार पड जाए और उन्हे अस्पताल ले जाना पडे, तो तुम रुपयो का कहा से प्रबन्ध करोगी ?'

'बडका !' मा, चिल्लाई 'तुमम जरा भी दया-हया नही !

और वह कछुवे की तरह अपनी गदन अपन म समेटने लगा। पता नही वह अपने वडे बेटे से क्या डरता है ? उस देखते ही उसके भीतर बर्फीली घाटियो का-सा सन्नाटा फल जाता है और हाथ पाव फूल जाते है। एक आतक उसके खून मे विष की तरह दौडने लगता है। यदि उसका बडा लडका उस पर आक्रमण कर दे तो !

वह काप-सा गया। उसे अपने अग-अग क्षत विक्षत लगे।

फिर उसे कई बार गुस्सा भी आया—जोरदार गुस्सा। उसने अपनी आक्रामक मुद्रा भी बनायी, पर उसके सामने जाते ही वह पालतू कुत्ता बन जाता था। उसका आक्रोश, क्रोध और विरोध सब-के-सब शब्दहीन हो जाते थे। और वह तुरन्त सोचने लगता था कि उसका बेटा रूखी सूखी खाकर भी इतना मुसटडा कैसे हुआ जा रहा था ?

तभी उसे सरूप की बात याद आयी, 'यार दास, तुम्हारा बेटा दारू और मास खाता है जुआ खेलता है, उसकी सगत अच्छी नही। एक दिन वह तुम्हारा नाम जरूर रोशन करेगा।'

'कैसे ?'

'डाका डालकर। किसी की हत्या करके। चोरी करके। छुरेबाजी करके।' वह ऐसे बोला जसे कोई कविता सुना रहा हो।

तब से वह अपने बडके को हिंस्र आदमखोर समझने लगा।

सोचता सोचता वह चौंका, क्योंकि उसे रेजगारी गिरने की आहट आ रही थी। उसकी बीवी बुदबुदा रही थी। फिर उसे जूता की आहट सुनायी दी। उसे लगा कि वह बहुत आतंकित है। वह जोर से चीखना चाहता था, पर उसके भीतर बेआवाज चिल्लाहटें ध्वनित प्रतिध्वनित होती रहीं। वह पसीने से बुरी तरह भीग गया।

उसकी बीवी ने आकर, रोनी सूरत बनाकर कहा, 'य हमारे बच्चे हैं या दुश्मन?

उसने अपनी बीवी की ओर देखा। एक करुणा भरी दृष्टि! पनियायी आखें झुक गयीं। क्षण रेंगते रहे।

'तुम गूगे हो गए क्या?' वह चीखी।

वह थूक निगलकर कठिनता से बोला, 'मैं जानता हू कि हमारे चारो ओर इतना हिंस्र, विषाक्त और क्रूर वातावरण क्यो है। जब आदमी को सही स्थितिया और सही जीवन नही मिलता तब ऐसा ही होता है। हमारे सारे बच्चे सुविधाए न पाकर बिगडा हो गए हैं। पथ विमुख हो गए है।

तुम फिर दार्शनिक बन गए?' उसने उसे झिडका।

तो मैं क्या युद्ध लडू?' वह भी झल्लाया।

हा, हा, धमकिया देने वाले इन आवारा बच्चो से युद्ध लडो।' उसने ऐलान-सा किया।

लडूगा जरूर लडूगा!' वह कापता हुआ बोला। फिर वह दीनता से इधर उधर देखने लगा।

सहसा उसे लगा कि उसे अजीब-सी चीटिया काट रही हैं। उसके *शब्दो का खोखलापन बोल रहा है कि तुम नही लड सकते कापुरुष!*

मैं जानती हू, तुम इनका कुछ भी नही कर सकते। जिस तरह बिच्छू अपनी मा बिच्छुणी को धीरे धीरे खा जाते है, उसी तरह ये एक दिन मुझे खा जाएगे।' वह दुखी स्वर म बोलती बोलती भर आई।

वह अब पलायन करना चाहता था इन पलो से। प्रसग बदलकर बोला 'तुम्हारा स्वभाव बहुत गन्दा है। जब कभी भी मैं घर म रहता हू, तुम और तुम्हारे बच्चे मुझे परेशानियो से लाद देते है।'

मैं बच्चे बाहर स नही लायी हू! वह तडपकर बोली 'बच्चे हमारे

हैं—समझे।'

देखा गया, हमार बच्चे बाहर गए हैं। दो पल की शांति है। कुछ और बातें करो न!' वह याचना भरे स्वर मे बोला।

'कुछ और बातें? वह ऐसे तुनककर बोली जैसे गर्म तवे पर किसी ने पानी छिड़क दिया हो, इनसे परे और मुझे क्या सूझेगा? आप तो सुबह आठ बजे भाग जाते हैं और रात दस ग्यारह बजे लौटते हैं। दिन-भर मुझे घर के छोटे बड़े मोर्चों पर लड़ना पड़ता है। फिर सारे बच्चे ढीठ, जिद्दी और लड़ाकू हो रहे हैं।'

हा हा इन बच्चों मे कोई उम्मीद नही।' वह पश्चाताप भरे स्वर मे बोला, 'ये मुझे बरबाद कर डालेंगे ।

उसके सबसे छोटे दोनों बच्चे आ गये थे—सुरेश और सुधा। उन दोनों ने अपनी किताबो के भारी बस्ते को लकड़ियों की गठरी की तरह बड़ी बेदर्दी से फेंके और सगर्व घोषणा की, 'कल से स्कूल जाना बन्द!'

'क्या?'

'पापा हम इन फटीचर जूतों में स्कूल नही जा सकते। लोग हमें छेड़ते हैं। हमारी हँसी उड़ाते हैं।

बेटो! ' वह कोमल स्वर मे बोला, 'मैं साधारण क्लर्क हूँ। साढ़े सात सौ रुपया में हम कैसे हर रोज नये जूते पहन सकते हैं? इन्ही से काम चलाओ बेटे!'

'नही, पापा हमे नये जूते लाकर दो।' दोनो एक साथ ऐसे बोल रहे थे मानो सब पूर्वनियोजित हो।

'खामोश?' उसने डाटा।

दोनो सुन्न हो गए।

वह गुर्राकर बोला, 'क्या मैं तुम सबके लिए चोरियां करूं? जेल जाऊं? भागो यहां से!'

दोनो बच्चे सचमुच भाग गए।

मानो आ गयी थी। उसका विरोध नितान्त अहिंसात्मक था। वह खामोश रहकर विरोध करती थी। यदि उसके कपड़े फट होते तो वह फटे ही पड़े रहते थे। बालो मे तेल नही, तो न सही। चप्पल टूटी हुई है तो टूटी

हुई चलती रहती। एकदम दार्शनिक की तरह उखडी-उखडी, शात शात और हर दृष्टि से बेतरतीब थी वह।

वह तभी बोलती थी, जब कोई उससे सवाल करता था।

मोनी उसकी तीसरी सतान थी।

गगा ने आते ही पूछा, 'आज जरा लेट आई हो ?'

उसने शात-सयत स्वर मे कहा, 'हा, मा !

'क्यो ?'

'बस लेट हो गयी।'

'कोई कारण भी होगा ?' उसका स्वर जरा तीखा हुआ।

'कारण तो जरूर है। उसने मा की ओर एक उडती हुई नजर डालकर कहा, 'मेरी चप्पल टूट गयी थी। उसे ठीक कराने के लिए मेरे पास पसे नही थे इसलिए सार रास्ते घिसटती हुई आयी हू।'

मा उसकी परेशानी का ख्याल करके झल्ला पडी। फटे ढोल की तरह बोली *'तुम भी कमाल हो। रुपये-दो रुपये माग नही सकती ?'*

वह बडे इतमीनान से बैठ गई। अपनी फाइल को व्यर्थ ही देखती हुई बोली, 'जब कई बार घोषणा हो चुकी है कि पसे घर मे हैं ही नही, तो फिर मागू कसे ?'

गगा और परेशान होती हुई बोली, 'रुपये-दो रुपये तो होते ही हैं। तुम सब क्यो मुझे सताने मे लगे हुए हो !'

उसने अपना धय जरा भी नही खोया। वह रूखी मुस्कान के साथ बोली, 'यह भी अजीब स्थिति है। पैसा मागो तो उलाहना और न मागो तो उलाहना ! क्या तुम्हे मालूम है कि तुमने इस माह कितना रुपया दिया है ?'

'मुझे हिसाब किताब नही आता। गगा ने नाराजगी से कहा, 'तुम अपने बाप से महीना क्यो नही मागती ?

'मा ! वह बडे अपनेपन से बोली मैं न तुमसे पैसा मागूगी न पापा से। मैं जिस हाल मे हू, बस रहती रहूगी।

और वह बाथरूम की ओर चली गयी।

वह गुस्से मे बडबडाई तुम सब बच्चे नही, दरिन्दे हो ! खा जाओ

मुझे !'

तभी उसकी बडी लडकी गीतिमा आ गयी।

वह काफी निर्भीक लग रही थी।

गगा चुगलखार की तरह लपक्कर अपने पति के पास गयी। भृकुटिया चढाकर बोलना चाहती थी, पर पति की गम्भीरता देखकर जडवत हो गयी।

दास अपने आसपास और अपने परिवेश के बारे मे सोचते सोचते सन्त्रस्त हो गया था। उसे अपना एक एक पल दुखो से भग लगा। उसे महसूस हा रहा था कि वह जीवन के शव को ढा रहा है—शव भी कसा, सडा हुआ गलीज !

फिर दोस्तो के छोटे-बडे कर्ज !

कल ही मगलसिंह ने कहा था 'सुनो लेन देन की गैर जिम्मेदारी से दोस्ती टूट जाती है। मेरे रुपये लौटा दो वना मैं साहब से शिकायत कर दूगा।'

राज ने कहा था 'मैं मित्रता को बहुत बडा मानता हू, इसलिए न तो मित्र से उधार लेता हू और न देता हू।'

वह सोचता है, मित्रता की अजीब परिभाषाए हो गयी है।

'आप सो रहे हैं ?' उसन अपना गम्भीर मौन तोडा।

'नही, जाग रहा हू।' उसन नाटकीयता से कहा।

'फिर मैं आपको दिखाई नही देती ? वह झल्लायी।

'नही।' उसने स्वप्नवत कहा।

वह आश्चय मे डूब गयी। बोली, 'यह यह आप क्या कह रहे है ?'

'सच तो यह है गगा, कि अभी मुझे केवल अभाव और कज ही दिख रहे हैं।

'मगर !'

'ओह गगा ! मुझे लग रहा है कि अनगिनत जोकें मेरे शरीर से लिपट-लिपटकर मेरा खून पी रही हैं।'

'मुझे तो आप जोक लग रहे है !' उसने अपने पति पर सीधा आरोप लगाकर कहा, 'जब मैं इस घर मे आयी थी, तब मेरा शरीर क्या था ! गुलाबी ओढनी और मेरे चेहरे का गुलाबीपन एकमेक हो रहा था। मुझे

तुमने निचोड डाला।'

'या तुम सबने मुझे ? वह उबल पडा।

'बस रहने दो !' वह नफरत से बोली, 'लो, तुम्हारी लाडली आ गयी है।'

वह हताश होकर बडबडाया, मैंने आज छुट्टी लेकर अच्छा नहीं किया। वहा केवल एक अफसर से सिर खपाना पडता है और यहा ? काश ! मैं छुट्टी लेकर कही दूर जगल में पडा रहता।'

मैं कह रही हू कि तुम्हारी बेटी !

'उसे मेरे पास भेज दो।'

उसने मुह बिगाडकर अपने शरीर को विचित्र-सा झटका दिया और मच्छर की तरह भिनभिनाती हुई बाहर निकल गयी।

गीतिमा आयी। अत्यन्त सहज स्वर मे बोली, 'क्या बात है पापा ?

'बेटी ! मैंने सुना कि तुम उस मिस्त्री ?

'हा पापा ! मैं उस मकेनिक से शादी नहीं करूगी।' उसने तडाक से कहा।

उसे अपनी बेटी की स्पष्टता व साहस पर हैरानी हुई। उसे लगा कि वह पित द्रोह कर रही है।

मगर तेरे बाप की जुबान ?' उसने हताश स्वर मे कहा।

'जुबान बदली जा सकती है ।' गीतिमा तडाक से बोली।

यह यह ?'

पापा ! उस पुर्जों से लडने वाले के गले बाधने से तो अच्छा है कि आप मेरे गले मे फासी का फदा बाध दें। सदा का झझट ही खत्म हो जाएगा। यदि आप म हमारे लिए अच्छा वर ढूढने की क्षमता नही है तो हम पदा ही क्या किया !

इतनी हल्की और ओछी बात उसकी लडकी कहेगी 'यह उसने सोचा ही नही था। वह बौराकर उठा बेवकूफ ! उसकी इच्छा उसे तडातड चाटे मारने की हुई पर उसे लगा कि उसे लकवा मार गया है। वह काठ का बन गया है। क्रोध म उसके मुह से केवल 'तत-तत शब्द निकलकर रह गया।

मगर गीतिमा ने उसकी आखा म उतरत हुए खून को भाप लिया। वह तुनककर विद्रोह भरे स्वर मे बोली, रुक क्या गए ? मारिए मुझे इसके अलावा आप और कर भी क्या सकत हैं।'

वह पागल की तरह चिल्लाया, 'मैं कहता हू कि तुम चुप हो जाओ।'

गीतिमा आन्तरिक उद्वेग से कापन लगी। उसकी आखा म न जाने किसलिए गीलापन तर आया। उसन आले की पटरी पर रखे एक बूढ बौने पर नजर जमाकर कहा, आप अपनी परेशानी का खत्म करन के लिए मेरी शादी का ख्याल छोड दीजिए। मैं अपना रास्ता खुद बना लूगी। मैं हर एक के पल्ले किसी भी सूरत म बधना नही चाहूगी। यह तो मर लिए आत्महत्या के बराबर होगा। और वह धीर धीर कमरे से बाहर निकल गयी।

वह आवश म हाफ्ने लगा था। उसे लग रहा था कि वह असहाय होता जा रहा है। गले पर कोई अजीब-सा दबाव महसूस हुआ। वह जोर से चीखना चाहता था मगर केवल तडपकर रह गया।

फिर सोचन लगा वह कि उसकी छह सन्तानें है। छह की-छह उसके विरुद्ध मोर्चा जमाय हुए है। बडा लडका न पढता है, न कमाता है, बल्कि धमकी देकर पसा ले जाता है। छोटा कालेज म पढता है, चार पाच बार फेल हो चुका है। बडी लडकी शादी करना नही चाहती। क्लर्क की बेटी होकर आई० ए० एस० से विवाह करने के सपन देख रही है। चौथी लडकी एकदम मौन रहकर उसे काटती रहती है और दोनो छोटे लडके पैसे वाला की नकल करते हैं। उसकी वास्तविकता को कोई नही समझता। बीवी ? बीवी के नाम पर उसे !' वह कराह-सा उठा।

वह सोचता है—

एक दिन वह मर जाएगा। इस परिवार के लिए अपना एक एक लमहा लुटाने वाले इस मामूली क्लर्क को क्या मिल रहा है ? केवल एक अन्तहीन यन्त्रणाओ का जीवन ही तो ? एक घायल साप की तरह रेंग रेंग-कर तय करती हुई यात्रा ! इतने बन्धनो व बच्चो का पिता होने के बावजूद एक लावारिसपन का अहसास ! हजारो सच्चाइयो मे कुचल जाने के बाद भी झूठे लबादो के सम्मोहो का भ्रम !

घर मे वह !

वह सोचता रहा और अपने को लिहाफ मे ढकता रहा। अपने से निरंतर लडते झगडते उसे न चाहते हुए भी नीद आ गयी।

उसने एक सपना देखा। वह दफ्तर से सदा की तरह आया है। घर मे बच्चो ने कोहराम मचा रखा है। बच्चे अपनी मा को सता रहे हैं। उसकी बीवी सारे दायित्व व कतव्या के लिए उमे जिम्मेदार ठहराती है। सारे बच्चे उसका घेराव कर लेते हैं, उसके विरुद्ध नारेबाजी करते हैं। हाय-हाय और मुर्दाबाद! और वह? खिडकी म से एक सलाख को तोडकर सभी बच्चा को लहूलुहान करत आत स्वर म चीखता है—नालायका! तुम मेरा घराव करते हो तो जाआ पर इस सत्ता व्यवस्था का घेराव क्या नही करते? इन नेताआ का घराव क्या नही करते जिन्होने तुम्हे जिन्दगी के नाम पर सडाध भरी मौत दी है? जाआ उनस लडो अरे मुझे आदमखोर बनकर क्यो खा रहे हो?'

उसकी आखें खुल गयी। उसका शरीर पसीना-पसीना था। उसकी बची-खुची खडित आस्था भी भुरभुराने लगी।

सहसा उसके भीतर अपने बच्चा को दखने की एक ललक जागी। कितना अशुभ और भयानक सपना था। उसने अपनी बीवी का पुकारना चाहा कि बीवी प्रेतात्मा की तरह हाजिर हो गई। वह गिद्ध की तरह झपटती हुई बोली 'लो, आपके बच्चो ने नया आन्दोलन शुरू कर दिया है। व खाना नही खा रहे हैं।'

वह सवाल करना चाहता था पर उसकी बीवी ने उसे यह अवसर नही दिया, वे कह रहे है हम बिना मसाले की दाल से रूखी रोटी नही खा सकत ऐसा खाना तो कुत्ते भी नही खात हम पदा किया है ता हम रोटी दो, कपडा दा सुविधाए दा।'

वह अचानक स्वय दरिन्दा बनकर खिडकी की सलाखा का उखाडना चाहता था पर वह एसा नही कर सका। सलाख से लडता-लडता वह थक गया पर वह नही उखडी। उसकी बीवी न जाने क्या डरकर बाहर निकल गयी! और वह झाकता हुआ असहाय-सा भगवान की तस्वीर की ओर देखने लगा—एकदम जडवत।

□

जनक की पीडा

O

वह सत्तर वर्ष पार कर चुका था। ढांचा ऐसा जैसे लकडी का आदमी हो। एक तंग और सीलन भरे कमरे मे वह प्राय अकेला लेटा रहता था। कमरे म पानी की एक मटकी, मैली और काई जमी हुई, एक पीतल का मुचा हुआ लोटा, दो चार पुराने कलेण्डर, दो धारीदार पायजामे और एक ढीली कमीज।

साथ होने पर वह कमरे से बाहर निकलता था। पहले हनुमान मदिर म दर्शन करता और फिर अपनी बेटी सीता के घर जाकर पालतू कुत्ते की तरह बेस्वाद सब्जी के साथ चार रोटियां खाकर लौट आता था। सीता उसे गिनती की केवल चार रोटियां देती थी। वह आधा भूखा ही उठ जाता और तीव्र वेदनासिक्त दृष्टि से सीता की ओर देखता। उस दृष्टि को सीता सह नही सकती थी। उस चुभन से बचने के लिए सीता अक्सर कह देती 'जाइए, सो जाइए। बुढापे म आराम बहुत जरूरी होता है। यदि टहलने की इच्छा है तो तीना बच्चा को भी साथ ले जाइए। अरे चुनू, मुनू टीनू ! जाओ, नानाजी के साथ टहल आओ।

नाना जनक सदा की तरह आज भी चुप रहा। बच्चा ने आकर उसका घेराव कर लिया और पार्क मे चलने का आग्रह करने लगे। जनक को उनकी बात माननी ही पडी। वे पार्क की ओर चल दिए।

जनक सदा अपने लोगो से बचता था क्योकि लोग उसे देखकर 'अपार करुणा' से भर आते थे और वे खोखली सहानुभूति के बडे-बडे शब्दो से उसे

लाद देत थे। इसलिए वह गदे नाले की बदबू झेलता हुआ छोटे रास्ते म ही पाक की ओर आता था।

उसका पायजामा व हाफ कमीज प्राय मैली ही रहती थी। दाढी महीने म एक बार बनाता था जब सीता उसे पसे देती थी। उसकी चप्पल जनानिया थी, सीता की पुरानी चप्पल। लगातार चप्पल पहनत-पहनत उसकी एडिया फट गयी थी। कभी-कभी कोई ककर उन तरेडो म चभ जाता ता वह कराह उठता था।

पाक आ गया ता जनक दरवाजे के बायी ओर एक कुर्सी पर बठ गया। तीनो बच्चे यहा बठने का विरोध करने लगे। जनक ने कहा, तुम जाओ, खेलो। मै थक गया हू। बूढा हू न।'

टीनू ने हुमक्कर कहा—'नानाजी ! नानाजी !'

जनक सवाल भरी निगाह से टीनू का देखा।

टीनू ने फिर कहा, नानाजी ! आज पापा मम्मी से कह रह थे कि यह बुड्ढा कब मरेगा ?'

जनक विषाद से घिर गया। पल भर मौन रहकर उसने पूछा 'फिर तुम्हारी मम्मी ने क्या जवाब दिया ?'

टीनू ने अपनी मम्मी की नकल बनाते हुए अजीब तरह से आखें मुह और मुद्रा को बनाकर बताया, 'मम्मी ने कहा—भग वा न जाने !

एक दिन जनक ने स्वय भी किवाडो के पीछे खडे होकर सुना था।

'यह बुढा नही मरेगा। तुम कहो तो ?' उसके दामाद की आखो मे एक हिंस्र सकेत था।

छि क्या तुम अपने बाप के साथ भी एसा ही व्यवहार करते ? उसकी बेटी सीता झल्लायी।

उसके दामाद ने कुटिल व्यक्ति की तरह कहा, 'यह तुम्हारा असली बाप थाडे ही है।'

और जनक को लगा था कि उसके सूखे हुए शरीर मे म किसी ने रहा-सहा खून भी निचाड लिया है। उसने अपने रोम राम मे चीटिया के काटने की दश पीडा का अहसास किया।

यह सब सुनकर वह उस दिन घर मे नही घुसा, बल्कि सडक पर आ गया था—आहिस्ता आहिस्ता और कुछ कुछ कराहते हुए। जेब मे से बुझी हुई बीडी के टुकडे को निकाल उसे जलाया। दो-तीन लम्बे कश लिये।

तभी उसे अर्थी लाने वाले दिखाई दिए। वे 'राम नाम सत्य है' बोल रहे थे। मुर्दा कोई बुड्ढा था। मुर्दे को देखते-देखते उसकी आखें भर आयी थी—काश, मैं भी मर जाता ?

मौत की इच्छा ने यादा को उभार दिया था। सारी बातें टुकडे-टुकडे होकर मन मे घुमडने लगी। वह सोचने लगा—हा, मैं सीता का असली बाप नही हू। केवल उसका भरण-पोषण करने वाला हू।

यह कोई तीस साल पहले की बात थी। जनक तब नगर न्यास मे क्लर्क था अकेला था। उसने तीन-तीन शादिया की, लेकिन तीनो ही सुख की झलक दिखाकर चल बसी तो उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसके भाग्य म पत्नी का सुख नही लिखा है। मित्रो के लाख समझाने-बुझाने पर भी उसने चौथी शादी नही की। वसे भी वह अकेला था। घर परिवार म उसे अपना कहने वाला कोई नही था। अकेलेपन की यह पीडा उसे बहुत काटती थी।

एक दिन शाम बहुत धुधली थी। आकाश म बादल छाये हुए थ। जनक अपने घर की ओर लपक रहा था। उसने गदे नाले का रास्ता पकडा। यदि वर्षा आ गयी तो घर पहुचने मे मुश्किल होगी। एकाएक उसके पाव किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनकर ठिठक गए। हल्के रोमाच से अभिभूत होकर उसने इधर उधर देखा। फिर वह उस ओर बढा। वह हैरान हो गया। देखा कि एक फूल-सी मासूम बच्ची चादर मे लिपटी हुई रो रही है।

हे हनुमान बाबा !' जनक के मुख से हल्की चीख निकली। एक रहस्य-मयी परछायी उसकी आखो म झलकी और उसने शिव शिव का उच्चारण करके उस बच्ची का गोद मे उठा लिया।

इसके उपरान्त वह एक भीषण सघर्ष म उलझ गया। करुणा भय और रोमाच उसे बेचैन करते रहे। ऊहापोह मे डूबता-उतराता वह जसे ही अपने मोहल्ले मे पहुचा, लोगो न तरह-तरह की बातें और सुझावो स उसका

परेशान करना शुरू कर दिया। एक ने कहा, 'पहले इसकी पुलिस का रिपोट करनी चाहिए, वरना कानून का बेदद शिकजा तुम्हे जकड सकता है।'

जनक भयभीत हो गया। वह थान गया। थानेदार के हजारा तीख सवाला से वह त्रस्त हो गया। आखिर उमने थानेदार को अपन जीवन की घटनाआ दुघटनाआ का पूरा ब्यौरा बताकर उस बच्ची का गोद लन की इच्छा जाहिर कर दी।

जनक को वह बच्ची चद दिना म मिल गयी। उसक मिलते ही मदन कहा जनक न राजा जनक की तरह सीता बेटी को पाया है। वह सचमुच जनक है।

और उस बच्ची का नाम स्वत ही सीता पड गया। जनक न काफी सघप कर सीता को पाला। वह पुरप से म्त्री बन गया। सीता को लोरिया सुनात-सुनात वह स्वय को भूल जाता था। नौकरी करन के वक्त के अलावा वह हर घडी उसके पास रहता। सीता को अपनी सगी बेटी का प्यार-दुलार उसने दिया था।

वह लोगा से कहा करता था 'मेरी बेटी सीता मेरी आखो के विस्तृत लोक मे केवल अपनी मा को ढूढती है। वह मुझम अपनी मा को देखती है। मैं इसे कभी मा का अभाव नही होने दूगा।'

सीता पढत पढते जब कालेज म भर्ती हुई, तब जनक अपने का बूढा समझने लगा। एकदम मुर्दा मुर्दा और निबल। उस लगा कि सीता जवान हो गयी है। फिर धीरे धीरे वह सीता की फरमाइशा को भी पूरा करन म अपन को असमथ पाने लगा। तब जनक को लगता था कि सीता के व्यवहार म रूखापन आ गया है और बोली मे कडुवापन। इसलिए उसने एक पाट-टाइम नौकरी भी कर ली। सीता की खुशिया के लिए वह कोल्हू का बल बन गया।

एक दिन उससे रघुनाथ ने पूछा 'क्या तुम राजा जनक की तरह इसका स्वयवर करोगे ?

वह उबल पडा। रघुनाथ को घणा से देखता हुआ गुर्राया मेरी बेटी बहुत सीधी-सादी है। वह वही करेगी, जो मैं चाहूगा। बस उसे बी० ए०

होने दो मैं उसकी बडी घूमधाम से शादी करूगा।'

और उसने सचमुच सीता की बडी धूमधाम से शादी की। शादी के चद माह पहले वह रिटायर हो गया था। उसको जितना रुपया मिला उसने वह सीता के विवाह म लगा दिया। उसे लगा कि दायित्व का प्रेत उसके कधे से उतर गया है। वह गगा नहा लिया है। अब वह सुख से रहेगा।

मगर दो साल मे ही जनक का सपना टूट गया। जनक को पेंशन मिलती थी दो सौ रुपये। उसम से सीता तीन चौथाई रुपये अपने अभावो का रोना रोकर मार लेती थी। फिर अचानक उसके लिए एक अलग कमरे की व्यवस्था कर दी गयी। जनक को लगा कि किसी कसाई न उसके सीन मे छुरा भोक दिया है।

'म अकेला नही रह सकता। मैं बूढा हो गया हू मुझे जो बहलाने के लिए यही रहने दो।' उसने तडपकर विरोध किया।

सीता ने झुझलाकर कहा था, आप समझत क्या नही कि तीन-तीन बच्चो के साथ अब इस घर मे गुजारा सभव नही है। आप एक जिम्मेवार, त्यागी और श्रेष्ठ बाप की भूमिका निभाइए।

और जनक को अनिच्छा स अपना ही घर छोडना पडा समय उसे ठोकरें मारता रहा। वह अपन कष्ट किसे सुनाए ? वह अपने कष्ट स्वय ही दोहरा लेता था। फिर रो पडता था।

कई बार वह कोशिश करता अपने को सभालने की, लेकिन उसके नाती-नातिन अपने मा बाप की बातें जनक को बताकर एक गहरी हताशा से उसे दबा देन थे।

जनक के विचारो को भग किया टीन्नू ने। वह नजदीक आती हुई बोली, 'नानाजी ! एक बात बताइए।'

उसने अपनी गीली आखो को अपनी खुरदरी हथेलियो स पोछ बुझे हुए स्वर मे कहा, 'पूछो बेटा।

'पापा बार-बार आपके मरने के बारे मे क्या पूछते है ? यह मरना क्या होता है ?'

जनक ने टीनू को अपनी बाहो मे ले रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा, "टीनू ! मरना एक छुटकारा है। यदि मैं मर जाऊ तो सभी कष्टो,

घृणाओ व दुखो से मुक्ति पा जाऊ। बहुत ही सुखी हो जाऊ।'

टीनू खुशी से तालियां पीटने लगी। उसका भोला चेहरा तेज रोशनिया से भर गया। वह ताली बजाकर बोली, 'तभी पापा आपके मरने की बात कहते हैं आप फिर मर क्यों नहीं जाते?'

उसका रोम रोम तड़प उठा। उसे स्वार्थों की कीच म लिपटे सम्बन्धो का फनाव नजर आया। वह चीखना चाहता था, लेकिन हिम्मत नहीं हुई। उसने गहरी उदासी से कहा, 'टीनू! मनुष्य मर नहीं सकता। मैं स्वय मर नहीं सकता। ईश्वर ही मुझे मार सकता है।'

टीनू अबोध उत्साह स बोली, फिर अपन हनुमान मदिर चलत हैं—भगवान स प्राथना करत हैं। मैं कहूगी—हे हनुमान बाबा मेरे नानाजी को मार दे। मैं पाच पैसा का प्रसाद चढाऊगी।'

जनक अथाह पीड़ा से घिर गया। नितात मौन रहा वह। सन्नाटा चीख चीखकर कह रहा है मरना सहज नहीं मनुष्य मृत्यु से डरता है मरी नन्ही गुड़िया मुझे मरने स डर लगता है एक मर्दा जिंदगी का मोह मुझसे बधा है। मैं कायर हू डरपोक हू।

पर टीनू सन्नाटे की भाषा नहीं समझती थी। जब वह ज्यादा हठ करने लगी तो वह धीरे धीरे आसू बहाने लगा।

बाग म पतझड के पत्ते गिरकर एक पेड को नगा कर रहे थे।

☐

8929

पेंशनयाफ्ता



वह सदा उस सुबह को देखता है, जिसे पिछले साठ बरस से देखता आया है। एक म्लान और बोदी-बोदी-सी राख के रंग की सुबह।

उसे आजकल सूर्य भी बासी-बासी लगता है। शायद वह भी मेरी तरह बूढा हो गया है। वह ऐसा भी सोचता है। पर नहाने के बाद वह उसे अर्घ्य जरूर चढाया करता है।

उसे रात का कालापन भी कम गहरा लगता है और दिन का उजाला भी उसे मंदा मंदा।

वह इन सभी बातों पर विचार करने के बाद सोचता है, 'शायद यह मेरी दृष्टि का दोष है। यह भी सम्भव है कि मैं सठिया गया हूँ और मुझमें सही ढंग से सोचने की शक्ति का ह्रास हो गया है। परन्तु यह सही है कि मुझे हर चीज पहले जैसी नहीं लगती।

वह झनझना के उठ जाता है। उसकी चमडी उसके कंकाल से चिपकी-चिपकी-सी लगती है। उसका चेहरा गालों की हड्डियों के उभरने से डरावना लगने लगा है। झुर्रियां हलकी दरार-सी हो गई हैं। आँखें धंस गयी हैं और उन पर मोटे कांच का गोल-गोल चश्मा ऐसा लगता है जैसे कोल्हू में चलते हुए बैल की आंखों का चश्मा।

वह सुबह उठकर घर के काम में जुट जाता है, क्योंकि उसका एक बेटा शिक्षक है और दूसरा ओवरसियर। संतान उसकी केवल दो ही हैं। दोनों बेटों की शादियां हो चुकी हैं। दोनों बहुएं अच्छे घराने की हैं इसलिए

उनमे नाज नखरे और ठसके भरपूर हैं। काफी धूप चढे तक वे विस्तरा की चद्दरों मे सलवटें डालती रहती हैं। उसके दो पोते और दो पोतियां हैं जिन्हे देखकर वह दादा होने का एहसास करता है और कुछ गर्वित भी होता है। अक्सर वह दूसरो को दप से बताया करता है कि वह दादा है। इससे उसको सुख की अनुभूति भी होती है।

वह उठकर अपनी पत्नी के कामा म मदद करता है। मसलन आख खुलते ही उसकी कमजोर पत्नी की निगाह झाड़ू पर जाती है तो वह उसका इकट्ठा किया हुआ कचरा उठाकर वाहर फेंकता है। कभी कभी उसकी बीवी दमे के कारण हाफने लगती है तो वह स्वय करुणाभिभूत हाकर झाड़ू छीन लेता है और घर साफ करने लगता है।

तब उसकी बीवी आक्रोश से भर जाती है और उसके भीतर भी लडाई होने लगती है। *आखिर इनकी बीवियां झाड़ू क्या नही* बुहारतीं। यदि इतनी रईस हैं तो एक नौकरानी रख लें।

पर वे विचार कभी शब्द नही बनते हैं। वे दाना अपने कलजुगिया बेटा व बहुआ को जानते हैं।

फिर उसकी बीवी पोछा मारती है तो वह लपककर दूध लेने चला जाता है। उसके बडे बेटे का आदेश है कि वह दूध सामने दुहाकर ही लाया करें। आजकल गाय वाला मे धम नही रहा। पानी मिलाते ही हैं। और वह उस धम शब्द को अपने बेटो के प्रसग मे सोचने लगता है। फिर वह बुदबुदाता है—धम भी घिस गया है।

सर्दी हो या गर्मी दूध उसे ही लाना पडता है। अलबत्ता ठड के मौसम म उसे गठिया सताने लगती है और कभी-कभी हाफणी भी चढ जाती है। पर उसके दोनो बेटे बडी निदयता से इन वाता से अनजान रहते हैं कि उनके वाप को तकलीफ है।

इसके बाद वह अजनबी-सा बठक के एक कोने मे बैठ जाता है। अकेला और चुपचाप। उसकी बीवी उसके सामने चाय रख जाती है। दोना एक पल के लिए एक दूसरे को देखते है। वह चाय पीने लगता है और उसकी बीवी चली जाती है।

तब वह मार्मिक यत्रणाओ से घिर जाता है, क्योकि उसके स्मतिलोक

मे उसका पडोसी व हम-उम्र साथी उभर आता है जो अपने परिवार के बीच बठकर ठहाका के साथ चाय पीता है।

जब उसके दोनो बेटे अपनी बीवियो के साथ हसी ठिठोली करत हुए चाय पीत हैं और उनकी बीविया मालिका की तरह उसकी बीवी पर हुक्म चलाती हैं तो वह गुस्से म धुआफुआ हो जाता है। उसम एक विद्रोह जम लेता है। तनाव आता है। नसें खिच जाती हैं, पर वह अशक्त निरीह इसान की तरह अदृश्य जजीरो मे बधा उसी कान की दीवारा स चिपका हुआ सुलगता रहता है।

तब वह सोचता रहता है कि आदमी को नौकरी करत हुए मर जाना चाहिए या रिटायरमट के तुरत बाद अपनी प्राप्त की हुई दौलत से खूब धूमधाम से जश्न मनाना चाहिए। बाद मे सगर्व घोषणा करके पोटेशियम सायनाइड खाकर एक सुखदायक व शानदार मृत्यु को अपना लेना चाहिए। वह अपने मरने के इरादे पर कई क्षणा तक कायम रहता है और फिर यत्र-चालित-सा अपन रूटीन म खो जाता है।

सहसा उसका ध्यान भग हो जाता है।

कोई आवाज लगा रहा है, 'अम्मा ! जरा ऊपर आना। आज चाय मे चीनी कैसे डाली। साथ मे चीनी और चम्मच भी लाना।'

वह आवाज को पहचान लेता है। यह बडी बहू की तीखी आवाज है।

उसकी बीवी जवाब दती है, 'मैं चाय पी रही हू।'

बडा बेटा तत्क्षण गजता है, चाय बाद मे पी लेना, ठडी हो जाएगी तो मुह भी नही जलेगा। पहले हम चीनी दे जा।' नादिरशाही हुक्म।

उसे फिर गुस्सा आता है। बगावत की आग उसके भीतर भडकती है। चीखता है तुम मरे बाप नही हो और न तेरी बहू बादशाह की बेटी जो नीचे आकर चीनी भी नही ला सकती।' पर उस लगता है कि किही प्रेतात्मा के अदश्य हाथा ने उसका गला दबा दिया है। उसक मुह स सिफ घू घू की आवाज निकल रही है।

उसन अपने आपको देखा। वह सूखे पत्ते की तरह काप रहा है। आगन का सन्नाटा और गहरा हो गया है। उस गहरे सन्नाट मे उसकी पत्नी के पावा की आहट साफ-साफ सुनाई पडती है। उसके मस्तिष्क मे कुछ देर

तक हथौड़े-से चलते हैं।

फिर वह सोचता है कि यदि उसने पेंशन ली होती तो ज्यादा अच्छा रहता। कम से-कम वह एक एक पसे के लिए मोहताज तो नही होता? आखिरी सास तक कुछ न कुछ मिलता रहता।

'मैंने ग्रेच्युटी और प्राविडेंट फड के रुपये से यह मकान बनाकर अच्छा काम नही किया। अपने हाथ स्वय मैंने काट लिय। अपने आप को जानबूझकर नि सहाय और अपग बना लिया।' वह दुबारा व्याख्या करता है, 'यह मिट्टी का मकान अब उन दोनो पति-पत्नी के लिए क्या काम आ रहा है।' वह अपनी उम्र भर की कमाई से बनाये हुए मकान के प्रति घृणा से भर जाता है दुष्कामना करता है कि यह मकान ध्वस्त हो जाए, ताकि इन बेरहम बच्चा के तो काम न आए।

वह अपने आप पर झुझलाता है कि वह इतना कमजोर है कि अपनी बीवी को डाट भी नही सकता। वही तो इस मकान को बेचने मे दीवार बन जाती है वर्ना ?

उसकी चाय खत्म हो जाती है। मारे उत्तेजना के उसे दुबारा चाय पीने की तलब होती है, पर वह जानता है कि इससे उसकी बीवी को ही कष्ट होगा और वह चाय पीने की इच्छा को मार लेता है।

वह बैठा रहता है। मुर्दा क्षणो से घिरा घिरा।

उसकी बीवी उसका ध्यान भग करती है। वह धीमे धीमे कह रही है 'छोटी बहू नहाने जा रही है, इसलिए आप टोनी' की टट्टी साफ कर दीजिए।'

उसका मन फिर बगावत से भर जाता है। एक घिन-सी आती है पर वह निश्चल-सा बैठा रहता है। उसकी बीवी उसकी ओर याचना से भरी नजर स देखती है। वह पिघलने लगता है। उसकी करुणा मर्माहत होती है। वह जाकर देखता है—टोनी की निचली टागें बहुत ही गदी हो रही हैं। गदगी बुरी तरह पसर गयी है। वसे भी वह सदा अपनी बहुओ की व्यस्तता और अनुपस्थिति मे बच्चों को नहलाने से लेकर उनकी गदगी साफ करने का काम करता है, पर आज उसका मन एक नकारात्मक प्रवृत्ति से भर जाता है। वह सोचता है, माना कि मैं रिटायड हू, फालतू हू, पर मैंने भी तो

साउम्र इन बेटो को पढाया लिखाया है। दोपाय से चौपाया बनाया है। सारी सुख-सुविधाए अपना पेट काट-काट कर दो हैं, ये लोग मरी बीवी के साथ मा-बाप जैसा सम्मानजनक बर्ताव भी नही कर सकते ? अपना गुलाम समझते हैं। क्या हमारी स्थिति गली के उन कुत्तो से अच्छी है जो रोटी के टुकडा के लिए पूछ हिलाते रहते हैं ? आह ! य कसे सम्बन्ध हैं ? राम दशरथ की आज्ञा पर वनवास चले गये थे। वे सम्बन्ध कहा गये ? तब उसे लगता है कि सम्बन्धो पर भी काई की परतें जम गयी हैं।

उसकी पत्नी उसके ध्यान को पुन भग करती है, 'आप पत्थर की मूरत बने हुए क्या सोच रहे हैं ? जल्दी स सभालिए न टोनी को, वरना सारा आगन खराब हो जाएगा।'

वह भीतर-ही भीतर कसमसाता है।

उसका छोटा बेटा उसकी ओर बिना देखे ही समीप आता है। वह तनिक झुझलाकर कहता है, 'आप टोनी को सभालिए न, अम्मा को खाना बनाना है। यदि वह वक्त पर खाना नही बनाएगी तो मुझे दफ्तर जाने मे देर हो जाएगी।'

दूसरे ही पल वह फिर कहता है 'पिताजी ! आज आप बच्चा को पार्क मे घुमा लाइएगा। वहा काई प्रदशनी है। फूला की प्रदशनी।'

पता नही क्यो, आज वह अपने मौजूदा अस्तित्व से बिल्कुल असतुष्ट हो जाता है। उसे लगता है कि लगातार पाच बरसा से वे दोना मिया बीवी नौकर मे बदतर बनते जा रहे हैं। दिन प्रतिदिन उन पर कामा का बोझ चढता जा रहा है। वह भीतर-ही भीतर सुगबुगाता है, 'आखिर हम इनके नौकर नही हैं।'

वह जोर से चिल्लाकर कहता है 'मैं तुम सालो का नौकर नही हू। मैं तुम्हारा बाप हू। मैं इस घर का मालिक हू।' परन्तु वह महसूस करता है कि उसका मुह अब भी चुप है। वह पसीने से तर-बतर है।

वह फिर आक्रोश मे अन्दर-ही अन्दर तिलमिलाता है, 'मैं सन्यासाश्रम ग्रहण कर लूगा। आह ! यह सरकार इन बूढे-बुढियाओ के लिए कुछ ऐसा क्या नहीं करती जिसमे वे अपनी अस्मिता व गरिमा के साथ जी सकें !'

वह खडा हो जाता है। उसके गले मे काटे ही-काटे उभर आते हैं।

उसकी आखो मे चिनगारिया और भीगापन साथ-साथ पैदा होता है।

वह धम धम पाव पटकता हुआ घर से बाहर निकल जाता है।

उसकी पत्नी नल पर चली जाती है।

उसका बेटा ताव मे आता है। कुछ अप्रिय उगलन को आतुर होता है, पर शात हो जाता है। सोचता है, आजकल नौकर बहुत महगे और बईमान होते हैं।

उसका बेटा नाक-भौं सिकोडकर कुर्सी पर बठकर दाढी बनाने लगता है। वह फिर सोचता है यह बुडढा आजकल सठिया रहा है। आराम से रोटिया मिलते ही इसका दिमाग खराब होने लगा है। पर बेगाने व अनजाने काम करने वाला से तो ये अच्छे ।

खच् !

ब्लेड बेटे के गाल पर चुभता है। खून की एक बूद उसके गाल पर उभर कर पसर जाती है।





समाज का नेपथ्य

'भरू काका !' मैंने रोष भरे स्वर मे आवाज दी।

'क्या है?'

यह बात अच्छी नही है। तुम्हारी नाली का पानी मेरे घर के आगे कमे आ गया? तुमने नाली का रुख बदल दिया?'

'तो क्या मैं गन्दा पानी अपने घर के आगे जमा कर लू? पानी तो ऐस ही वहेगा।'

मरे मन म आग-सी लग गयी। झट से कहा, 'कभी ऐसी बाता से माथे फूट जाएगे। मैं इस नाली को कतई सहन नही कर सकता।'

'आ फोड डाल सिर, मन मे क्या रखता है? वह भडक उठा। उसकी आखा म एक चुनौती थी।

भरू घर से बाहर निकलकर जोर जोर स चीखन लगा 'लो, यह मुय मार रहा है, मेरा सिर फोड रहा है। गरीब का कोई रखवाला नही है।

मैं भी तश म आ गया। चोरी और सीनाजोरी! कठोर स्वर म बोला, देख काका, मैं इसे सहन नही कर सकता।' मरा इतना कहना था कि भैंरू फिर जार-जोर से चीखने लगा, 'लो, यह मुझे मार रहा है मरा सिर फोड रहा है। गरीब का कोई रखवाला नही है। मुय अकेले का कौन हिमायती है यहा?

लोग एकत्र हो गए। पूछने ताछने लगे, 'क्या बात है?' पर भैंरू तो रुक बिना बस चिल्लाता ही जा रहा था। अडोसिया-पडोसियो ने भी बहुत समझाया। यदि एक व्यक्ति आकर यह न कहता, 'बेचारा हरिया मर गया है! तो भैंरू शायद चुप ही नही होता।

हरिया के मरने का समाचार सुनकर भरू अन्दर ही-अन्दर खुश होकर बोला, हरिया, कौन-सा हरिया मर गया? सेठ सोहनलाल का जवान बेटा? अरे! उस चोट्टे को यह दण्ड मिलना ही चाहिए था। चोट्टे ने गरीबा से बहुत ही रुपये ठगे हैं—दम रुपय सकडा ब्याज लेता है मैं उसे पहले ही कह आया था कि तेरा पूत मरेगा, क्योकि वह मेरे दो रुपय जीवित मक्खी की तरह निगल गया था। अच्छा हुआ, क्या भाइयो, हैं न मेरे बत्तीस दात?

लोगो को उससे घणा होने लगी। मुझे भी बहुत पीडा हुई। मैंने उसे फटकारा 'काका तू बिना हृदय का मानुस है। अरे, तू भी कभी मरेगा ?' फिर, मैंने सोचकर कहा, 'तू यह सारी धन माया किसके वास्ते जोड रहा है ? अरे ! अब तो कुछ दया धरम कर, बहुत रुपये है तेरे पास। अच्छे काम कर । लोगो को मत सता। मत दु ख द। माग मागकर जो पसा इकट्ठा कर रहा है, उसे खाएगा कौन ? जिदगी मे किसी को तो सुख द। किसी को तो अपना बना। बता, क्या जाएगा तेरे साथ ? क्यो हम सबको दु ख देता है ?

भैरू सिर पकडकर बठ गया। मैंने उसकी खुरदुरी आकृति पर पहली बार कोमलता दखी। पहली बार उसकी आखो म करुणा तिरती नजर आयी।

भीड छट गयी। वह टूटा सा उठा। मुझसे बोला, आ, मर साथ चल।'

मुझे पकडकर वह अपने घर के अदर ले गया। आगन। आगन क बाद साल । उसके बाद एक और कोठरी। उसने लालटेन जलाकर रोशनी की। कितनी माया बिखरी पडी थी वहा ! एक पाटे के ऊपर तीमणिया, कोठलियो मीर-पीढियो बोरियो, तिडडा और परो के कई गहन। इन गहनो के बीच एक चमचमाता हुआ लहगा, ओढनी और कोट। जस विवाह की तयारी की हुई हो।

यह क्या है ? मैं आश्चय से बोला।

भरू जलता भुनता बोला, 'इन सब चीजो को इस तहखाने म दबाकर मैं मर जाऊगा और साप बनकर पहरा लगाऊगा।'

पर क्या ?'

तू कहता है न कि समाज, धरम दया ? पर मैं तुझसे पूछता हू कि मेरे ऊपर किस माई के लाल ने दया की है ? तुम्हारे लोगो और समाज ने मुझे बिना दूल्हा बने हुए ही कुवारा रख दिया । चोर मैं नही मरा बाप था, फिर उसकी सजा मुझे क्या ? वह भर्राए स्वर में आखें नम करके बोला मैं दूल्हा बन विवाह करने जाने वाला था, उसी समय इन अडोसिया-पडोसिया ने सत्यवादी हरिश्चन्द्र बनकर मरा विवाह रुकवा दिया। मेरी

इतनी बदनामी की कि फिर मेरा विवाह नही हुआ। मेरी मा तडपती-तडपती मर गयी। बाप तो अपना काला मुह और नीले पैर लेकर इस शहर से जो गया, सो बेचारा वापस नही आया। पता नही, उसने कितनी भयानक मौत पायी होगी। सौगन्ध खाकर कहता हू कि मेरे बाप ने एक बार अभाव म जरूर चोरी की थी। भूख आदमी से क्या नही करा देती? पर, उस कलक का तुम्हारे समाज के इन भले लोगो ने नगा कर-करके मेरे घर को बरबाद कर दिया। तू नही जानता यहा के स्त्री-पुरुषो और समाज को? सब राक्षस हैं। कितने दुख दर्दों मे मैंने इतनी लम्बी उम्र गुजारी है। मैंने सदा यह सोचते हुए उम्र गुजारी है कि एक दिन तो मेरे घर म भी गहने कपडे पहनने वाली वहू आएगी। मैं बडी आशाओ से बाट जोह रहा हू? पर नही, बेटा जजाल तो जजाल ही रहेगा सुख हमारे भाग्य मे कहा अभागा मैं कसे बेटे-पोतो को खेलाऊगा? अकेला बिलकुल अकेला और उपेक्षित। कौन है मुझ जसे कुरूप का साथी? किसने मुझे प्यार के दो बाल कहे? तू ही बता, अपनपन के बिना आदमी क्या हो सकता है? मेरा कोई वशज नही होगा। अरथी मे कोई कन्धा देने वाला नही होगा।

और भरू की आखें आसुओ से भर आयी। वह पीडा का प्रतीक बन गया।

मैं सोचने लगा कि अकेलेपन की पीडा कितनी भयावह और दुवह होती है। दुल्हन पाने की इच्छा इतने साधारण और कुरूप व्यक्ति मे कितनी कुण्ठाए जनमा सकती है! उसे कितना परपीडक बना सकती है! यह भरू एक सैडिस्ट, सबका पीडामय देखने वाला, चाहता है कि हर आदमी किसी न किसी दुख से ग्रस्त रहे! किसी भी अशुभ समाचार पर वह प्रसन्न होता है पर वास्तव मे वह प्रसन्नता के नाम पर अपने को ठगता है बहलाता है।

वह इतना आकुल-व्याकुल हो गया कि मुझसे उसका तडपना देखा नही गया। अचानक ही मुझे एक बात सूझी। मैं बोला, 'भरू बाबा! इमरती बुआ है ना, उसके कल रात तीन हजार रुपये के गहने चोरी हो गए।

तीन हजार रुपये के गहने चोरी हो गए? भरू के चेहरे का रग-

लोगो को उससे घृणा होने लगी। मुझे भी बहुत पीड़ा हुई। मैंने उसे फटकारा काका तू बिना हृदय का मानुस है। अरे, तू भी कभी मरेगा ?' फिर, मैंने सोचकर कहा, 'तू यह सारी धन-माया किसके वास्ते जोड़ रहा है ? अरे ! अब तो कुछ दया धरम कर बहुत रुपये हैं तेरे पास। अच्छे काम कर । लोगो को मत सता। मत दु:ख दे। माग मागकर जो पैसा इकट्ठा कर रहा है उसे खाएगा कौन ? जिन्दगी मे किसी को तो सुख दे। किसी को तो अपना बना। बता, क्या जाएगा तेरे साथ ? क्या हम सबका दु:ख देता है ?'

भैरू सिर पकड़कर बैठ गया। मैंने उसकी खुरदुरी आकृति पर पहली बार कोमलता देखी। पहली बार उसकी आखो मे करुणा तिरती नजर आयी।

भीड़ छट गयी। वह टूटा सा उठा। मुझसे बोला, आ, मेरे साथ चल।'

मुझे पकड़कर वह अपने घर के अन्दर ले गया। आगन। आगन के बाद साल । उसके बाद एक और कोठरी। उसने लालटेन जलाकर रोशनी की। कितनी माया बिखरी पड़ी थी वहा ! एक पाटे के ऊपर तीमणिया, कोठलियो, मोर पीढ़िया, बोरियो तिडडा और परो के कई गहने। इन गहनो के बीच एक चमचमाता हुआ लहगा, ओढनी और काट। जैसे विवाह की तैयारी की हुई हो।

'यह क्या है ? मैं आश्चर्य से बोला।

भैरू जलता भुनता बोला इन सब चीजो को इस तहखाने मे दबाकर मैं मर जाऊगा और साप बनकर पहरा लगाऊगा।'

'पर क्यो ?'

'तू कहता है न कि समाज, धरम दया ? पर मैं तुझसे पूछता हू कि मेरे ऊपर किस भाई के लाल ने दया की है ? तुम्हारे लोगो और समाज ने मुझे बिना दूल्हा बने हुए ही कुवारा रख दिया । चोर मैं नहीं, मेरा बाप था, फिर उसकी सजा मुझे क्यो ?' वह भर्राए स्वर मे आखें नम करके बोला, मैं दूल्हा बन विवाह करने जाने वाला था, उसी समय इन अड़ोसियों-पड़ोसियो ने सत्यवादी हरिश्चन्द्र बनकर मेरा विवाह रुकवा दिया। मेरी

इतनी बदनामी की कि फिर मेरा विवाह नहीं हुआ। मेरी मा तडपती-तडपती मर गयी। बाप तो अपना काला मुह और नीले पर लेकर इस शहर से जो गया, सो बेचारा वापस नहीं आया। पता नहीं, उसने कितनी भयानक मौत पायी होगी। सौगध खाकर कहता हू कि मेरे बाप ने एक बार अभाव म जरूर चोरी की थी। भूख आदमी से क्या नहीं करा देती? पर, उस कलक को तुम्हारे समाज के इन भले लोगो ने नगा कर-करके मेरे घर को बरबाद कर दिया। तू नहीं जानता यहा के स्त्री पुरुषो और समाज का? सब राक्षस हैं। कितने दु ख-दर्दों मे मैंने इतनी लम्बी उम्र गुजारी है। मैंने सदा यह सोचते हुए उम्र गुजारी है कि एक दिन तो मेरे घर मे भी गहने कपडे पहनने वाली बहू आएगी। मैं बडी आशाओ से बाट जोह रहा हू? पर नहीं, बेटा जजाल तो जजाल ही रहेगा, सुख हमारे भाग्य म कहा, अभागा मैं कैसे बेटे-पोतो को खेलाऊगा? अकेला, बिलकुल अकेला और उपेक्षित। कौन है मुझ जसे कुरूप का साथी? किसने मुझे प्यार के दो बाल कहे? तू ही बता, अपनेपन के बिना आदमी क्या हो सकता है? मेरा कोई वशज नहीं होगा। अरथी म कोई कधा देने वाला नहीं होगा।

और भरू की आखें आसुओ से भर आयी। वह पीडा का प्रतीक बन गया।

मैं सोचने लगा कि अकेलेपन की पीडा कितनी भयावह और दुवह होती है। दुल्हन पाने की इच्छा इतने साधारण और कुरूप व्यक्ति मे कितनी कुण्ठाए जनमा सकती है! उसे कितना परपीडक बना सकती है! यह भरू एक सडिस्ट, सबको पीडामय देखने वाला, चाहता है कि हर आदमी किसी न किसी दु ख से ग्रस्त रहे! किसी भी अशुभ समाचार पर वह प्रसन्न होता है पर वास्तव मे वह प्रसन्नता के नाम पर अपने को ठगता है, बहलाता है।

वह इतना आकुल-व्याकुल हो गया कि मुझसे उसका तडपना देखा नहीं गया। अचानक ही मुझे एक बात सूझी। मैं बोला, 'भरू काका! इमरती बुआ है ना, उसके कल रात तीन हजार रुपये के गहने चोरी हो गए।'

'तीन हजार रुपये के गहने चोरी हो गए?' भरू के चेहरे का रग

पलट गया। अपने आ तरिक सघष एव बाह्य परिवेश को भूलकर वह खुश होकर बोला, 'अच्छा हुआ, उसके साथ ऐसा ही होना चाहिए था। बहुत खाटे काम करती है। इधर उधर भिडाती रहती है। मन की काली लुगाई है । इसी ने तब ढोल पीट पीटकर कहा था, भैरू का बाप चोर है। सजाभोगी है। मैं कहता हू कि उसका सारा धन चोरी चला जाएगा। वह पैसे-पस को मोहताज हो जाएगी।'

मुझे उसके पास स खिसकने का अवसर मिल गया। बाझिल मन से साप की तरह मैं एक क्षण म उसके घर से बाहर सरक गया। नाली का झगडा तब तक मैं मवथा भूल चुका था ।

□

वह रात, सारा और सिपाही

○

पूस की रात।

भिखारिन का, गोल बगीचे में सामने वाली सेठ की हवेली के नीचे ठिठुर-ठिठुरकर कापना। सिपाही के नालदार जूतो की भयप्रद ठक-ठक्-ठक !

तीखी हवा, सनसनाती हड्डिया को चीर देने वाली। बच्चे की चीख, और 'सारा' की आखो मे ममता भरी करुणा।

एक चित्र—सारा भिखारिन, उसका बच्चा, सिपाही और सेठ की हवेली।

रात के लगभग बारह बजे होगे। चाद आसमान म ऐसे चमक रहा है जैसे किसी कवि प्रेयसी का निगूढ शून्यता मे काल्पनिक दीप्त मुख, जैस पीडित और असहाय सारा क यौवन का शत्रु और जैस सिपाही की कठोर कल्पना की उडान, मानो गोलिया का अभ्यास करते समय लगाने वाला गोल कपडा।

सारा बार-बार अपने बच्चे को अपनी छाती से चिपका लेती थी। उसका सारा ध्यान सिपाही के कदमो की ठक-ठक और कभी-कभी हवेली से आने वाली असतुलित हसी की ओर चला जाता था।

'सी ई ई ऽऽ' की घुटी आवाज अब भी उसके बन्द हाठो से निकल रही थी, जिसे समीप खडा सिपाही सुन रहा था। वह चोटी से एडी तक ओवरकोट पहने हुए था। हर तीसरे क्षण वह माचिस निकालकर बीडी

सुलगाता था। उसकी बीडी का बार बार बुझना उसके अतमन की वचनी को बता रहा था, जसे उसके अनस मे कोई एसी हलचल मची हुई हो, जा उसके मन को हर कश के बाद कही और ले उडती हो। तब अचानक उसकी दो बडी-बडी क्रूर अगारो सी जलती आखें सारा की ओर उठ जाती थी। एक जवान मा, एक बच्चा, खुला आकाश, ठडी सडक और वही शाश्वत 'सी ई ई ऽऽ।

दूसर ही क्षण हवेली म से घुघरू की आवाज आने लगी और इस असह्य ठण्ड और वेदना के आवरण को चीरकर सारा का ध्यान अपनी ओर खीचने लगी। सारा मत्र मुग्ध होकर घुघरू की आवाज सुनती रही। सगीत और उसका मधुर आरोहण-अवरोहण।

'मुए!' हल्की चीख के साथ सारा न अपने बच्चे के गाल पर चाटा मारकर उसे जमीन पर पटक दिया। पीडा से उसकी जवडी चिपक गयी और उसकी आवाज फटे ढोल की तरह कक्श हा गयी 'क्या मर जिस्म को खाएगा, रोटी मिलती नही, फिर दूध आएगा कहा से? और तू तू दूध पीते पीत मेरा खून चूसन लगा। मुआ कही का, हरामजादा।

उसकी गालिया सिपाही का अट्टहास और बच्चे का करुण क्रदन। तब कुछ क्षण के लिए वही मौन, चुप्पी।

ठक ठक ठक। वही चिरपरिचित नालदार जूता की आवाज। सारा सिपाही को देखन लगी। उसे शक हुआ कि वह उसकी ओर आ रहा है।

पर सिपाही अपनी वीट पर चक्कर लगा रहा था। सारा को अपनी ओर देखत देखते वह उसके बिलकुल नजदीक आ गया और उसे घूरन लगा। सारा के रोगटे खडे हा गये। सिपाही की आखा स बचने के लिए वह इधर-उधर ताकने लगी। अपने बच्चे को जोर जोर से थपथपाकर कहन लगी, 'सो जा, मुआ! नही तो सिपाहीजी से कहकर पकडवा दूगी। हा, दख, पास ही खड हैं।'

सिपाही हल्की हसी हसकर फिर चहलकदमी करने लगा। बीडी उसके हाथ मे अब भी थी।

रात ढल रही थी। चन्द्रमा क्षितिज की ओर बढ रहा था सिपाही

घूमता घूमता फिर आया और अपने कानो को ओवरकोट से ढकता हुआ बोला तेरे पास घर नहीं है ?'

'घर ?' उसने भूखी आखो से सिपाही को घूरा, 'यदि घर होता तो अपने बच्चे को इस तरह रोने देती ! देखो न, आवारा पिल्ले की तरह बिलबिला रहा है—बेचारा !'

बीडी का जोर का कश खीचते हुए सिपाही बोला, 'तू खडहर मे क्यो नही चली जाती, वहा सर्दी से बचने के लिए ओट तो है।' उसने बीडी को झाडा, चल, मैं तुम्हे खडहर बता देता हू !'

सिपाही थोडा आगे बढा कि सारा कर्कश स्वर मे चिल्लायी, 'ओ नास-पीटे तेरी घरवाली नही है जो हर हडिया मे मुह डालने की कोशिश कर रहा है। गडबड करेगा तो बस देख ही लेना !

सिपाही की बीडी समाप्त हो गयी थी। उसने अपने दोनो हाथ अपनी जेब म डाल लिये। खिसियानी हसी हसकर बोला, 'तेरा खसम कहा है ?'

वह बोले इसके पहले ही हवेली से मधुर स्वर सुनाई पडा, 'जा-जा रे-जा बालमवा

मेरा खसम किसी डायन के घर नशे मे धुत हुआ पडा होगा और तेरी बीबी ? उसने अपने उत्तर के साथ ही सवाल किया।

जलते अगारे-सा प्रश्न सिपाही के कलेजे पर लगा। सिपाही अवश हो उठा। उसके न चाहते हुए भी अचानक ये शब्द निकल ही गये 'मेरी घर वाली ? हठात वह रुका और तमतमाकर बोला, बदजात कही की, साली को मार मारकर चल कोतवाली '

अरे वाह, इतनी जल्दी गर्म कैसे हो गया ? कोतवाली ले जाकर क्या करेगा मेरा ? सारा ने निश्शक होकर कहा।

'साली क '

सहसा हवेली मे से एक एक करके लोग निकलने लगे। सिपाही को चुप होना पडा। सभी लोग ऊचे तबके के थे। कुछ औरतें भी थी बीसवी सदी की। बाब हेयर और रग बिरगी, नयी तरह की पोशाक पहने। सारा उन्हे विस्मय भरी दृष्टि से देख रही थी।

मठ ! एक पतली आवाज सारा के कानो म पडी।

सुलगाता था। उसकी बीडी का बार-बार बुझना उसके अ तमन की बचनी को बता रहा था जसे उसके अ तस मे कोई एसी हलचल मची हुई हो, जो उसके मन को हर कश के बाद कही और ले उडती हो। तब अचानक उसकी दो बडी-बडी क्रूर अगारा-सी जलती आखें सारा की ओर उठ जाती थी। एक जवान मा एक बच्चा, खुला आकाश, ठडी सडक और वही शाश्वत सी ईईऽऽ!'

दूसरे ही क्षण हवेली म से घुघरू की आवाज आने लगी और इस असह्य ठण्ड और वेदना के आवरण को चीरकर सारा का ध्यान अपनी ओर खीचने लगी। सारा मत्र मुग्ध होकर घुघरू की आवाज सुनती रही। सगीत और उसका मधुर आरोहण-अवरोहण।

'मुए!' हल्की चीख के साथ सारा न अपने बच्चे के गाल पर चाटा मारकर उसे जमीन पर पटक दिया। पीडा से उसकी जबडी चिपक गयी और उसकी आवाज फटे ढोल की तरह ककश हो गयी, 'क्या मेर जिस्म को खाएगा, रोटी मिलती नही, फिर दूध आएगा कहा से? और तू तू दूध पीते-पीत मरा खून चूसन लगा। मुआ कही का, हरामजादा।'

उसकी गालिया सिपाही का अट्टहास और बच्चे का करुण क्रदन। तब कुछ क्षण के लिए वही मौन, चुप्पी।

ठक ठक ठक। वही चिरपरिचित नालदार जूतो की आवाज। सारा सिपाही को देखने लगी। उसे शक हुआ कि वह उसकी आर आ रहा है।

पर सिपाही अपनी बोट पर चक्कर लगा रहा था। सारा का अपनी ओर देखत देखत वह उसके बिलकुल नजदीक आ गया और उसे घूरन लगा। सारा के रोगटे खडे हो गये। सिपाही की आखा से बचने के लिए वह इधर-उधर ताकन लगी। अपने बच्चे को जोर-जार से थपथपाकर कहन लगी, 'सो जा, मुआ! नही तो सिपाहीजी से कहकर पकडवा दूगी। हा, देख, पास ही खडे हैं।'

सिपाही हल्की हसी हसकर फिर चहलकदमी करने लगा। बीडी उसके हाथ म अब भी थी।

रात ढल रही थी। चद्रमा क्षितिज की ओर बढ रहा था सिपाही

घूमता घूमता फिर आया और अपने कानो को ओवरकोट से ढकता हुआ बोला, तेरे पास घर नही है ?'

घर ? उसने भूखी आखो से सिपाही को घूरा, 'यदि घर होता तो अपने बच्चे को इस तरह रोने देती ! देखो न, आवारा पिल्ले की तरह बिलबिला रहा है—बचारा !'

बीडी का जोर का कश खीचते हुए सिपाही बोला, 'तू खडहर म क्यो नही चली जाती, वहा सर्दी से बचने के लिए ओट तो है ।' उसने बीडी को झाडा, चल, मैं तुम्हे खडहर बता देता हू !'

सिपाही थोडा आगे बढा कि सारा कर्कश स्वर म चिल्लायी, 'आ नास-पीटे, तेरी घरवाली नही है जो हर हडिया मे मुह डालने की कोशिश कर रहा है । गडबड करेगा तो बस देख ही लेना !'

सिपाही की बीडी समाप्त हो गयी थी । उसन अपने दोनो हाथ अपनी जेब म डाल लिय । खिसियानी हसी हसकर बोला, तेरा खसम कहा है ?'

वह बोल इसके पहले ही हवेली से मधुर स्वर सुनाई पडा, 'जा-जा-रे जा बालमवा '

मेरा खसम किसी डायन के घर नशे म धुत हुआ पडा होगा और तेरी बीबी ? उसन अपन उत्तर के साथ ही सवाल किया ।

जलत अगारे-सा प्रश्न सिपाही के कलेजे पर लगा । सिपाही अवश हो उठा । उसके न चाहते हुए भी अचानक य शब्द निकल ही गये, 'मेरी घर वाली ? हठात् वह रुका और तमतमाकर बोला, बदजात कही की, साली को मार मारकर चल कोतवाली '

'अर वाह, इतनी जल्दी गम कसे हो गया ? कोतवाली ले जाकर क्या करेगा मरा ? सारा ने निश्शक होकर कहा ।

'साली क '

सहसा हवली मे से एक एक करके लोग निकलन लगे । सिपाही को चुप होना पडा । सभी लोग ऊचे तबके के थे । कुछ औरते भी थी, बीसवी सदी की । बाब हेयर और रग बिरगी, नयी तरह की पोशाक पहन । सारा उन्हे विस्मय भरी दृष्टि से देख रही थी ।

सठ !' एक पतली आवाज सारा के कानो म पडी ।

सिपाही अपनी बीट पर अत्यन्त मुस्तदी से चक्कर लगाने लगा। सारा की निगाहें उस ओर उठ गयीं, नगर की प्रसिद्ध नर्तकी सेठ से कश्मीरी शाल माग रही थी, और सेठ उसे एक भक्त की तरह दोनो हाथ आगे बढ़ाकर दे रहा था।

नालदार जूतो की जोर की ठक।

सारा ने देखा, सिपाही सेठ को सलाम कर रहा है और सेठ इतनी लापरवाही से एक नोट उसकी ओर फेंक रहा है जैसे कोई गरीब शराबी चूसी हुई हड्डी को किसी कुत्ते को फेंकता है।

'बेशर्म कहीं का।' सारा ने मन ही-मन कहा और उसी जगह मे सिकुड-सिमटकर सोने का प्रयास करने लगी।

चाद कुहरे के कारण ढक गया। बर्फीली हवा तेज हो गयी, और थोडी-थोडी बरफ भी गिरने लगी। सिपाही ठड से लड रहा था। बूट, बीडी, ओवरकोट वह बच्चा और सारा !!

हवा रुक नहीं रही थी। उसका तीखापन बढ़ता ही जा रहा था। सारा का दुबला-पतला जिस्म अपने बच्चे को जितनी गर्मी दे सकता था, दे रहा था, पर उसका शरीर स्वय ठडा हो रहा था, वह उस ठड की बरसात मे स्वय डूब गयी थी।

बच्चा चीखा—एक लम्बी चीख, एक टूटती, सिकुडती छटपटाती चीख जो शायद जिन्दगी से दूर-दूर जा रही थी।

सन् सन सन् सन—हवा की आवाज।

ठक-ठक-ठक ! नालदार जूतो की भयानक ध्वनि। बीडी का जहरीला धुआ। मन्त्रचालित-सी सारा उठी, यन्त्रचालित-सी मुडी और सिपाही के पास आकर खडी हो गयी। सिपाही चौंक गया, शायद, वह किसी और विचार मे खोया हुआ था। बीडी की लाश उसके हाथ से छूटकर अधकार मे लोटपोट होने लगी। सिपाही को सुनाई दिया सिपाहीजी मेरे बच्चे को ओवरकोट से ढक दीजिए नहीं तो ठड से अकडकर मर जाएगा बच्चा यह मेरे दिल का राजा है। सब कुछ है।'

सनसनाती हवा रोने के स्वर मे गूज रही थी। रोती हुई हवा सनसनाकर सारा के शब्दो को सिपाही के कान से दूर ले जाने की चेष्टा कर रही

थी। सिपाही एक क्षण ठिठका, फिर उसका सिपाहीपन जागा। कड़ककर बोला, 'अच्छा, अब मैं 'नासपीटे' से 'सिपाही जी' हो गया, चल साली यहां ओवर-वोवर कोट नहीं है।'

सारा अब भी नहीं हटी। उसका बच्चा और जोर से रोने लगा। ठंड बढ़ती ही जा रही थी।

'अरे दे दे न, क्या लाल-पीला हो रहा है? मैं तो पगली हूं, यूं ही बक दिया करती हूं। अच्छा, माफ कर। देख मेरा बच्चा ठंड से ।' कहकर सारा सिपाही के नजदीक आ गयी। अपने सूखे स्तन की, असह्य पीड़ा को भूलकर उसने एक बार फिर उस अपने बच्चे के मुंह में डाल दिया। बच्चा जोंक की तरह इंसान के जिस्म के लहू को चूसने लगा।

इंसान की नसें पीड़ा से फटी जा रही थीं।

सिपाही की आंखों में वासना दहक उठी, 'इसका बाप कौन है?'

'इसका बाप?' सारा चौंकी।

'हां, इसका बाप? सिपाही जोर से बोला।

कहीं पड़ा होगा नशे में चूर। बहुत आवारा है, सिपाही जी।

'तब एक शर्त पर मैं अपना ओवरकोट तुझे दे सकता हूं।'

'शर्त, कौन-सी शर्त? वह उतावली होकर बोली।

मुझसे सटकर बैठना होगा।'

'क्या कहा, नासपीटे, सटकर बैठना होगा?' वह अपने जिस्म की सारी पीड़ाएं जैसे भूल गयी थी।

'जिससे ओवरकोट तेरे बच्चे को ठंड से बचा लेगा, और तू मुझे। जानती नहीं, औरत का जिस्म आग की भट्ठी होता है।'

'बदमाश!

'तू मेरी बात नहीं मानेगी तो तेरा बच्चा मर जाएगा।'

बच्चा, बच्चा, बच्चा! सारा पराजित हो गयी। उसके सामने बच्चे का तड़प-तड़पकर मरना साकार हो उठा। वह भावुक हो उठी। वह बलवती होकर सोचने लगी, 'यह मदुआ सिपाही ठहरा, उजड्ड और शैतान कहीं,

क्या कर लेगा यह?' उसकी विचारधारा बदली, अपनी नीयत को खोटी करेगा, तो मैं इसे कच्चा ही चबा जाऊंगी। मैं जब अपने खसम से नहीं

डरती फिर भला इसम क्यो डरू ? और वह बहादुरी के साथ बोली, 'आ नासपीटे, बठ जा मेरे पास।'

सिपाही उससे सटकर बठ गया, 'आज की रात कितनी अच्छी है !'

'कलेजा गम हो गया ? सारा न सिपाही का हाथ पकडकर कहा, देखो, मैं मा हू, तू कह तो तुझे अपने सीने स लगा लू मुये काई शम-वर्म नही आती। अरे नासपीटे, मा को शम कसी ?' और वह सिपाही को अपनी बाहो म कसने लगी।

सिपाही चुप रहा—अचल और निस्पद।

पूस की रात, बर्फीली ठड, सनसनाती हवा, सिपाही का लगा जैस उसके बाजू मे शोले दहक रहे हैं और उसके समीप बठी एक मा की मजबूत होती बाह तपी सलाखा-सी लग रही हैं। वह गम हो रहा है। आग, जलन आग। वह जैस इस पवित्र आग स जल जाएगा।

वह हडबडा गया और बीडिया टटोलने लगा, लेकिन बीडिया ओवर कोट म थी, जिसम एक मा का बच्चा लिपटा पडा था। वह पुन गतिहीन सा बैठ गया पर सारा के जिस्म की आग, लपटें

जिस पावन विद्रोह की आग म जलकर सारा सिपाही स सटकर बठी थी, उससे सिपाही की देह क्या आत्मा ही झुलस गयी। वह सारा के समीप अधिक नही बठ सका।

वह उठा और बीट पर चक्कर लगान लगा। नालदार जूता की ठक ठक ठक पुन गूज उठी। और सारा कह रही थी आ, नासपीटे, तुझे ठड लग जाएगी, आ मुझसे लगकर बठ जा ! अरे, देख, ठड बढ रही है, आ आ न । उसके स्वर मे वात्सल्य था, अपूव वात्सल्य। पवित्र और अटूट स्नेहधारा ! मुख पर तेज और निभयता।

□



जीवन का हाहाकार

महानगर मे

○

उसे लगातार बस यही अहसास हो रहा था कि वह दुघटना प्रेत की तरह उसका पीछा कर रही है। कितनी भयानक दुघटना थी !'

एक खूबसूरत-सी महिला और एक आठ साल का गुलाब के समान मासूम बच्चा सडक पार कर रहे थ। दोनो के चेहरा पर खुशियो के अक्स झिलमिला रहे थे। व मुस्कानो मे डूबे हुए थे। यकायक शोरगुल उभरा और पलक झपकते दोना बस के नीचे आ गए। उन दोनो को रौदती हुई, एक दीवार मे रगड खाती हुई बस रुक गई। ड्राइवर उतरकर भाग गया। भाग क्या गया—इलक्ट्रिक ट्रेन की भीड मे गुम हो गया। लोग उसका सहसा पता नही लगा सके।

उसन देखा कि औरत के जिस्म की चिदिया बिखर गई है। बच्चा मास का लोथडा मात्र हो गया। केवल उसका सिर दिखाई दे रहा था। बहुत ही बीभत्स व खौफनाक दश्य था वह !

भीड बढ गई थी। फिर उसने देखा कि अपने-अपन उदगार व्यक्त करके भीड छटने लगी।

तभी किसी ने उसके कधे पर हाथ रखा। वह चौका। उसन देखा कि काले रग का एक दुबला पतला और लम्बा आदमी उसे क्रूर तटस्थता से घूर रहा है।

उसने बडी दीनता से उसकी ओर देखा।

वह आदमी रूखड आवाज मे बोला आसू बहा रहे हो ? इस

की दुघटनाओ पर यदि तुम आसू बहाते रहे, तो मैं समझता हू कि तुम्हारे भीतर का आसुओ का समदर सूख जाएगा। यह भावुकता यहा नही चलने की। यह महानगर है। यहा उत्सुकता पर काबू रखो और अपने आप मे लीन रहो।

'जरूर ये मा-बेटे होगे !' वह बुदबुदाया।

'मगर तुम्हारे तो नही ? यदि ये तुम्हारे नहीं है तो तुम यहा से रफूचक्कर हो जाओ वर्ना पुलिस तुम्हे चश्मदीद गवाह बनाकर तुम्हारा खाना-पीना सोना जागना हराम कर देगी। जल्दी से भागो—वह पुलिस वाला तुम्हे घूर रहा है।'

उसने देखा, तो वह भयभीत हो गया। क्योकि सचमुच पुलिस वाला उसे घूर रहा था और वह भाग खडा हुआ। उसने पीछे देखा तक नही।

मगर वह बीभत्स दृश्य प्रेत की तरह उसका पीछा करता रहा। वह चाहकर भी उसे नही भुला सका।

आखिर वह उससे छुटकारा पाने के लिए कोलाहल भरी भीड मे खो गया।

भीड मे उसे सुकून मिला। भीड किसी जुलूस की थी। जोर-जोर से नारे लगाए जा रहे थे—इन्कलाब जिन्दाबाद ! दुनिया के मजदूर, एक हो ! रोजी रोटी दे न सके, वह सरकार निकम्मी है !

वह भीड मे चलता रहा। पता नही क्या, वह नारे भी लगाने लगा।

जुलूस भी खत्म हो गया। एक-एक करके लोग चले गए। वह फिर अकेला रह गया। उसे अब दुघटना की जगह नारे याद आने लगे। फिर वह नारो को भूलकर अपने अभाव व कष्टो मे उलझ गया। वह पिछले तीन दिनो से भूखा था। वह अपने दोस्तो व परिवार वालो के यहा गया था, पर उन्होने नितात औपचारिक बातें करके उसे टरका दिया था। उसे किसी ने खाने तक को नही पूछा। यहा तक कि उसका सगा ममेरा भाई जो गाव मे उसका एक पल भी साथ नही छोडता था, इस महानगर मे आते ही बदल गया, बिलकुल अजनबी बन गया। कहने लगा, 'मैं तो एक महीने के लिए इस शहर से बाहर जा रहा हू। दफ्तर के बडे काम करने है। अभी तुम जाओ। मेरी मजबूरी का अन्यथा नही समझोगे ?' मगर वह यह शहर

छाडकर नही गया। उसने उसे एक बस स्टेशन पर देखा था। वह सोचता रहा कि उसके ममेरे भाई का आखिर हो क्या गया है!

वह खभे की तरह खडा रहा। कोई उसके कान के पास आकर मच्छर की तरह भिनभिनाया, 'भाई! जुलूस खत्म हो गया है। अब अपने घर जाओ।

'घर?' वह चौंका।

'हा भाई, घर—देखा सब चले गए है।'

'मगर हा हा मैं भी अपने घर जाऊगा!' उसने यन्त्रवत कहा। उसका घर तो गाव म है। हजारो रुपये कमान के चक्कर मे वह यहा आ गया। इस महानगर मे। मगर महानगर ने उसे केवल टूटन, घुटन ऊब, खालीपन और एक अज्ञात सत्रास दिया। नये सम्बधो का आभास कराया।

क्या तुम अपनी बीवी स झगडकर आए हो?' उस गुडेनुमा व्यक्ति ने मुस्कराकर कहा, 'या तुमन चोरी की है? यह भी मुमकिन है कि तुमको नौकरी से निकाल दिया गया हो! जरूर तुम्हारी बीवी सुन्दर होगी और तुम्हारा अफसर कुत्ता '

वह चीख पडा, 'तुम खामोश हो जाओ। भागो यहा स, मुझे अपने हाल पर छोड दो।'

उस आदमी ने कधे उचकाए और कहा, पागल कही का। ये साले हडताली पहले तो हडताल करत है—फिर परेशान होकर चीखते हैं। जब लडने और हडताल करने की क्षमता ही नही है तो गधे के बच्चे हडताल ही क्या करत है?'

वह उस घूरता रहा। फिर चल पडा।

अचानक वह चौंक पडा। कोई व्यक्ति आर्त्त स्वर म तीन आदमियो के हाथ जोडता हुआ चिल्ला रहा था, मेरे रुपये वापस कर दो। भगवान के लिए कर दो। मेरी बीवी सख्त बीमार है। मुझे उसके लिए दवा लानी है।'

उस धारीदार बनियान पहन हुए काले आदमी ने कहा, यदि तुम बाजी जीत जात, तो दस का बीस नही लेते? हार गए तो अब बीवी की

बीमारी का बहाना करते हो ?

मुझे अभाव व लालच ने मार डाला। सोचा था कि दस के बीस हो जाएंगे तो दवा के साथ फल भी ले चलूगा। दादा, मैं सच कहता हू कि मुझे अपनी बीवी के लिए दवा लानी है। मुझ पर दया करो।' वह रोने लगा।

तीनो जल्लाद की तरह निमम बन गए। पत्थर के लोग हो गए। बडी क्रूरता से उन्होंने उस असहाय आदमी को धक्का मारा और एक बेरहम हसी के साथ वे चलते बन।

वह काप उठा। उसका साहस टूट गया। वह चल पडा। वही अकेलापन। अब उसे एक नया बोध हुआ। हजारो के बीच एक अकेलेपन का अलग बोध।

वह चलता रहा—निरुद्देश्य और निरथक। अचानक वह एक गली के नुक्कड पर रुक गया।

दो बाप बेटे आपस मे लाठिया लेकर लडाई करने को तयार खडे थे। परस्पर अपशब्द बोल रहे थे और गालिया निकाल रहे थे।

च द लोग उ हे समझा रहे थ और अधिकाश लोग चोर की तरह गरदन नीची करके खिसक रहे थे। एक बोला, 'कौन घरेलू मामले म पडे ? बाप बेटे का झगडा है। वाह रे धन ! तू बाप-बेटे के बीच भी वर डलवा देता है।'

दूसरा बोला, 'धन के लिए नही, बात कुछ और ही है।'

क्या ?' च द कान खडे हो गए। साथ ही च द निगाहे प्रश्नो से घिर गई।

'इस आदमी के तीन बेटे हैं पर इसकी औरत इस मझले बेटे से बडी घणा करती है। ऐसा लगता है कि मानो यह उसका सौतेला बेटा हो।

वह ध्यान से सवाद सुनता रहा।

दूसरा आदमी फिर बोला, 'दरअसल इस बेटे की बहू मे सास की नही पटती है। बस इ हे इस घर स निकालने के लिए इसकी मा कोई न कोई षडय त्र रचा करती है।'

उसका मन उस मा के प्रति घृणा से भर आया। यह कसी मा है—

यह कैसे सम्बन्ध है ? मा तो केवल मा होती है ।

वह भयभीत हो गया । मारा-मारा फिरता रहा । उसे लगने लगा कि इस नगर मे आदमी नही, यन्त्र व इन्सान की मिली जुली दोगली सतान रहती है ।

साझ हो गई थी ।

थोडी देर बाद एक कार आयी । लैंप पोस्ट बुझा-बुझा-सा जल रहा था । चारो ओर घना अधेरा था । ठोस अधेरा । उसने उस कार की ओर घूरकर देखा । अचानक कार का दरवाजा खुला । उसमे से एक लाश-सी वस्तु गिरी और कार तेजी से चली गयी । वह अपनी उत्सुकता को दबाता रहा । बेचैन और व्यग्र होता रहा ।

हजारो दुष्कल्पनाओ के बाद आखिर वह उस लाश की ओर बढ ही गया । उसने माचिस जलायी । वह चौंक पडा । देखा—एक लडकी है ।

उसने नाक के पास हाथ रखकर पता लगाया तो पाया कि वह लडकी जिन्दा थी । उसने सन्तोष की एक लम्बी सास ली । फिर उसने उस लडकी को झिझोडा ।

वह लडकी बुदबुदायी, 'मुझे मेरे रुपये दे दो—मुझे कल कई लोगो के बिल चुकाने हैं । रुपये दो ।'

उसी समय कोई शराबी चिल्लाया 'पीऊगा जरूर पीऊगा—इस जिन्दगी से तग आ गया हू । मुझे एक पल भी चन नही । आदमी शराब नही पीये तो करे क्या ?'

वह गाव के बारे म सोचने लगा । उसे अपने खेत याद आए । घर-परिवार याद आया । उसे अपनी घाघरे ओढनी मे सुबकती बीवी याद आयी, उसकी बातें याद आयी—'बडे शहरो म औरतें जादूगरनी होती हैं । आदमी को मन्त्रबद्ध कर लेती हैं ।—मत जाओ ।'

वह लौट जाएगा । वह महानगर म रहकर यन्त्र व इन्सान की दोगली सन्तान नही बनना चाहता ।

और रात के ढलते पहरो मे वह प्लेटफार्म की ओर चल पडा । बडी देर तक यू ही भटकता रहा । तभी उसे पुलिस ने आवारागर्दी मे पकड लिया ।

वह आतकित-सा चीखता रहा, 'मुझे छोड दो—मैं अपने गाव जा रहा हू। मैं चोर उचक्का-जेबकतरा नही हू।'

पर पुलिस हवलदार ने उसकी पीठ पर डडा मारकर कहा, 'चुप रह उठाईगीर।' और वह रो पडा। दीनता म आकाश की ओर देखन लगा।

एक युद्धध्वस्त शहर

⊙

पूरे छह महीने, सात दिनों के बाद उनकी बागला दश में स्थित अपने शहर में वापसी हुई। वे त्रिपुरा के एक शरणार्थी कम्प म थे और जीने की सारी सुविधाए मिलने के बाद भी वे अपने को मरणासन्न समझ रहे थे। दिन म एक बार वे पहाडा के उच्चतम शिखर पर चढकर युद्ध-आयुधा की भयानक आवाजा से घिरी अपने दश की सीमाआ को दखते थे। फिर दोनों लम्बी आह भरते, सुबकते और कैम्प म आकर जिन्दा लाशा की तरह पड जाते थे।

वे बहुत मितभाषी थे। सिर्फ प्रश्ना का सक्षिप्ततम उत्तर दिया करते थे। हा, कभी कभी दोनों धीरे धीरे खुसर-फुसर करते थे। फिर अश्रु-प्लावित नेत्रो स एक दूसरे को दखकर सिर झुका लेते थे।

वे दो थे और दोनो इस बात की भरसक चेष्टा करते थे कि कोई एक-दूसरे के अकेलेपन की हत्या न कर।

व दोनों अन्यतम मित्र थे। जिगरी दोस्त। एक था—वर्पण इस्लाम और दूसरा था अमर मजुमदार। दोनो ने पचास वर्ष पार कर लिये थे। दोना पडासी थ। दोना ने साथ-साथ घर छोडा था और दोनो साथ-साथ ही घर लौटे थे। पर यहा घर थे कहा? यहा तो जली हुई दीवारें थी। धुए के काले-काले अजीबोगरीब चित्र थे—आधुनिक कला के नमूने जसे! टूटी छतें और अधजले किवाड थे। मलवा-ही मलवा था।

मजुमदार ने विलगित स्वर में कहा, 'यह अपना घर है न वपण।'

वपण मुह छुपाकर रो पड़ा। वे नही जानते थे कि उनके घरा की दुदशा की तरह उनके परिवार के सदस्यो का भी कैसा दुदात अ त हुआ होगा। वे कुछ देर तक उस विध्वसक दृश्य को देखते रह। फिर अपने-अपन ध्वस्त घरा म घुस गय।

मलवा काफी सारा था। व दोना अजीब मे मोहो से जुडे हुए थ। दीवार टूट जान क बाद अब वे दोना एक दूसर के घरो के भीतरी हिस्सा को अच्छी तरह दख सकते थे। इतनी नारकीय पशाचिकता इतिहास के पष्ठो म पहले नही लिखी गयी थी। यहा के सास्कृतिक नताओ के चित्र फाड दिय गए थे और दीवारा पर अश्लील चित्र बना दिय गए थे।

तभी वपण तज स्वर म बोला 'सुनिए मजुमदार मोशाय यह रही मेरी पत्नी की साडी। उसन धूल धसरित नीली साडी को बाहर निकाला और हाथ म लेकर ऊचा किया। साडी गल गयी थी।

मजुमदार उकडू बठा हुआ कुछ खुदाई कर रहा था। वह जल्दी-जल्दी मलवा हटा रहा था। उसका कुता पीछे स भीग गया था। फिर भी उसन वपण की आर दखा। पता नही क्या वह मुसकरा पडा। एक सूखी मुसकान। फिर वह मलवा हटान मे मग्न हो गया।

और भी शरणार्थी तेजी से घरा की ओर लौट रहे थे। सडक पर कोलाहल उभरा। पीडा की परत स ढका कोलाहल। कुछ दूर नारियल क गाछ निस्पन्द स खड थे। आतकित देश की हवाए थमी थमी-सी लग रही थी।

'वापण !' मजुमदार पीडा का एकदम विस्मृत करके बोला, ओ वोपण, दख न यह रहा तरी भाभी का पानदान ! आतरिक प्रसन्नता क मारे मजुमदार पानदान का अपनी मली-कुचली धोती से पोछन लगा।

तभी आ गया शहर। दोना को अपने-अपन घरा की दुदशा से जूझते हुए दखकर बोला 'अरे पगले ! क्या धूल से लड रहे हो ?

'मजुमदार मोशाय दखो यह रहा मरे पोत की पढ़ाई का बस्ता।'

शहर की दाढी बढ़ी हुई थी। एक गहरी पीडा की दमक उसक काल चेहर पर दीप्त थी। उसकी आखा मे सागर की गम्भीर दहक थी। ज्वाला-मुखी की भडक थी। लम्बा-दुबला। हा-हा अट्टहास कर उठा। बोला,

"इनमें सब कुछ मिलेगा। मजुमदार मोशाय, तुम्हारे बच्चों की हड्डियां और कंकाल भी मिलेंगे। ये कब्र है, घर नहीं।'

उसका चेहरा एक निर्दयी पशाविकता से घिर गया। वह वपण की ओर बढ़ा। वह मलबे को मुट्ठी में भरकर बोला, 'इस घर को मत खोदो, इस मलबे को मत हटाओ। उस भयानकता को तुम नहीं सह पाओगे। उसे देखने और सहने के लिए राक्षस का हृदय चाहिए। युद्ध पिपासु, हुक्मरान व सैनिकों की देह और आत्मा चाहिए। तुम ये सब कहां से लाओगे? मैंने इन अंधेरी गलियों की पाशविकता देखी है। रक्त रंजित अंधेरी दीवाली देखी है।' शहर सिर पकड़कर बैठ गया। भयानक अट्टहास करने वाला शहर जोर जोर से रो पड़ा।

सारे लोग उसके चारों ओर एकत्र हो गये। जले गिरे और जर्जरित घर। मजुमदार वपण तथा अन्य मनुष्यों ने उसका घेराव कर लिया। तभी एक औरत आर्तनाद कर उठी। वह अपने हाथ में एक खोपड़ी लायी थी। खोपड़ी के साथ एक चश्मा। एक टूटा हुआ चश्मा। यह उसके पति का था। वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

प्रेत लीला! यहां प्रेत लीला हुई थी। सारे शैतानों ने यहां नरमेध किया था। यह अहमद मियां का चश्मा है टूटा हुआ चश्मा। भाभी! वे दयालु आदमी थे। मैं उस जली खिड़की में से देख रहा था। वे आए। दरिंदे सैनिक। उन्होंने ठांय-ठांय, दप-दप मोटर और मशीनगनों से गोलियां बरसायीं। तुम लोग पीछे से भाग गए। उन्होंने अहमद चाचा को पकड़ा। उनकी दाढ़ी को पकड़कर खींचा। फिर धक्का दिया। इसके बाद नालदार जूतों से मारते-मारते उन्हें अधमरा कर दिया। साला कुत्ता, गद्दार, कमीना अखबार में इंसानियत के अफसाने लिखता है।' और यह कहकर चुप हो गया। उसका चेहरा आंसुओं से भीग गया। वह थूक को निगलकर रोता हुआ बोला, इसके बाद उन पिशाचों ने बारी-बारी चाचा की आंखों में किरच डाली। फिर गर्दन पर खड़े हो गये। चाचा का दम घुट गया। उनकी आंखों और मुंह से खून का फव्वारा छूट पड़ा और उन्होंने दम तोड़ दिया। सड़क पर खून जम गया।

एक वहशी ने उन्हें उठाया और वापस घर में फेंक दिया। कौन कब्र

वपण मुह छुपाकर रो पडा। वे नही जानते थे कि उनके घरा की दुदशा की तरह उनके परिवार के सदस्यो का भी कैसा दुदा त अ त हुआ होगा ! वे कुछ दर तक उस विध्वसक दृश्य का देखते रहे। फिर अपने-अपन ध्वस्त घरो म घुस गय।

मलवा काफी सारा था। वे दोना अजीव मे मोहो से जुडे हुए थ। दीवार टूट जाने क वाद अब वे दोना एक दूसरे के घरा के भीतरी हिस्सा को अच्छी तरह दख सकत थे। इतनी नारकीय पशाचिकता इतिहास क पष्ठा म पहले नहीं लिखी गयी थी। यहा के सास्कतिक नताआ के चित्र फाड दिये गए थे और दीवारा पर अश्लील चित्र वना दिय गए थे।

तभी वपण तज स्वर म बोला, 'सुनिए मजुमदार मोशाय यह रही मेरी पत्नी की साडी। उसन धूल धूसरित नीली साडी को वाहर निकाला और हाथ म लकर ऊचा किया। साडी गल गयी थी।

मजुमदार उकड़ू वठा हुआ कुछ खुदाई कर रहा था। वह जल्दी-जल्दी मलवा हटा रहा था। उसका कुता पीछे स भीग गया था। फिर भी उसने वपण की आर देखा। पता नहीं क्यो वह मुसकरा पडा। एक सूखी मुसकान। फिर वह मलवा हटान म मग्न हा गया।

और भी शरणार्थी तेजी से घरा की ओर लौट रहे थे। सडक पर कोलाहल उभरा। पीडा की परत से ढका कोलाहल। कुछ दूर नारियल के गाछ निस्पन्द से खडे थे। आतक्ति दश की हवाए थमी थमी-सी लग रही थी।

'वोपण !' मजुमदार पीडा को एकदम विस्मृत करके बोला, 'ओ वोपण, देख न यह रहा तेरी भाभी का पानदान ! आतरिक प्रसन्नता के मारे मजुमदार पानदान को अपनी मैली कुचली धोती से पोछने लगा।

तभी आ गया शहर। दोनो को अपने अपने घरो की दुर्दशा से जूझते हुए देखकर बोला, 'अरे पगले ! क्या धूल से लड रहे हो ?

'मजुमदार माशाय देखो यह रहा मरे पोते की पढाई का बस्ता।'

शहर की दाढी वढी हुई थी। एक गहरी पीडा की दमक उसके काले चेहरे पर दीप्त थी। उसकी आखा मे सागर की गम्भीर दहक थी। ज्वालामुखी की भडक थी। लम्बा-दुबला। हा-हा अट्टहास कर उठा। बोला,

"इनम मत्र कुछ मिलेगा। मजुमदार मोशाय, तुम्हारे बच्चा की हड्डिया और कंकाल भी मिलेंगे। य कब्र है, घर नहो।'

उसका चेहरा एक निदयी पैशाचिकता मे घिर गया। वह वपण की ओर बढा। वह मलबे को मुट्ठी म भरकर बोला 'इस घर को मत खोदो, इस मलब का मत हटाओ। उस भयानकता को तुम नही सह पाओगे। उस दफन और सहन के लिए राक्षस का हृदय चाहिए। युद्ध पिपासु हुक्मरान व सनिका की दह और आत्मा चाहिए। तुम य सब कहा स लाओगे ? मैंन इन अधेरी गलिया की पाशविकता दखी है। रक्त रजित अधेरी दीवाली देखी है। शहर सिर पकडकर बैठ गया। भयानक अट्टहास करन वाला शहर जोर जार से रो पडा।

सारे लोग उसके चारो ओर एकत्र हो गये। जले, गिरे और जर्जरित घर। मजुमदार, वपण तथा अय मनुष्या ने उसका घेराव कर लिया। तभी एक औरत आर्तनाद कर उठी। वह अपने हाथ मे एक खोपडी लायी थी। खोपडी क साथ एक चश्मा। एक टूटा हुआ चश्मा। यह उसके पति का था। वह पछाड खाकर गिर पडी।

प्रेत लीला ! यहा प्रेत लीला हुई थी। सारे शताना न यहा नरमेध किया था। यह अहमद मिया का चश्मा है टूटा हुआ चश्मा। भाभी ! वे दयालु आदमी थे। मैं उस जली खिडकी मे से दख रहा था। वे आए। दरिन्दे सनिक। उन्होंने ठाय-ठाय, दप-दप मोटर और मशीनगना से गलिया बरसाया। तुम लाग पीछे से भाग गए। उन्होंने अहमद चाचा को पकडा। उनकी दाढी को पकडकर खीचा। फिर धक्का दिया। इसके बाद नालदार जूता से मारते-मारते उन्हे अधमरा कर दिया। साला कुत्ता, गद्दार, कमीना अखबार मे इसानियत के अफसाने लिखता है।' और यह कहकर चुप हो गया। उसका चेहरा आसुआ मे भीग गया। वह थूक का निगलकर रोता हुआ बाला, इसके बाद उन पिशाचो ने बारी-बारी चाचा की आखा म मिरच डाली। फिर गदन पर खडे हो गये। चाचा का दम घुट गया। उनकी आखो और मुह से खून का फव्वारा छूट पडा और उन्होंन दम तोड दिया। सडक पर खून जम गया।

एक वहशी ने उन्हें उठाया और वापस घर मे फेंक दिया। कौन कब्र

खोदेगा ? यह घर ।' शहर पागल की तरह खडा हो गया। दोनो मुट्ठिया को बद करके जोर का क्रन्दन कर उठा, 'मत हटाओ मलवे को। ये घर नही, कब्रे है।'

'मजुमदार मोशाय अमारा बन्ध सुनो यह पानदान खोलकर देखो कही अत्याचारियों न इसम आखो की पुतलिया तो नही भर रखी है।'

पानदान उनक हाथ से छूट गया।

वपण दा, इस साडी को सभालकर रखना। इसके पहनने वाली वह मा, अल्लाह को प्यारी हो गयी ह। एक बलूची उन्ह कधे पर उठाकर लाया। फिर नही नही ! मैं नही बता सकता !' शहर ने अपन केशो को बुरी तरह से खीचा। वह क्र दन कर उठा, 'नही कहा जाता नही कहा जाता। ढूढो कुछ और मिलेगा। स्मृतिया चिह्न हडिडया कटे अग जली पुस्तकें खडित मूर्तिया।

मर बाबा कहा है ? एक बालक न बडी अबोधता से पूछा।

तुम्हारे बाबा अमित सरकार डाक्टर अमित सरकार एक दुर्दात मृत्यु पायी है उन्हाने बटे ! वे शुद्ध मनुष्य थे। महान् मनुष्यता उनके रक्त मे थी। मुझ याद है—शत्रु उन्ह पकडकर ले गए। व अवसर पाकर बच निकले। रात्रि तिमिर। छोटी गली। पर सुबह वे फिर पकड लिय गए। शायद पकडे भी नही जात। पर पाच पाकिस्तानी सनिक सुबह सुबह जब नमाज का पवित्र वक्त हाता है, तब चार लडकिया को लेकर सडक पर आ गए। वे अहल, मौजूद और इसाक की बेटिया थी। उन्होने उन लडकिया को नगा कर दिया। सडक पर ही वे गिद्धो की तरह उन पर टूट पडे। लडकिया अल्लाह बचाओ—अल्लाह बचाओ कहकर छटपटाती रही। करण पुकार ! मुझे लगा कि अल्लाह अमित बाबू मे प्रवेश कर गया था। मृत्यु निश्चित हानी है। फिर खुदा बनकर मरना कितना गौरवशाली होता है।

'जो व्यक्ति रात भर तिलचट्टो, कीडो मकोडो और सीलन की घुटनदार बदबू भरी कोठरी म छुपा बठा हुआ अपने जीवन की रक्षा कर रहा था वह महान् योद्धा की तरह बाहर निकल आया। वह भूखा था। प्यासा था।

उसने रात भर अंधेरे का विप पिया था। घुटा था। उस न एक सनिक पर अचानक आक्रमण करके उसकी छाटी मशीनगन छीनी और एक दीवार के पीछे खडा होकर गालिया बरसाने लगा। अमित बाबू कभी मिलिट्री म डॉक्टर रह चुके थे न? उनकी गन मे दा पाकिस्तानी सैनिक मार गये। इस हडबडी म लडकिया एक छोटी-सी गली म घुस गयी। सनिक भाग नही सके। भागत तो वे भी कुत्ते की मौत मारे जाते। कितना सनसनीखेज दृश्य था! एक पाकिस्तानी सनिक और मर गया, पर इसी बीच एक हथगोला दादा पर पडा। अमित दा के अग-अग फट हुए चिथडा की तरह उड गये।' शहर न उस बच्चे को सीने से लगाकर बिलखकर कहा तरा बाबा मर गया मरा नही, वह खुदा बन गया। वह सच्चा आदमी था। न हिंदू आर न मुसलमान। सिर्फ आदमी। अपन मुल्क का सच्चा इसान। विशुद्ध प्राणी।' और वह बालक एक साथ कइ बाहा और चुम्बनो से घिर गया।

तभी एक व्यक्ति चूडियो की गठरी लेकर आ गया। रग बिरगी चूडिया। सभी आकारा की चूडिया। टूटी हुई चूडिया। उन टूटी चूडियो मे कोइ-काई साबुत चूडी विद्रूप-सी लग रही थी।

वह हसा। उन चूडिया को मुट्ठी म भरकर उछालन लगा। उसका चेहरा क्रुद्ध तटस्यता से घिर गया। उसकी नसें उभर आयी। वह हाथ को भीचकर आर्तनाद कर उठा। रुलाई को पीकर बोला—'हाय अल्लाह—हे भगवान्, ये लोग मलवा क्या हटाते हैं? ये लोग सीधे अपन घरा म क्यो जाते हैं!'

उसन एक सिसकी ली। फिर वह उन सबका एक सरकारी इमारत मे ले गया। उनके कमरा के पीछे एक नाला पडता था। यह नाला सडी हुई लाशा म बदबू दे रहा था। कटे अग उसम अब भी तर रह थे। किसी-किसी ककाल पर कीचड जम गयी थी। 'यह इमारत कभी सनिक दरिदा का अडडा थी। जाते वक्त वे कमीने बिजलिया म तार तक उखाड कर ले गये। किसी वस्तु को साबूत नही छाडा।'

शहर अपनी विषाद से विकृत आकृति का और कठोर करके बोला, 'यहा व लडकिया लायी गइ। पहले उनके साथ युद्धकीटा ने वहशीपन किया। उनके शरीरो पर दाता के दाग डाले। पता नही, उन राक्षसो को

क्या सूझा कि उन्हें अनावृत करके भागने के लिए कहा। इस सामने वाले मैदान में उन्हें दौड़ाया गया। उनके पीछे वे पिशाच दौड़े। जो रुकती, उस पर कोड़े बरसाते, राइफल का आघात करते, कुछ तो लज्जा और पीड़ा के मारे जीवित ही इस नाले में कूद गयीं, जहाँ उन्होंने गंदगी में कितनी दर्दनाक मौतें पायी होंगी। उनकी जघन्यता की चरम सीमा का वर्णन मैं नहीं कर सकता। शालीनता और अश्लीलता रो पड़ेगी! यह हर रात का किस्सा था।

'फिर एक दिन वे ऊब गये। हालांकि सदा वे आपस में लड़कियों की अदला-बदली करते थे पर उन्हें तो यहाँ की पवित्र देवियों को खंडित करना था विनष्ट करना था—सीता और सलमा की गरिमा को मिटाना था। नजमा और नीरा के शील को भंग करना था। उन्हें चींटियों की तरह मारना था। सो तीसरे दिन, उन्होंने उनकी योनियों में किरचें... अरे पागलो, तुम रात क्या हो? इससे भी बगरत भरा मंजर मैंने देखा है... आग, लूट और विध्वंस... सम्पूर्ण मनुष्य की समाप्ति, उसकी संस्कृति-सभ्यता का विनाश। यहाँ की समृद्धि को धूल धूसरित करके उन्हें गुलाम बनाने का विषाक्त इरादा लेकर आने वाले उन नर पिशाचों ने मुझे तोड़ डाला... मैं जानता हूँ कि ये शैतान इस तरह नागरिकों को नोटिस देते—तुम्हें जिन्दगी के पाँच घण्टे और दिये जाते हैं। तुम्हें सिर्फ दो घण्टे... सोचो ये कितने मर्मांतक पल होते होंगे... एक एक पल मृत्यु के संत्रास से ग्रस्त!

लगता हर आहट मौत की आहट... हर क्षण कांपता हुआ, अजगर की तरह निगलता हुआ... । हर आदमी मातम से घिरा रोता। अल्लाह और ईश्वर से प्रार्थना करता, पर मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि यह युग—यह ईश्वर अब मर गया है। हम इन्सानों को तो एक नया ईश्वर बनाना पड़ेगा, ऐसा ईश्वर जो रंग-जाति और धर्म न नहीं, अपनी अच्छाइयों, करुणा और बंधुत्व से जाना जाय। जो इस बात के लिए दृढ़ संकल्प हो कि जो धर्म और देश के नाम से हुआ है वह फिर नहीं होगा। जो उस तत्त्व और कारण को उखाड़ना से मिटा दे जिसने इतना बड़ा नर-संहार कराया है। एक नया देश जन्माये जहाँ सिर्फ इन्सान हों... इन्सान और कुछ नहीं। तो मैं कह रहा था कि ये नागरिक

पाये हुए लोग जानवरो की तरह उन पिशाचो के उन्माद के बीच जिबह किये जाते थे। मैं रोता, मेरे अग अग झुलस जाते मै अपनी सतान का सर्वनाश नही देख सकता, पर क्या करू मजबूर था! एक दिन एक कुत्ते सैनिक ने तो नीचता की हद कर दी। एक बाप से कहने लगा कि अपनी बेटी के साथ इसके बाद उस किशोर बालिका के साथ उन दरिन्दो ने सच मेरे लालो! वह मर गयी, उसने दम तोड दिया उसके बाप को पेट्रोल छिडककर जला दिया गया कितनी बडी विडबना! कितना पाशविक अत्याचार! बर्बरता! समूचा देश विनष्ट हो गया समूची धरती बलात्कार के हाहाकार से बहरी हो गयी एक सम्पूर्ण भूखड दग्ध हो उठा।

मैं फिर कहता हू मलबे को मत हटाओ। घरो मे मत घुसो खेता-खलिहानो की ओर मत जाओ पोखरो को मत देखो नदियो म मत झाको वहा नरक है, तुम्हारी अपनी लाशें हैं विकृत और बदबूदार लाशें स्वजनो के स्मृति चिह्न!

'मैं, शहर अकेला नही हू मैं और मेरा पडोसी शहर, फिर उसका पडोसी शहर समूचा युद्धग्रस्त भू खड ही मेरे जैसा है। अमानुषिक अत्याचारो से पीडित व आहत!!'

शहर चीखता रहा। उन्हें रोकता रहा पर वर्षण और मजुमदार के साथ सारी भीड ध्वस्त और खडित घरो व स्थानो की ओर लपकती रही जैसे वह क्रूर वास्तविकता को उजागर करके उसे मिटाने के लिए व्रत-सकल्प हो।

□

मेरा अपना घर

○

वह आहिस्ता-आहिस्ता गली म वढ रहा था। उसे वह गली अपरिचित-सी लगी। उसे यह भी भ्रम हुआ कि शायद वह गलती से किसी दूसरी गली मे आ गया है, पर उसने गली के नुक्कड पर लगी नेम-प्लेट को बार-बार पढा। और वह सोचने लगा कि इतने हवादार और सुदर मकान इस गली म कहा से आ गए ? छोटे छोटे सीलनभरे गदे, जीण शीर्ण पर्दों वाली खिडकिया के मकान ही थे यहा। फिर ?

उसन एक पल रुककर अर्थभरी दृष्टि से उस गली को पुन देखा जिसे वह लगभग २६-२७ साल पहले छोडकर चला गया था, देश के बटवारे के समय। इसी गली में तब धम जनम गए थे। तब वह अपनी नब्वे साल की बुढिया दादी, बीमार पत्नी तीन बच्चे और एक जवान बहन का लेकर नयी आशाओ के साथ, अपने वतन को छोडकर नये वतन की ओर चल पडा था। ढाका की ओर ! रास्ते म धमाध प्रेता न उसकी जवान बहन का उन सबकी जान के बदले मे रख लिया था। बुढिया दादी अपनी बुझी-बुची आखा से यह सब देखती रही थी। वह अशक्त सा खडा रहा था उसकी जवान बहन चीखती चिल्लाती, मुक्ति की प्रार्थना करती रही थी और उसकी पत्नी तटस्थ-सी बैठी रही थी। अजीब दौवल्य था उन सब पर।

फिर वे ढाका पहुच गए। बगाली वातावरण। उनका दिल्ली प्रदेशीय जीवन अजनबी सा हो गया। चारो ओर उपेक्षाभरी आखें अलग रहन सहन खान पान और जीने के मूल्य ! सब कुछ अलग—भाषा, सस्कृति और

वातावरण। लेकिन उसे दृढ विश्वास था कि वह उनका अपना नया वतन पाकिस्तान था, उन सबकी पवित्र भूमि—मुसलमानों का देश। अपना धर्म और अपनी जाति। लेकिन उसे कुछ ही दिनों बाद पता लग गया कि यह अलग जाति का आदमी है और यहा के लोग एक अलग जाति के। उसकी शिल्प और कला को न बगाली ज्यादा तरजीह देते थे, न कोई उसे कलाकार समझता था। आहिस्ता-आहिस्ता वह स्वय जानने लगा कि बगाली लोगों की कला के सामने उसकी कला बहुत बौनी है। तब वह अज्ञात आशका से घिर गया। अन्दर से भयभीत हो गया। अधिकाश सावले लोगों के बीच उसे अपना गोरापन अखरने लगा। उसे अपना उर्दू बोलना कुछ अटपटा सा लगने लगा। 'अवश्य मैं अजनबियों के देश मे आ गया हू'—यह भावना उसे एक दहशत से घेरती गयी। वह महसूस करने लगा कि धर्म, जाति, रग से आदमी एक नहीं हो सकता।

उस दिन उसकी पत्नी बहुत ही बीमार थी। वह गत कई महीनों से ढाका में काम-काज की तलाश में घूम रहा था, पर अभी तक उसे कोई मामूली काम भी नहीं मिला था। उसे लगा कि इस देश मे बगाली भाषा चलती है। बगला जाने बिना न उसे काम मिल सकता है और न आत्मीय स्नेह प्यार। इसलिए वह बेहद आर्थिक तगी मे रहता था। पत्नी का सही ढग से उपचार नहीं करा पा रहा था। उसे तपेदिक हो गया था और उसकी दमघाटू खासी उस अधेरी कोठरी में जब-तब एक आतक पैदा कर देती थी। तनावों से घिरा उसकी पत्नी का चेहरा बच्चों का डरा देता था और वह अनागत मृत्यु के सत्रास से काप जाता था। उसे एक प्रलय नराश्य घेर लेता था। और तो और, इस नये वतन में उसके अपने लोग भी उससे अपरिचित-सा व्यवहार करने लगे थे। जब वह बहुत अभावग्रस्त हो गया तब एक दिन वह अपने किसी दूर के रिश्तेदार के पास गया था। उससे कुछ रुपयों की मदद चाही थी किन्तु उसके रिश्तेदार ने पल्ला झटक दिया था। मजबूरी प्रकट की थी कि वह खुद दिन-ब-दिन तगी का शिकार हो रहा था। इस पार्टीशन की गड़बड़ी ने धधे को काफी मदा कर दिया था। हालाकि वह जानता था कि पार्टीशन के बाद उसके रिश्तेदार हाजिक मियां ने एक नया मकान खरीदा था—ढाका में।

उस दिन वह काफी निराश-हताश हो गया था। टूटा-टूटा-सा अपनी सीलन-भरी कोठरी म आकर चुपचाप बैठ गया। उसकी पत्नी मरणासन्न-सी पडी थी। उसके बच्चे कही बाहर भटक रहे थे। उसने गहरे अपनपन से अपनी पत्नी को देखा। पीला-पीला चेहरा, आखो के चारो ओर काले दायरे, पिचके पिचके गाल उसका हृदय भर आया। एक गुबार-सा उसके भीतर उठ रहा था। उसने नजदीक जाकर पुकारा, 'सुनती हो ?' फिर उसने कई बार पुकारा पर उसकी पत्नी ने कोई उत्तर नही दिया। वह घबरा गया। आशकाओ से घिर गया। मत्यु की दुष्कल्पना मात्र से उसका अस्तित्व हिल गया। वह भागता हुआ डाक्टर अजीज हक के पास गया। डाक्टर बहुत ही व्यस्त था। उसने जाकर आकुल स्वर म कहा, 'डाक्टर साहब ! मेहरबानी करके जल्दी चलिए मेरी बीवी की हालत बडी खराब है।

डाक्टर ने प्रश्नभरी निगाह से उसे देखा। उसने अपनी बात दो तीन बार दोहराई, पर डॉक्टर की दष्टि म एक अबोधता तर गई। अपनी चौडी मोरी की पट और ढीले कोट के कारण डॉक्टर थोडा सा जोकरनुमा लग रहा था। कद भी काफी ठिगना था। उस पर चमकदार गजा सिर। वह फिर बडबडाया कि 'बहुत बीमार है।' तब डाक्टर न उपेक्षा से कहा, 'की होलो—क्या हुआ ?

वह थोडा आश्वस्त हुआ—डाक्टर ने उसकी बात को तो समझा। उसन फिर अपना वाक्य दोहराया। इस पर डाक्टर ने चलन म मजबूरी जाहिर कर दी। उसी समय एक और व्यक्ति आया। वह बगला म क्या-क्या बडबडाता रहा, वह नही समझ सका। लेकिन जब देखा कि डाक्टर उसके साथ बाहर जान लगा है तब उसन डॉक्टर के पाव पकडकर कहा, खुदा के वास्ते चलिए डॉक्टर साहब ! मरी बीवी सख्त बीमार है।

डाक्टर ने अजीब-सी हिन्दी म कहा, 'क्यू हल्ला मचाता है जाकर वह को एखान (इधर) लाओ न '

इतना कहकर डाक्टर चला गया। वह अपन अधेरे घर म लौट आया। उसे लगा कि वह पाकिस्तान म नही, किसी अजनबिस्तान म चला आया है। दूर अपना म दूर। वह बडा ही असहाय हो गया। लाचार होकर वह

अपनी बीवी का अस्पताल ले गया। वह घण्टा तक खडा रहा। किसी न उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। आखिर जस-तसे वह अपनी बीवी की भर्ती कराने म सफल हुआ। इसके बाद एक डाक्टर ने आकर उसका मुआयना किया। सोचकर, उसके हाथ म एक पर्चा लिखकर थमा दिया। 'जा, ये कैप्सूल्स और इजेक्शन ले आ, तडातडी करना। हरी अप !'

वह पर्चे को देखता रहा। उसन भरे हुए स्वर म विनती की, डाक्टर साहब मैं बहुत गरीब हू, बेकार हू। पार्टीशन म मरा सब कुछ लुट गया। मेहरबानी करके मुझे सरकारी अस्पताल स ही दवाइया दिलवा दीजिए। प्लीज !'

'अरे, यहा कोरा जल मिलता है दवा के नाम पर।' डॉक्टर ने उसकी बात का अनसुना करके लापरवाही से कहा, आजकल सब कुछ गडबड है। जा जल्दी से दवाइया ले आ। अरे बोका (मूख), मुह क्या देखता है। योर वाइफ इज वरी सीरियस — हरी अप !'

उसके पास एक रुपया भी नही था। फिर भी वह वहा से खिसक गया। वह असहाय-सा अस्पताल के बाहर आकर खडा हो गया। उसके बडे बडे स्तभा का देखता रहा। सोचता रहा यदि एक खभा उस पर गिर जाए तो वह उन सारे झझटा से मुक्त हो जाए। यही गरीबी, पीडाए और अभाव तो उसे अपनी जन्मभूमि दिल्ली मे थे। फिर वह क्या यहा आया ? वह क्यो नेताआ के भाषणा स भ्रमित हो गया कि पाकिस्तान म सब कुछ मिलेगा। वहा मुसलमाना की सुरक्षा रहगी। उसे जिन्दगी की सारी सहूलियतें मिलेंगी। वह सोचता रहा। फिर स्तम्भों पर अकित पतली पतली फूला की पत्तिया का गिनता रहा। इतनी देर गिनती करता रहा कि एक लम्बा समय बीत गया।

धूमिल सध्या जब धरती की ओर आने लगी तब उसका ध्यान टूटा। उसन दीघ नि श्वास छोडकर अपने आप से कहा 'इतना लम्बा वक्त कैसे गुजर गया ? फिर उसके मानसलोक म 'मेरी बीवी – मेरे बच्चे' जसे शब्द ध्वनित प्रतिध्वनित हो उठे।

वह मर्मान्तक वेदना से घिरता गया। उसकी आखा म गीलापन तैर आया। वह व्यथित-सा अपन घर लौट आया। उसके बच्चे थके-ऊब से बठे थे—दरवाजे के बीच। उसे दखकर जडता स मुक्त हुए। एक न कहा,

'हम सब भूखे है। अम्मा, हम रोटी दो।'

उसे थोड़ी परेशानी हुई कि उसके बच्चों ने अपनी मा के बारे में क्या नही पूछा ?

उसने ही बच्चों को याद दिलाया, 'तुम्हारी अम्मा बीमार है।'

तब सब बच्चों को मा की याद आ गई। छोटा बच्चा 'अम्मा-अम्मा' कहकर रोने लगा। उसने तय कर लिया था कि वह वापस अस्पताल नही जाएगा। उसका जमीर उस पर लानतें बरसाता रहा। वह बहुत कमजोर हो गया। उसने सोच लिया कि उसकी अनुपस्थिति में अस्पताल वाले उसकी बीवी को लावारिस समझकर अपने आप उसका इलाज कर देंगे। उसे दवा दे देंगे।

वह नपुसकता से घिरा घिरा रहा। एक विचित्र स्थिति उसके मन की हो गई। कदाचित असहायता की चरम सीमा ने उसकी तमाम मानवीय सम्वेदनाओ को विकलांग बना दिया था। वह त्रासद स्थितियो से घिरता गया। लगभग पाच दिनो के बाद वह अस्पताल में अजनबी सा गया। उसकी बीवी वाला पलग खाली था। उसने एक मरीज से पूछा पास वाली औरत कहा गई ?'

पड़ोसी मरीज ने उसे तीखी निगाह से देखा। व्यथा-बोझिल स्वर में बोला दु ख, महादु ख। उसका स्वामी यहा से जाने के बाद नही लौटा। बेचारी वह मा मर गई। छि छि।'

उस मरीज का चेहरा घृणा से भर गया। तभी उसे वही डाक्टर दिखलाई पड़ा। वह काप उठा। चोर की तरह मुह छिपाकर अस्पताल के बाहर आ गया। इसके बाद वह भटकता रहा। उसने अपनी कला और शिक्षा को ताक पर रखकर एक साधारण सी नौकरी कर ली। उसका एक बच्चा बीमार होकर मर गया। वह दिन प्रतिदिन यह महसूस करने लगा कि वह मुसलमानो के बीच न होकर बगालियो के बीच है। उन लोगो के बीच है जो उसे अपना नही समझते। कभी भाषा का झगड़ा, कभी गीत सगीत की लड़ाई कभी शब्दो का सघर्ष कभी बगाली उर्दू तनाव, शोषण-रक्तपात, राजनीतिक हत्याए—एक विचित्र सी असह्य स्थिति। उसे लगा कि उसके देश के टुकड़े नही हुए है बल्कि उसके शरीर के टुकड़े हो गए है

क्योंकि गलत स्थितियां खत्म न होकर और अधिक सशक्त हो गई हैं। और वह असुरक्षा के घेरा में बन्द होता रहा।

आखिर वह किसी-न किसी तरह पश्चिमी पाकिस्तान चला गया। उसने सोचा था कि वहां इन बंगालियों के बजाय उन लोगों में अधिक सुरक्षित रहेगा। वहां उसके अपने लोग तो ज्यादा हैं ही! कराची में वह उतरा। कुछ दिन उसने मुसाफिरखाना में काटे। वह अनेक दफ्तरों के दरवाजा खटखटाता रहा पर उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। उसने हिंदुओं के अत्याचारों की कहानियां को बढ़ा चढ़ाकर कहा पर उसके प्रति कोई भी द्रवीभूत नहीं हुआ। उसने महसूस किया कि बिना पैसे कहीं भी आदमी—सिर्फ आदमी नहीं कहलाता। उसके दुःख दर्द को भी कोई नहीं सुनता। वह पीड़ा बनता रहा। उसे लगा कि जैसे वह कोई आदमी नहीं, सामान है।

अचानक उसकी भेंट सुल्तान अहमद से हो गई। उसने पहले तो उसे पहचाना नहीं। जब उसने अपना नाम पता बताया तो उसने थोड़ा-सा विस्मित होकर पूछा 'अरे तुम कब आए? क्या हाल है?' उसने अपनी सारी व्यथा-कथा सुना दी। अपनी बहन के किस्से को काफी उत्तेजित शब्द में रुंधे स्वर में बयान किया। उसने सोचा कि शायद उसका दोस्त गुस्से में आएगा और उसके प्रति अगाध स्नेह का प्रदर्शन करेगा। उसकी बेबसी पर पिघलेगा और उसको सहारा देगा। उसका दोस्त अब बड़ा इजारेदार हो गया था और कई संस्थाओं का मेंबर। उपदेशात्मक शैली में बोला, 'यह किस्सा सिर्फ तुम्हारा नहीं, सारे रिफ्यूजीज का है। कुर्बानी के बिना हमें पाकिस्तान थोड़े ही मिलता।' उसने उसकी गरीबी पर तरस खाकर कुछ रुपये दे दिए। दुबारा मिलने को कहा। फिर उसे एक छोटी-सी, क्लर्क की नौकरी दे दी। अपनी साधारण तनख्वाह में उसे फिर गन्दी कोठरी नसीब हुई। समय-असमय पर वह अपने दोस्त से कहता था कि वह एक अच्छा चित्रकार है उसमें कोई कलात्मक काम लिया जाए। आखिर एक दिन उसके दोस्त ने झल्लाकर कहा कि उसे चित्रकार की नहीं, एक अच्छे क्लर्क की जरूरत है। यदि उसे आर्टिस्ट ही बनना है तो वह उसकी नौकरी छोड़ सकता है। वह बार-बार उसे बोर न करे।

वह बुत बन गया। कुम्हला-सा गया। वह अपने चित्रों को लेकर न

जाने यहां कहां भटका, पर किसी ने उसकी कद्र नहीं की। उसके चित्र धार्मिक संकीर्णता के विरुद्ध मानवता के प्रतीक जो थे। उसे लगा कि चित्रकार होने के साथ-साथ उसकी पीठ पर किसी बड़े आदमी का हाथ होना भी जरूरी है। उसने जिन्दगी से समझौता कर लिया। समझ लिया कि उसकी जिन्दगी की साधना कलर्की करते जीने में ही है।

साली पर-साल गुजरते गए। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बीच एक युद्ध हो गया। उसने देखा कि युद्ध के दिनों में लोग और धनवान बन गए हैं। देश और देश के लोगों की चिन्ता किसी को नहीं है। चिन्ता है तो अपने व्यापार की अपनी कोठियों की अपने ठेकों की। उसे मालूम हुआ कि नया देश धर्म की रक्षा के लिए नहीं बनता, नया देश बनता है खुदगर्जी को पूरा करने के लिए। उसे पक्का प्रमाण मिल गया कि उसका दोस्त मालिक एक नम्बर का भ्रष्टाचारी है। वह देश और धर्म को बेचता है। मजहब के नाम पर ठगता है। एक साधारण साइकिल मिस्त्री यहां आकर तीन-तीन कारखानों का मालिक कैसे हो गया? वह देखता कि वह पांच-पांच बार नमाज पढ़ता है मस्जिदों को चन्दा देता है, हिन्दुस्तान को गाली देता है, भाषण में मजहब और मुल्क पर कुर्बान होने की घोषणा करता है और आम आदमी की जिन्दगी को ऊंचा उठाने और बेकारी को दूर करने के लिए व्यापारियों का आह्वान करता है। वह सब कुछ देखता है। उसे क्रोध भी आता है कि वह उस आदमी को नंगा कर दे पर वह वह उसे लगता है कि वह खुद कुछ नहीं है। अस्तित्वहीन प्राणी सा है वह।

वह यह मान गया था कि उसका अपना पाकिस्तान सिर्फ यह सीलन-भरी अंधेरी कोठरी ही है। उसने कई बार चेष्टा की कि उसे अच्छा मकान मिल जाए, पर पंजाबियों ने उसे पंजाबी न होने पर मकान नहीं दिया, सिन्धियों ने घृणा से मुंह फेर लिया पठान और बलोची उसे असली मुसलमान भी नहीं समझते थे। इस तरह उसे लगता था कि उसका अपना घर कहीं भी नहीं है। तब उसे अपनी दिल्ली की वह गली याद हो आती थी, जिसके कण-कण में अपनापन भरा था। उन लोगों की बांहों के घेराव उसे तरसाने लगते, जिनमें अटूट स्नेह भरा रहता था। सब कुछ अपना था। दूर-दूर तक अपना-ही-अपना देश नगर मोहल्ला गली तब वह

ममा तक वेदना से कराह उठता था। उसका मन भर आता था।

उसके दोस्त मालिक ने नया आदेश दिया था कि पूर्वी पाकिस्तान में उसने नया आफिस खोला है, इसलिए उसे कुछ महीनों के लिए ढाका जाना ही है। उसने स्वीकृति नहीं दी। इस पर उसके दोस्त ने समझाया कि नयी जगह पर अपना आदमी होना निहायत जरूरी है और वह तो उसका बचपन का दोस्त है। आखिर वह जाने को तैयार हो गया किन्तु इस शर्त पर कि उसके दोनों बच्चों की पढ़ाई बरकरार रहे। दोस्त मालिक ने उसकी हामी भर ली।

लेकिन उसके जाने के पहले ही एक भीषण दुर्घटना हो गई। शिया-सुन्नी लोगों में मुहर्रम के दिन भीषण झगड़ा हो गया। झगड़े ने रक्तपात का रूप धारण कर लिया और कई लोगों के साथ उसके दोनों बच्चे भी शहीद हो गए। उनकी बड़ी अमानुषिक रूप से हत्या की गई थी। उनकी लाशें इतनी खौफनाक थीं कि देखी नहीं जा रही थीं। उसमें वही भयंकर गुमापन और गूगापन आ गया था जो उसकी पत्नी की बीमारी पर आया था। उसका दोस्त समझाता रहा, 'मजहब कुर्बानी मांगता है। तुम्हारे दोनों बेटे गाजी बन गए।'

उसने हिंस्र दृष्टि से अपने दोस्त मालिक को देखा। पूछा, 'फिर यह पाकिस्तान क्यों बना?'

'मुसलमानों के लिए।'

'तो क्या हम सब मुसलमान नहीं हैं? इन सब लोगों को तुम सिर्फ इन्सान क्यों नहीं बना देते? मेरे बेटों को किसने मारा है? मुसलमान ने? नहीं? मेरी बीवी को बिना दवा दारू किसने मारा? मैं बताऊं? मुसलमानों ने। दोस्त! मैं जान गया हूं कि मजहब आपस में नहीं लड़ता। लड़ती है सियासत... खुदगर्जी! और इस पृथ्वी पर छोटे-बड़े रूप में यही लड़ रहे हैं।'

उसने उसे शांत किया, 'पागल न बनो। ऐसे हादसे होते ही रहते हैं। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? बीवी-बच्चे फिर आ जाएंगे।'

उसकी इच्छा घृणा से उस पर थूकने की हुई, पर वह शांत रहा। अपने बच्चों की कच्ची कब्र पर उसने लिख दिया, 'मजहब के नाम पर।'

जीवन-यात्रा मे अब वह अकेला था। दोस्त-मालिक ने उसे काफी समझा बुझाकर वापस ढाका भेज दिया। वह दिन रात चित्र बनाता रहता था। उन्हे रखता जाता था। एक पर एक।

फिर बागला देश का आह्वान। मुक्ति । पाकिस्तानी सेनाओ द्वारा निमम हत्याए बलात्कार नर-सहार विनाश उसे लगा कि यहा *यदि केवल आदमी रहते तो परस्पर नही लडते, पर य तो ? वह सुबक* पडा, 'आदमी कितना बट गया है।

वह चित्र बनाता रहता था उन दिनो। आखिर एक दिन बगालियो ने उसे भी घेर लिया *'इसको मार दो यह साला बगाली नही है—गुर्गा* है, जासूस है '

वह चिल्लाया, 'न अब मैं हिंदू हू और न मुसलमान। न बगाली हू और न बिहारी न पजाबी हू और न सिंधी अब मैं केवल चित्रकार हू। देखो मेरे चित्रो के सब्जेक्टस को देखो। उसमे शोषित-पीडित आदमी है एक मजहब है भाषा है आदमी है—सिर्फ आदमी ।' लेकिन किसी ने उसकी आवाज को नही सुना। लोग उसे मारने लगे। एक छुरा उसके बाए हाथ म लगा। अधिकाश चित्र बिना देखे ही जला दिए। तभी पुलिस आ गई। वह बच गया। अपने जख्म को दबाता हुआ भागा। उसके पास अब सिर्फ एक चित्र था।

वह शरणार्थी होकर वापस हिंदुस्तान आ गया। उसने सोच लिया था कि वह अब अपने घर जाएगा अपने मादरे वतन के उसी शहर की, उसी गली मे जहा उसके अपने लोग हैं। शायद पहले की तरह इन वर्षों म वापस उसकी गली से धम सप्रदाय, जातिया लुप्त हो गई हो और वहा *पहले वाला* इसानी भाई चारा आ गया हो। उसमे अपनी दिल्ली की गली के प्रति तीव्र सम्मोह जाग गया। वह दिल्ली आ गया। पर यह दिल्ली कितनी बदल गयी है ! *पहचानी भी नही जाती।* तब तो उसके सारे साथी-सगधी बदल गए होंगे। अल्ताफ मिया एकदम बूढे हो गए होंगे। और किसन काका की लकडी टूट गयी होगी। क्या मजा आता था जब वे 'हरे राम राम स चिढ चिढकर लकडी फेंकते थे। सहसा वह उदास हो गया। उसकी गली म ही 'लक्षा बुआ' और जमीला मौसी रहती थी। दोनो म बडा प्यार था।

न वह अपने को हिंदू समझती थी और न वह अपन को मुसलमान। लेकिन इस पाकिस्तान के मामले ने दानो की जानें ले ली। वह रो पडा। अपने आसुओ को जख्म वाली बाह से पोछा। जख्म हरा था, उससे मवाद वह रहा था। तीव्र पीडा हो रही थी। वह सोच रहा था उसके सामने विश्व के कई रग उभर आए। काले गोरो का सघर्ष, मूलनिवासियो और नये निवासियो का सघर्ष जाति, धर्म और रग भेद का सघर्ष आदमी कितना छोटा हो गया था।

वह धीरे धीरे चल रहा था। उसे कोई भी परिचित चेहरा नही मिला। पर तभी उसने किसन काका को पहचान लिया। वे अपनी दूकान के आगे बैठे-बैठे हुक्का पी रहे थे। एकदम बूढे और कमजोर हो गए थे। उसने कहा 'काका, राम राम!' काका की टूटी हुई लाठी उनके पास पडी थी।

'कौन हो, भाई? अब मुझे जरा भी दिखाई नही देता। अच्छा हुआ कि मैं अधा हो गया, वर्ना इतना कमीनापन मैं नही देख सकता। इसानियत तो मर ही गयी है। सब कुछ खतम हो गया। कृष्ण कृष्ण!' वह खिसक गया। इसके बाद वह अपनी गली म घुसा। उसे आघात लगा कि उसकी गली कही गायब हो गयी है। पहले गली म घुसते ही सैयद का तागा बीचो-बीच खडा मिलता था—टाट पट्टी के पर्दे गदगी शोरगुल बच्चो की गालिया कहा हैं वे सब? सब बदल गया। अच्छे मकान हवादार साफ सुथरी गली सरदार और पजाबी। उसने एक आदमी से पूछा—'भाई, यह गली ?'

उस आदमी ने उसे हिकारत से देखा। कहा, 'हमे नही मालूम। क्या हम गाइड हैं?'

उसे याद आया कि पहले जब कोई किसी के बारे मे पूछता, तब लोग कितने प्यार मे, साथ चलकर अता-पता बताते थे। उसने गली म कई चक्कर लगाए पर उसे अपना घर नही मिला। एकाएक वह प्रसन्नता से भर गया। उसके घर के आगे जो पीपल का पेड था उसका कटा हुआ तना दिखाई दे गया। उसे याद आया यही उसका घर था। पर अब वहा पर एक शानदार मकान बन गया था। उसमे एक सरदारजी रहते थे। और भी कई जातिया

तया धर्मों के लोग। वह उदास हो गया। उसकी आखें भर आयी। उसन सोचा कि अब वह कहा जाएगा? इस निखिल विश्व के प्रागण मे उसका अपना घर, उसके अपने लाग कहा मिलेंगे? उसका हृदय विदीण हो गया। वह चुपचाप बठ गया। सोचता रहा कि जो आदमी थे वे तो मर गए हैं और इस गली मे भी जातिया, धम और सप्रदाय घुस गए है। अजनबीपन आ गया है। फिर वह कहा जाए? एक जलता प्रश्न उसे घेरता गया।

तभी सरदारजी बाहर आए। उसे डाटते हुए बोले, 'क्यू वे, इत्थ क्यू बैंटठा है? चल, हट!'

उसने सरदार की आर देखा। उसकी आखा म घणा ही घणा थी। उसकी इच्छा हुई कि वह कह दे 'मै ही इस घर का असली मालिक हू। यह मेरा अपना घर है।' पर वह काप गया—कही उस पाकिस्तानी जासूस समझकर गिरफ्तार न कर लिया जाय। वह उठ गया। चल पडा आहिस्ता-आहिस्ता। उस लगा कि समूची दुनिया दिन-ब दिन तगदिल होती जा रही है और आदमी भी बहुत ही छोटे छोटे टुकडा म बटता जा रहा है। फिर वह? उसके जख्म म दुवह यत्रणा उठी। वह रो पडा।

तीसरे दिन लोगा ने दखा कि एक आदमी पीपल के कटे तने के सहार मरा पडा है। उसके पास एक चित्र पडा है—गली पीपल, उसके आग एक छोटा-सा घर, टूटा फूटा, टाट-पट्टियो के पर्दे गली म खेलते गद बच्चे आमने-सामन लका जमीला तागा और उस चित्र के नीचे लिखा था—'मेरा अपना घर।'

□



कहानीकार की पहिचान

" विगत लगभग तीन दशकों की हिंदी कहानी ने इतने लिबास पहने और उतारे कि उसकी अपनी पहिचान ही खो गई।

" इतने परिवर्तनों में भी यदि कोई कहानीकार अपनी पहिचान बनाये रखता है तो वह निश्चय ही उसकी यथार्थग्राहिणी दृष्टि की सफलता है जो उसे न पुराने नाम पर वास्तविकता से मुंह मोड़ लेने के लिये प्रोत्साहित करती है और न ही नवीन की मृगमरीचिका के पीछे भटकाती है। श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ऐसा ही कुछ कर पाये हैं। यह उनके आज तक के कहानी-लेखन पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है।

" सत्य तो यह है कि श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की कहानियों पर किसी चलते हुए फैशन का लेबल नहीं लगाया जा सकता कोई बंधी हुई दृष्टि उनकी कहानियों में नहीं खोजी जा सकती और कोई नारा उनकी कहानियों के साथ नहीं जोड़ा जा सकता।

" इस उपलब्धि का एक ही कारण है—उनकी वह मानवतावादी दृष्टि जो एक ओर वस्तु को समय के संदर्भ से संयुक्त किये रही और दूसरी ओर उन्हें हर मोड़ पर आदमी से जोड़े रही। यही कारण है कि विषय चाहे कितने ही हों उनकी मूल प्रकृति में समानता है जो विशिष्ट रचना धर्मिता की पहिचान है ।"